बीएड प्रथम वर्ष

शिक्षा में नाट्य एवं कला

(DRAMA AND ART IN EDUCATION)

GEDE-23

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय – भोपाल

MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY - BHOPAL

Reviewer Committee

1. Dr. Nitin Kumar Jain
   Assistant Professor
   Rashtriya Sanskrit Sansthan, Bhopal (M.P.)
2. Dr. Vandana Chaturvedi
   Assistant Professor
   RKDF University, Bhopal (M.P.)
3. Dr. Meena Barse
   Associate Professor
   Sant Hirdaram Girls College, Bhopal (M.P.)

Advisory Committee

1. Dr. Jayant Sonwalkar
   Hon'ble Vice Chancellor
   Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal (M.P.)
2. Dr. L.S. Solanki
   Registrar
   Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal (M.P.)
3. Dr. Jyoti S. Parashar
   Assistant Professor
   Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal (M.P.)
4. Dr. Nitin Kumar Jain
   Assistant Professor
   Rashtriya Sanskrit Sansthan, Bhopal (M.P.)
5. Dr. Vandana Chaturvedi
   Assistant Professor
   RKDF University, Bhopal (M.P.)
6. Dr. Meena Barse
   Associate Professor
   Sant Hirdaram Girls College, Bhopal (M.P.)

COURSE WRITERS

Dr Kanchan Jigyasi, Former Head of Department, Department of Multimedia Education and Development of Special Education, MP Bhoj Open University, Bhopal

Units: (1-2)

Copyright © Reserved, Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

All rights reserved. No part of this publication which is material protected by this copyright notice may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the Registrar, Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal.

Information contained in this book has been published by VIKAS® Publishing House Pvt. Ltd. and has been obtained by its Authors from sources believed to be reliable and are correct to the best of their knowledge. However, the Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal, Publisher and its Authors shall in no event be liable for any errors, omissions or damages arising out of use of this information and specifically disclaim any implied warranties or merchantability or fitness for any particular use.

Published by Registrar, MP Bhoj (Open) University, Bhopal in 2020

Vikas® is the registered trademark of Vikas® Publishing House Pvt. Ltd.

VIKAS® PUBLISHING HOUSE PVT. LTD.
E-28, Sector-8, Noida - 201301 (UP)
Phone: 0120-4078900 • Fax: 0120-4078999
Regd. Office: A-27, 2nd Floor, Mohan Co-operative Industrial Estate, New Delhi 1100 44
• Website: www.vikaspublishing.com • Email: helpline@vikaspublishing.com

SYLLABI-BOOK MAPPING TABLE

शिक्षा में नाट्य एवं कला

Syllabi	Mapping in Book
इकाई–1 कला शिक्षा की पृष्ठभूमि – माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952–53 – भारतीय शिक्षा आयोग 1964–66 – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 – यशपाल समिति 1992 – राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF 2005) – यूनेस्को दस्तावेज; कला शिक्षा के उद्देश्य – पूर्व प्राथमिक स्तर – प्राथमिक स्तर – उच्च प्राथमिक स्तर – माध्यमिक स्तर – उच्चतर माध्यमिक स्तर – सृजनात्मकता, संवेदनशीलता, सामूहिक चेतना एवं मानवता से कला शिक्षा का संबंध; कला शिक्षा तथा विद्यालयीन पाठ्यक्रम में इसका समावेश – पाठ्यसहगामी अथवा पाठ्येतर गतिविधियां – विधियां एवं रणनीतियां; विद्यालयीन शिक्षा में दृश्यात्मक एवं प्रदर्शनकारी कलाओं (संगीत, ड्रामा आदि) का पाठ्यक्रम; उद्देश्य; विषय–वस्तु; विधियां; समालोचनात्मक अध्ययन के रूप में नाटक।	**इकाई 1** : नाट्य एवं कला शिक्षा **(पृष्ठ 3–38)**
इकाई–2 प्रायोगिक कार्य–I – आरेखण – चित्रकारी (Painting) – छापाकला (Printing); प्रायोगिक कार्य – II – मिट्टी के पात्र (Ceramics) – स्कल्पचर/आर्किटेक्चर (Sculpture / Architecture) – रेशे (Fibers) – अन्य गतिविधियां; सत्रीय कार्य – I – पेंटिंग – ड्राइंग – स्कल्पचर; सत्रीय कार्य – क्राफ्ट – नाटक।	**इकाई 2** : कला शिक्षा में प्रायोगिक कार्य **(पृष्ठ 39–73)**

विषय–सूची

परिचय **1–2**

इकाई 1 नाट्य एवं कला शिक्षा **3–37**

1.0 परिचय
1.1 उद्देश्य
1.2 कला शिक्षा की पृष्ठभूमि
1.2.1 माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952–53
1.2.2 भारतीय शिक्षा आयोग 1964–66
1.2.3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986
1.2.4 यशपाल समिति 1992
1.2.5 राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF 2005)
1.2.6 यूनेस्को दस्तावेज
1.3 कला शिक्षा के उद्देश्य
1.3.1 पूर्व प्राथमिक स्तर
1.3.2 प्राथमिक स्तर
1.3.3 उच्च प्राथमिक स्तर
1.3.4 माध्यमिक स्तर
1.3.5 उच्चतर माध्यमिक स्तर
1.3.6 सृजनात्मकता, संवेदनशीलता, सामूहिक चेतना एवं मानवता से कला शिक्षा का संबंध
1.4 कला शिक्षा तथा विद्यालयीन पाठ्यक्रम में इसका समावेश
1.4.1 पाठ्यसहगामी अथवा पाठ्येतर गतिविधियां
1.4.2 विधियां एवं रणनीतियां
1.5 विद्यालयीन शिक्षा में दृश्यात्मक एवं प्रदर्शनकारी कलाओं (संगीत, ड्रामा आदि) का पाठ्यक्रम
1.5.1 उद्देश्य
1.5.2 विषय–वस्तु
1.5.3 विधियां
1.5.4 समालोचनात्मक अध्ययन के रूप में नाटक
1.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
1.7 सारांश
1.8 मुख्य शब्दावली
1.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
1.10 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 2 कला शिक्षा में प्रायोगिक कार्य **39–73**

2.0 परिचय
2.1 उद्देश्य
2.2 प्रायोगिक कार्य–I
2.2.1 आरेखण
2.2.2 चित्रकारी (Painting)
2.2.3 छापाकला (Printing)

2.3 प्रायोगिक कार्य – II
2.3.1 मिट्टी के पात्र (Ceramics)
2.3.2 स्कल्पचर / आर्किटेक्चर (Sculpture / Architecture)
2.3.3 रेशे (Fibers)
2.3.4 अन्य गतिविधियां
2.4 सत्रीय कार्य – I
2.4.1 पेंटिंग
2.4.2 ड्राइंग
2.4.3 स्कल्पचर
2.5 सत्रीय कार्य
2.5.1 क्राफ्ट
2.5.2 नाटक
2.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
2.7 सारांश
2.8 मुख्य शब्दावली
2.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
2.10 सहायक पाठ्य सामग्री

परिचय

टिप्पणी

प्रस्तुत पुस्तक 'शिक्षा में नाट्य एवं कला' विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित बी.एड. के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गई है। नाटक साहित्य की ऐसी विधा है, जिसमें अभिनीत विषयवस्तु सीधे व्यक्ति के मन–मस्तिष्क में उतर जाती है। व्यक्ति नाटक के पात्रों से तादात्म्य स्थापित कर लेता है, पात्रों में स्व का अनुभव करता है एवं कथानक में दिये गये संदेश को सदा के लिये स्वयं में समाहित कर लेता है।

शिक्षा की दृष्टि से देखा जाये तो नाटक किसी भी ज्ञान, संवेदना, संदेश आदि को बड़े ही रोचक ढंग से अधिगमकर्त्ता तक पहुंचाने में सक्षम है। यह बालकों में अच्छे संस्कार विकसित करने के लिये, उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिये एक शक्तिशाली साधन सिद्ध होता रहा है।

नाटक की तरह ही संगीत, नृत्य एवं अन्य ललित कलाओं का भी शिक्षा में अपना स्थान है। सभी कलाएं व्यक्ति को अपने–अपने ढंग से शिक्षित करती हैं, जिसमें अधिकगमकर्ता तनावमुक्त होकर, आनन्दपूर्वक, बिना किसी दबाव के सहज एवं सरल ढंग से शिक्षा प्राप्त करता है एवं प्रसन्नतापूर्वक अपने व्यक्तित्व को अनायास ही पूर्णत्व की ओर मुखरित करता रहता है। कला शिक्षा अपने आप में एक विषय है। किसी भी कला को सीखने की एक अलग विधि होती है, एक अलग शब्दावली होती है। कला समेकित शिक्षा, कला शिक्षा से भिन्न है। कला समेकित शिक्षा में शिक्षा के विभिन्न बिन्दुओं को, अवधारणाओं को कला के माध्यम से जोड़कर प्रस्तुत किया जाता है। कला के माध्यम से शिक्षा की अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त रूप में अनुभव किया जा सकता है एवं जटिल अवधारणाओं को सहज रूप में बालकों तक पहुंचाया जा सकता है। यह कला का शिक्षापरक रूप है।

प्रस्तुत पुस्तक में नाट्य एवं कला के विभिन्न स्वरूपों को उनसे सरोकार रखने वाले तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए पुस्तक को दो इकाइयों में समायोजित किया गया है। प्रत्येक इकाई के आरंभ में परिचय के पश्चात विषय–विश्लेषण से पूर्व उसके निहित उद्देश्यों को स्पष्ट कर दिया गया है। इकाई के बीच–बीच में 'अपनी प्रगति जांचिए' स्तंभ के जरिए विद्यार्थियों को स्व–मूल्यांकन का अवसर भी दिया गया है। इसके अतिरिक्त 'मुख्य शब्दावली' के अंतर्गत कठिन शब्दों के अर्थ भी दिए गए हैं। पुस्तक की दोनों इकाइयों का वर्णन इस प्रकार है–

पहली इकाई में कला और नाट्य शिक्षा के अंतर्गत कला शिक्षा की पृष्ठभूमि का विवेचन किया गया है तथा कला शिक्षा के उद्देश्यों का विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त विद्यालयीन पाठ्यक्रम में कला शिक्षा के समावेश के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया गया है और शिक्षा में दृश्यात्मक एवं प्रदर्शनकारी कलाओं के पाठ्यक्रम की समीक्षा की गई है।

टिप्पणी

दूसरी इकाई में कला शिक्षा में प्रायोगिक कार्यों की व्याख्या की गई है। इसके अंतर्गत आरेखण, चित्रकारी, छापाकला, सेरामिक्स, आर्किटेक्चर, फाइबर्स, पेंटिंग, ड्राइंग, मूर्तिकला, क्राफ्ट तथा ड्रामा जैसी कलाओं और उनकी शिक्षा का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में शिक्षा में नाटक तथा कला के वैभव को रोचक ढंग से दर्शाया गया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक पाठकों की जिज्ञासा को शांत कर कला एवं नाट्य शिक्षा की प्रकृति को समझने में सहायक सिद्ध होगी।

इकाई 1 नाट्य एवं कला शिक्षा

टिप्पणी

संरचना

1.0 परिचय

1.1 उद्देश्य

1.2 कला शिक्षा की पृष्ठभूमि

- 1.2.1 माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952–53
- 1.2.2 भारतीय शिक्षा आयोग 1964–66
- 1.2.3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986
- 1.2.4 यशपाल समिति 1992
- 1.2.5 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF 2005)
- 1.2.6 यूनेस्को दस्तावेज

1.3 कला शिक्षा के उद्देश्य

- 1.3.1 पूर्व प्राथमिक स्तर
- 1.3.2 प्राथमिक स्तर
- 1.3.3 उच्च प्राथमिक स्तर
- 1.3.4 माध्यमिक स्तर
- 1.3.5 उच्चतर माध्यमिक स्तर
- 1.3.6 सृजनात्मकता, संवेदनशीलता, सामूहिक चेतना एवं मानवता से कला शिक्षा का संबंध

1.4 कला शिक्षा तथा विद्यालयीन पाठ्यक्रम में इसका समावेश

- 1.4.1 पाठ्यसहगामी अथवा पाठ्येतर गतिविधियां
- 1.4.2 विधियां एवं रणनीतियां

1.5 विद्यालयीन शिक्षा में दृश्यात्मक एवं प्रदर्शनकारी कलाओं (संगीत, ड्रामा आदि) का पाठ्यक्रम

- 1.5.1 उद्देश्य
- 1.5.2 विषय–वस्तु
- 1.5.3 विधियां
- 1.5.4 समालोचनात्मक अध्ययन के रूप में नाटक

1.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 मुख्य शब्दावली

1.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

1.10 सहायक पाठ्य सामग्री

1.0 परिचय

विश्वप्रसिद्ध दर्शिनिक प्लेटो का मानना था कि बालकों को केवल अवधारणा के बारे में सूचित करना पर्याप्त नहीं है, छात्र में आलोचनात्मक सोच की क्षमता विकसित करने और उनके भीतर मूल्य शिक्षा के महत्व को प्रेरित करने के लिये नाटक, कला और शिक्षा का सम्मिश्रण आवश्यक है। नाट्य एवं कला आत्माभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण साधन हैं। शाब्दिक दृष्टि से देखा जाए तो नाटक शब्द ग्रीक शब्द 'ड्रमा/ड्राओ' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'आई डू' अर्थात एक्शन। भरत मुनि जो ईसा. पूर्व पांचवीं शताब्दी के माने जाते हैं, के 'नाट्यशास्त्र' में नाटक के कई प्रकार वर्णित हैं। इस समय तक नाटक एक विषय के रूप में अपना स्थान बना चुका था।

टिप्पणी

मध्ययुग के दौरान व्याकरण, बयानबाजी, द्वंद्वात्मक तर्क, अंकगणित, ज्यामिति, खगोल विज्ञान और संगीत जैसी विद्वतापूर्ण एवं भाषा से जुड़ी अभिव्यक्तियों को कला का दर्जा प्राप्त था। कुछ समय बाद लोगों ने यह महसूस किया कि विज्ञान और कला भिन्न–भिन्न हैं। यह अनुभव किया गया कि ललित कलाएं वे हैं, जो इन्द्रियों को आनंदित करें, तब संगीत, नृत्य, पेंटिग, मूर्तिकला, वास्तुकला एवं अन्य सजावटी कलाओं को ललित कलाओं के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। 20वीं शताब्दी के दौरान ललित कलाओं को दृश्य, श्रव्य और प्रदर्शन कला जैसी श्रेणियों में विभाजित किया गया।

प्रस्तुत इकाई में नाट्य एवं कला शिक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- नाट्य एवं कला किस प्रकार मानव जीवन को प्रभावित करते हैं, यह जान पाएंगे;
- नाट्य एवं कला के माध्यम से बालकों की भिन्न–भिन्न क्षमताओं को जान पाएंगे;
- बालकों में सृजनात्मकता, नवाचार एवं अनुसंधान की प्रवृत्ति को विकसित करने में नाट्य एवं कला की भूमिका के बारे में जान पाएंगे;
- विषय शिक्षण के लिये कलाओं को किस प्रकार भिन्न–भिन्न प्रकार से उपयोग में लाया जा सकता है इस बारे में जान पाएंगे;
- कला की बारीकियों से अवगत हो पाएंगे;
- नाट्य एवं कलाओं के माध्यम से अलौकिक ईश्वरीय शक्ति से जुड़ने का अनुभव कर पाएंगे;
- कला के मूल तत्वों एवं सिद्धातों का ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे;
- कला को व्यवसाय के रूप में अपनाकर जीविकोपार्जन का साधन बनाने के बारे में जान पाएंगे।

1.2 कला शिक्षा की पृष्ठभूमि

कला मानव जीवन का अभिन्न अंग है। जन्म लेते ही शिशु को शिक्षित करने की दिशा में कला का सहारा लिया जाता है। शिशु को सीटी की धुन पर मूत्र निष्कासन की आवश्यक क्रिया करने के लिये प्रेरित करना जीवन आरम्भ होते ही मानव के कला प्रभावित स्वभाव का उदाहरण है। लोरी गाकर शिशु को सुलाना, रंगबिरंगे खिलौनों पर शिशु का आकर्षित होना इस बात का प्रमाण है कि कला मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा है।

आदि काल से ही मनुष्य के द्वारा कठिन श्रम के कार्यों को करते समय गीत गुनगुनाने अथवा शिक्षा को संगीतमय बनाकर आसानी से ग्रहण करने के उदाहरण

मिलते हैं। वैदिक मंत्रों के उच्चारण में एवं उन्हें कंठस्थ करने में संगीत की अहम भूमिका रही है। नाटक कला और शिक्षा का सम्मिश्रण आदिकाल से मनुष्य द्वारा अनायास ही किया जाता रहा है। जाने–अनजाने संगीत एवं नाटक को आनन्दप्रद मान कर मनुष्य ने जीवन में इन्हें अपनाया है, यह मानव जीवन में स्वाभाविक रूप से परिलक्षित होता रहा है।

टिप्पणी

शिक्षा में नाट्य एवं कला के समेकन के संबंध में स्वतंत्रता के बाद हमारे देश की शिक्षा नीतियों में समय पर सुझाव दिये गये हैं। आइये भिन्न–भिन्न समितियों द्वारा, शिक्षा में नाट्य के संबंध में दिये गये सुझावों पर दृष्टि डालते हैं–

1.2.1 माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952–53

माध्यमिक शिक्षा के ढांचे में सुधार लाने के लिये भारत सरकार ने 23 सितंबर 1952 को डॉ. लक्ष्मण स्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' का गठन किया था, इसे मुदालियर कमीशन भी कहा जाता है। डॉ. ए.एन. वासु इस आयोग के सचिव थे जिन्होंने देश के विभिन्न भागों का भ्रमण करके देश की माध्यमिक शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन किया। आयोग ने 29 सितम्बर 1953 को भारत सरकार को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। आयोग ने पाठ्यक्रम में विविधता लाने, एक मध्यवर्ती स्तर जोड़ने तथा त्रिस्तरीय सनातक पाठ्यक्रम शुरू करने की सिफारिश की। इस आयोग की सिफारिशों का भारतीय शिक्षा में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। आयोग ने माध्यमिक शिक्षा की पाठ्यचर्या को वास्तविकता, व्यापकता, उपयोगिता और सहसंबंध जैसे उद्देश्यों के आधार पर विकसित करने का सुझाव दिया। आयोग की अनुशंसा के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य छात्रों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और चारित्रिक विकास होना चाहिये। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये आयोग द्वारा सात विषय समूह सुझाये गये–(1) मानविकी (2) विज्ञान (3) कृषि (4) ललित–कला (5) औद्योगिकीय विषय (6) व्यावसायिक विषय (7) गृहविज्ञान।

उक्त सात विषय समूहों में ललित कलासमूह को भी सम्मिलित करके आयोग ने कला शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित किया। परस्पर सहयोग, अनुशासन, मानवता, प्रेम एवं दया जैसी मानवीय भावनाओं को विकसित करने के लिए आयोग ने संगीत, नृत्य, नाट्य एवं हस्तकला जैसे विषयों को पाठ्यचर्या में समाहित करने की अनुशंसा की।

1.2.2 भारतीय शिक्षा आयोग 1964–66

भारतीय शिक्षा आयोग का गठन 14 जुलाई, 1964 को डॉ. एस. कोठारी की अध्यक्षता में किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति निर्माण की दिशा में उचित सुझाव प्राप्त करने के लिये भारत सरकार द्वारा गठित इस आयोग को कोठारी आयोग के नाम से भी जाना जाता है। कोठारी आयोग ने 29 जून 1966 को अपनी रिपोर्ट भारत सरकार को प्रस्तुत की। रिपोर्ट में सामाजिक बदलावों को ध्यान में रखते हुए कुछ ठोस सुझाव दिये गये। आयोग में कुल 17 सदस्य थे, जिसमें 6 सदस्य विदेशी थे।

टिप्पणी

आयोग ने तत्कालीन शिक्षा में विभिन्न राज्यों में प्रचलित व्यवस्थाओं का अध्ययन करने के उपरान्त पाया कि, संपूर्ण देश में शिक्षा में एकरूपता का होना आवश्यक है। आयोग ने संपूर्ण देश के लिये शिक्षा का एक समान ढांचा प्रस्तुत किया जिसमें प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालयीन स्तर की शिक्षा में सुधार हेतु सुझाव दिये गये एवं महिला शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा पर भी ठोस अभिमत प्रस्तुत किये गये। देश सेवा, व्यावसायिक शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट पर चिन्ता व्यक्त करते हुए आयोग के सदस्यों द्वारा एकमत से बालकों में सृजनात्मकता लाने के लिये, कला शिक्षकों के प्रशिक्षण की वकालत की गई। आयोग की इस अनुशंसा पर अमल करते हुए आगे चलकर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने समिति बनाकर स्कूली शिक्षा में सृजनात्मकता एवं अभिव्यक्ति जैसे विषयों को शामिल किया। आयोग के अनुसार– "Adequate facilities for the training of teachers in music and the visual arts do not exist. The neglect of the arts in education leads to a decline of aesthetic tastes and values."

आयोग की उक्त सिफारिश के आधार पर आगे चलकर कला शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं उन्मुखीकरण की रूपरेखा तैयार हुई।

1.2.3 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रकाशन मई 1986 में किया गया एवं नवम्बर 1986 में इसके कार्यान्वयन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई।

21वीं सदी का भारत' तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी का सपना था। "देश को ऐसी शिक्षा नीति दी जाएगी जो देश को आर्थिक व राजनीतिक दृष्टि से 21वीं शताब्दी के लिये तैयार करेगी। शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय एकता तथा नैतिकता जैसे कार्यों का विकास होना चाहिये।

उक्त कथनानुसार इस शिक्षा नीति में सभी को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त कराने पर जोर दिया गया। ग्रामीण, पहाड़ी या ऐसे क्षेत्र जहां शिक्षा नहीं पहुंच रही है वहां तक शिक्षा पहुंचाने के लिये मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता प्रतिपादित की गई। संपूर्ण देश में 10+2+3 शिक्षा संरचना लागू करने पर जोर दिया गया जो अब तक लागू है। इस शिक्षा नीति में आधुनिकीकरण एवं सृजनात्मकता की आवश्यकता पर जोर दिया गया। "In our national perception education is essential for all. This is fundamental to our all-round development, material and Spiritual."

1.2.4 यशपाल समिति 1992

विकास मंत्रालय ने एक राष्ट्रीय सलाहकार समिति बनाई। इस समिति में देश भर के आठ शिक्षाविदों को शामिल किया गया। प्रो. यशपाल इस समिति के अध्यक्ष थे।

यह समिति 'राष्ट्रीय सलाहकार समिति' के नाम से भी जानी जाती है। 'शिक्षा बिना बोझ के' (Learning without burden) के लिये सुझाव देने हेतु यह समिति गठित की गई थी। कठिन पुस्तकों, भारी पाठ्यक्रम एवं बस्ते के अधिक बोझ के कारण बच्चों को रोज की दिनचर्या में अपनी सहज क्षमताओं को दिखाने का अवसर नहीं मिलता है।

टिप्पणी

स्कूली शिक्षा को नीरस एवं बोझिल होने से बचाने के लिये, बालकों को स्कूलों में आनन्दमय वातावरण देने की आवश्यकता है, जहां उनके व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास सहज एवं स्वाभाविक ढंग से हो सके, इसके लिये उन्हें खेलने, साधारण आनंद लेने, सोचने समझने एवं विश्व को जानने के अवसर प्रदान करने होंगे, जिससे उनके भीतर स्वाभाविक रूप से विद्यमान क्षमताओं को अभिव्यक्ति का अवसर मिल सके। यशपाल समिति की यह संकल्पना कला शिक्षा को पोषित करती है।

1.2.5 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF 2005)

प्रो. यशपाल के अनुसार, "इस दस्तावेज में काफी विश्लेषण है और ढेर सारी सलाह भी। यह बार–बार याद दिलाया गया है कि विशिष्टताओं से फर्क पड़ता है। इस बात को निरंतर स्वीकारा गया है कि सीखने की सामाजिक प्रक्रिया मूल्यवान है और उसके साथ समान्वित होकर औपचारिक पाठ्यचर्या में और वृद्धि आएगी। यह दस्तावेज बारंबार बच्चों पर पाठ्यचर्या के बोझ के सवाल की ओर लौटता है। हमें अपने बच्चों को समझ का चस्का लगने देना चाहिये जिससे उन्हें सीखने में मदद मिले। ज्ञान का ऐसा स्वाद हमारे बच्चों के वर्तमान को पूर्णतः सृजनात्मक और आनंदप्रद बना सकेगा।"

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF 2005) को तैयार करते समय निम्नलिखित मुद्दों को प्रमुख रूप से ध्यान में रखा गया–

- ज्ञान को स्कूल से बाहर के जीवन से जोड़ना।
- पढ़ाई रटंत प्रणाली से मुक्त हो यह सुनिश्चित करना।
- पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन कि वह बच्चों को विकास के अवसर मुहैया करवाये।
- परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना।
- एक ऐसी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय चिंताएं समाहित हों।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के दस्तावेज में अध्याय–3 के बिन्दु क्र. 3.5 पर कला शिक्षा को समाहित करते हुए पृ.क्र. 62 पर लिखा है कि– "अगर अपनी अनूठी सांस्कृतिक पहचान को उसकी विविधता और समृद्धता सहित बचाए रखना है तो औपचारिक शिक्षा में कला शिक्षा को तत्काल समेकित करना होगा। कला बस स्कूल के स्थापना दिवस, वार्षिक दिवस, गणतंत्र दिवस या स्कूल निरीक्षण के दौरों के अवसर पर प्रदर्शन की वस्तु बनकर रह गई है। हम कला के महत्व की अधिक समय तक उपेक्षा नहीं कर सकते और हमें बच्चों में कला संबंधी जागरूकता व रुचि के प्रसार–प्रोत्साहन के लिये सारे संभावित संसाधन और सारी ऊर्जा लगा देनी चाहिए।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF 2005) के दस्तावेज में कला शिक्षा एवं कला समेकित शिक्षा को पर्याप्त स्थान दिया गया है।

टिप्पणी

1.2.6 यूनेस्को दस्तावेज

United Nations Educational Scientific and Cultural Organization (UNESCO) द्वारा 06/3/2006 से 09/3/2006 तक Lisbon में आयोजित वर्ल्ड–कॉन्फ्रेन्स– The World Confernce on Arts Education: building Creative capacities for the 21st Century, के दस्तावेज में, जिसे 'Road Map for Arts Education. शीर्षक दिया गया; व्यक्तिगत क्षमताओं को अभिव्यक्त करने एवं विकसित व समृद्ध बनाने के लिये कला शिक्षा को आवश्यक बताया गया है। 'Research indicates that introducing learners to artistic processes, while incorporating elements of their own culture into education, cultivates in each individual a sense of creativity and initiative, a fertile imagination emotional intelligence and a moral compass, a capacity for critical reflection, a sense of autonomy, and freedom of thought and action.")

इसके अतिरिक्त शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने और सांस्कृतिक विविधता को सहेजने में कला शिक्षा की अहम् भूमिका को यूनेस्को द्वारा चिह्नित किया गया एवं स्कूली शिक्षा में कला शिक्षा को विज्ञान, गणित एवं अन्य विषयों के समकक्ष दर्जा दिये जाने की वकालत की गई।

कला शिक्षा की पृष्ठभूमि के अन्तर्गत हमने जाना कि कला मानव जीवन का अभिन्न अंग है। आदि काल से ही मानव अपनी दिनचर्या में कला का समेकन करता आया है। कला शिक्षा बालकों में एकाग्रता, आत्मविश्वास एवं दृढ़ता का संचार करती है। कला समेकित शिक्षा किसी भी विषय को सहज रूप से आनन्दपूर्वक सीखने में सहायक है। समय–समय पर भारत सरकार द्वारा गठित विभिन्न आयोगों ने एवं UNESCO द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में कला शिक्षा के महत्व को चिह्नित किया गया एवं पाठ्यचर्या में कला शिक्षा को अन्य विषयों के समकक्ष स्थान दिये जाने की सिफारिश की गई।

अपनी प्रगति जांचिए

1. भारत सरकार ने 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' का गठन कब किया था?
   (क) 2 अक्टूबर, 1952 को (ख) 15 अगस्त, 1947 को
   (ग) 26 जनवरी, 1948 को (घ) 23 सितंबर, 1952 को
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रकाशन कब किया गया था?
   (क) मई, 1986 को (ख) जून, 1987 को
   (ग) जुलाई, 1988 को (घ) अगस्त, 1989 को

1.3 कला शिक्षा के उद्देश्य

देश के लिये शिक्षा नीति का निर्धारण करते समय विभिन्न समितियों एवं आयोगों ने कला शिक्षा को औपचारिक शिक्षा में समाहित करने के सुझाव दिये। बालकों में कला की समझ विकसित करने के लिये शिक्षक में कला की पूर्ण अथवा पर्याप्त समझ होना

टिप्पणी

आवश्यक है, अतः शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में कला शिक्षा को सम्मिलित करने के सुझाव के अनुसार राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा इस ओर कदम उठाए गए। विभिन्न समितियों ने कला शिक्षा को बालक के चहुंमुखी विकास के लिये आवश्यक बताया। सूचनाओं को एकत्रित करने का कार्य तो मशीनों के द्वारा भी भली भांति किया जा सकता है, लेकिन मानव जीवन को सभ्य, सुसंस्कृत एवं सौन्दर्यपूर्ण बनाने में, मानव समाज को आत्मिक आनन्द प्रदान करने में तथा सहयोग, शांति एवं एकाग्रता जैसे बहुमूल्य गुणों की ओर प्रेरित करते हुए ज्ञान प्रदान करने में कला की महती भूमिका है। किसी अबोध बालक को यदि हम उपदेशात्मक ढंग से हंसते रहने या मुस्कराते रहने की शिक्षा देंगे, तो शायद उस पर इसका उतना प्रभाव नहीं पड़ेगा, लेकिन यदि हम स्वयं हंसने का या ऐसे किसी आनंदित करने वाले प्रसंग का प्रदर्शन या अभिनय करेंगे, तो वह अनायास ही खिलखिलाकर हंस पड़ेगा। वह उस स्थिति और परिप्रेक्ष्य में स्वयं को भूलकर भावात्मक रूप से उस प्रसंग में डूब जाएगा, विलीन हो जाएगा। यह है कला की शक्ति कला की इस शक्ति का सदुप्रयोग करते हुए बालकों की उग्रता को शांति की ओर अग्रसर करना साथ ही उन्हें तनावमुक्त स्थिति में आनन्दपूर्वक बड़े से बड़े चारित्रिक गुण एवं ज्ञान का अधिकारी बनाना कला शिक्षा का उद्देश्य है।

1.3.1 पूर्व प्राथमिक स्तर

पूर्व प्राथमिक स्तर किसी भी शिशु के जीवन का वह काल होता है जब वह पहली बार अपने परिवार से बाहर किसी अन्य स्थान पर कुछ समय बिताता है। इस स्तर पर उसे तरह–तरह के चित्र, रंग, खिलौने बहुत आकर्षित करते हैं। उसे आनन्दित करने में उसे प्रसन्न रखने में इस स्तर पर प्रदर्शन कला की बड़ी भूमिका होती है। विभिन्न तरह की मुखाकृतियों एवं हाव–भाव के साथ वह प्रसन्न होता है। हाथों को नृत्य की मुद्रा में प्रदर्शित करके उसे संगीत की लय में कविताएं सिखाने पर वह कविता में समाहित ज्ञान को स्वयं में समाहित करता जाता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार– "स्कूल के सालों के दौरान हर स्तर पर कला के विविध माध्यम और स्वरूप बच्चों को खेल–खेल में तथा विषयबद्ध रूप में विकसित होने में मदद करते हैं, उन्हें अभिव्यक्ति के कई रास्ते सिखाते हैं। संगीत, नृत्य और नाटक विद्यार्थियों के आत्मबोध, उनके ज्ञानात्मक और सामाजिक विकास में सहायक होते हैं। पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक स्तरों पर ये सभी कलाएं बेहद महत्वपूर्ण हैं।

1.3.2 प्राथमिक स्तर

प्राथमिक स्तर पर बालक उत्सुकता और जिज्ञासा से लबरेज रहता है। नयी–नयी वस्तुएं और नये–नये लोगों को देखकर, हर विषय को जानने की उसके भीतर उत्सुकता रहती है। इस स्तर पर बालक में चंचलता भी भरपूर रहती है। साथ ही बालक वही क्रियाएं करता है, जिसमें उसे आनन्द मिलता है। इस स्तर पर उससे आज्ञाकारी होने की अपेक्षा नहीं की जा सकती, किन्तु यह गुण उसे स्नेह देकर प्रेमपूर्वक कला के माध्यम से सिखाया जा सकता हैं संगीत मय ढंग से विषय को रोचक

बनाकर प्रस्तुत करने पर इस स्तर से ही बालकों में नैतिक के प्रति रुझान उत्पन्न किया जा सकता है।

टिप्पणी

आपने प्राथमिक स्तर पर गणित की कक्षा में बच्चों को पहाड़े याद करते हुए देखा तो होगा ही। कोई बालक या बालिका जिसे पहाड़ा याद होता है, वह कक्षा में सामने खड़े होकर ऊंची आवाज में पहाड़े का संगीत वाचन करता है– दो इकम दो, फिर पूरी कक्षा के बालक–बालिकाएं उसे दोहराते हैं, जिससे एक संगीतमय वातावरण बनता है, तुकबंदी के साथ सामान्य मानसिक स्तर के बालक–बालिकाओं को भी पहाड़े याद होने लगते हैं और बालक–बालिकाओं को इस पूरी सामूहिक प्रक्रिया में बहुत आनन्द आता है। एक को देखकर कुछ अन्य बालक आगे खड़े होकर पहाड़े का वाचन करने के लिए आगे बढ़ने लगते हैं। इस प्रकार बालकों में उत्साह बना रहता है। इसके अतिरिक्त विज्ञान विषय में तथ्यों का ज्ञान कराते समय साबुन के पानी में कागज की पुंगी डुबाकर मुंह से फूंक मार कर बुलबुले दिखाकर उन्हें इस प्रक्रिया में बुलबुले उठने का कारण आसानी से समझाया जा सकता है। हिन्दी विषय में कविता का सस्वर संगीतमय वाचन बालक–बालिकाओं को आनन्दित करता है तथा प्रकरण को कंठस्थ करने में मदद करता है।

इस प्रकार किसी भी विषय की कठिन अवधारणाओं को कला के साथ समेकित करके, बालक–बालिकाओं को सहज रूप से समझाया जा सकता है, आनन्दपूर्वक बिना किसी दबाव के शिक्षित किया जा सकता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार– "बच्चे भाषा, प्रकृति के रूपों की खोज, स्वयं की और अन्य की समझ आदि को कला के माध्यम से आसानी से विकसित कर सकते हैं। कला की प्रकृति ही ऐसी होती है कि सभी बच्चे उसमें भागीदारी कर सकते हैं।

कला और विरासत को शिक्षा से जोड़ने के संसाधन हर स्कूल में उपलब्ध होने चाहिये। इसलिये यह महत्वपूर्ण है कि पाठ्यचर्या में कला गतिविधियों के लिये पर्याप्त समय हो। नाटक–नृत्य, मूर्तिकला संबंधी कक्षाओं के लिये घंटे–डेढ़ घंटे का समय चाहिए। जोर इस बात पर नहीं हो कि बच्चे वयस्कों के मानकों के हिसाब से कला सीखें या पूर्ण कला का विकास हो, बल्कि कला शिक्षा के माध्यम से बच्चे को अपने आप विकसित होने का मौका दिया जाए, उन पर अधिक दबाव न डाला जाए।

1.3.3 उच्च प्राथमिक स्तर

इस स्तर पर आकर बालक को विद्यालय जाने की आदत पड़ जाती है। अपने साथियों के साथ मिलकर बच्चे अपने स्वभाव के अनुकूल समूह बनाने लगते हैं। कुछ बालकों में शरारती बालक–बालिकाएं इस स्तर पर परिलक्षित होने लगते हैं। आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति दिखाई देने लगती है, किन्तु कुछ शर्मीले एवं एकाकी होने के कारण खुलकर आत्मप्रदर्शन नहीं कर पाते हैं, ऐसे में कलाओं के माध्यम से इन्हें अभिव्यक्ति के उचित अवसर दिये जा सकते हैं एवं सकारात्मक आदतों को बनाने में कलाओं का भरपूर उपयोग किया जा सकता है। इस स्तर पर सीखी हुई आदतें, आगे चलकर व्यक्ति के जीवन का निर्माण करती हैं। इस स्तर पर कला के माध्यम से बच्चों में स्वस्थ चरित्र

टिप्पणी

निर्माण के प्रयास मानसिकता के साथ जीवन में कर्मशील रहने की आदतें इस स्तर पर विकसित की जानी चाहिये, ताकि देश को आगे बढ़ाने के लिये स्वस्थ सोच वाले नागरिक तैयार हो सकें। इसके लिए उच्च प्राथमिक स्तर पर कला समेकित शिक्षा का भरपूर प्रयोग किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार– "कला, साहित्य और ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में सृजनात्मकता का एक–दूसरे से घनिष्ठ संबंध है। बच्चे की रचनात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्यातमक आस्वादन की क्षमता के विस्तार के लिये साधन और अवसर मुहैया करना शिक्षा का अनिवार्य कर्तव्य है। आज जबकि बाजार की शक्तियों में मतों व अभिरुचियों को प्रभावित करने की गुंजाइश ज्यादा है, सौंदर्य की समझ व रचनात्मकता के लिये शिक्षा की महत्ता और भी बढ़ गई है। विद्यार्थी को सौंदर्य के विभिन्न रूपों को समझने व उनकी विवेचना करने में समर्थ बनाने का प्रयास होना चाहिए।"

1.3.4 माध्यमिक स्तर

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिका किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों से भी गुजर रहे होते हैं। समाज एवं परिवार की आशाएं इस स्तर पर बालक–बालिकाओं को दिशा देने में अहम भूमिका निभाती हैं। छात्रों के मन–मस्तिष्क पर इन आशाओं पर खरे उतरने का दबाव भी रहता है। शारीरिक परिवर्तनों के कारण असहजता भी रहती है एवं विद्यालय में अपने साथियों के बीच अपना स्थान बनाने की फ्रिक्र भी रहती है। इस सब के बीच सामंजस्य बनाने में कला शिक्षा बालक–बालिकाओं के लिये मददगार सिद्ध हो सकती है। कला शिक्षा छात्रों में एकाग्रता का संचार करके उनकी बेचैनी एवं उग्रता को कम करती है व उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न करती है। इस स्तर पर आकर छात्र–छात्राएं कला में निहित आनन्द का अनुभव भिन्न प्रकार से करने में सक्षम होते हैं। वे कला के विभिन्न पक्षों एवं बारीकियों को जानने की क्षमता रखते हैं, फलस्वरूप कला शिक्षा को ही अपना व्यवसाय बनाने के लिये भी अपनी रुचि अनुसार कला का चयन करने के लिये स्वयं को मानसिक रूप से तैयार करने लगते हैं एवं उस क्षेत्र में बहुत ऊंचाइयों तक जाते हैं, स्वयं द्वारा चयनित कला के कई अनदेखे पहलुओं को समाज के सामने रखना प्रारम्भ कर देते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने ऐसे शिक्षक तैयार करने पर जोर दिया है, जो छात्रों में नये ज्ञान का सृजन करने की क्षमताओं में वृद्धि करने का प्रयास करें।

1.3.5 उच्चतर माध्यमिक स्तर

इस स्तर पर छात्रों में माध्यमिक स्तर पर विकसित क्षमताओं का परिमार्जन होने लगता है और सौन्दर्य की समझ परिष्कृत होने लगती है। कला प्रेमी छात्रों की गतिविधियां उनकी रुचि के अनुसार सबके सामने आने लगती हैं। विद्यार्थी अपनी–अपनी रुचि एवं क्षमताओं के आधार पर अपनी रुचि की कलाओं की बारीकियों का अध्ययन करते हैं। वर्तमान समय में उस कला के क्षेत्र में कार्यरत विशेषकों से प्रत्यक्ष या इन्टर नेट के माध्यम से जुड़ते हैं, पूर्व में हुए अनुसंधानों का अध्ययन करते हैं एवं स्वयं की मौलिकता

टिप्पणी

के माध्यम से नयी–नयी शैलियां विकसित करते हैं। जीविकोपार्जन के लिये कला का चयन करने वाले विद्यार्थियों के लिये आज अपार संभावनाएं हैं। उच्चतर माध्यमिक स्तर कला को व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिये पहली सीढ़ी है। इस स्तर पर जो विद्यार्थी रचनात्मकता में रुचि रखते हैं, कला शिक्षा उनके लिये ऊंचाई के कई द्वारा खोल देती है। इन्टरनेट के माध्यम से घर बैठे–बैठे भी विद्यार्थी किसी कला की बारीकियों को गहराई से जान सकते हैं, सम्पूर्ण विश्व के प्ररिप्रेक्ष्य में उस कला में व्यवसाय की संभावनाओं का अंदाजा लगा सकते हैं, आवश्यकतानुसार उस कला में अपनी मौलिकता और सृजनात्मकता के सहयोग से अपनी विशिष्ट शैली विकसित कर के सम्पूर्ण समाज को उस कला से लाभान्वित कर सकते हैं एवं स्वयं के जीविकोपार्जन के साथ–साथ दूसरों के लिये रोजगार के अवसर निर्मित कर सकते हैं। इस स्तर पर कला शिक्षा छात्रों में सहयोग, सौन्दर्यानुभूति एवं स्वस्थ स्पर्धा की भावना विकसित करती है।

1.3.6 सृजनात्मकता, संवेदनशीलता, सामूहिक चेतना एवं मानवता से कला शिक्षा का संबंध

कला मानव का सहज स्वभाव है जिसका आविर्भाव ही मानव की सृजनात्मक प्रकृति के कारण हुआ है। जब मानव मन प्रसन्न होता है, तभी वह विभिन्न कलाओं का सृजन करता है। कला की अभिव्यक्ति मानव के अंतर्मन से मानव की आत्मा से होती है। वह प्राकृतिक सौन्दर्य को अपनी सृजनात्मकता तथा संवेदनशीलता से मानव चित्रों में अभिव्यक्त करता है, पत्थरों पर उकेरता करता है, नई–नई धुनों का सृजन करता है, जिससे संपूर्ण मानवता आनन्दित होती है, सौन्दर्य की अनुभूति करती है। विभिन्न कलाएं मानवता को पोषित करती हैं। संगीत, नाट्य आदि के माध्यम से मानवीय गुणों को समाज में स्थापित किया जाना आसान हो जाता है। ये कलाएं सहज रूप से किसी भी संदेश को समाज में संप्रेषित करने की क्षमता रखती हैं। ये सहृदय को आनंदित करने के साथ–साथ उसमें मानवीय गुणों को संचारित करने की ताकत रखती हैं। कला व्यक्ति को स्व से ऊपर उठकर सौन्दर्य की अनुभूति के लिए तैयार करती है, समाज कल्याण की भावना उत्पन्न करती है एवं आपसी सहयोग की भावना उत्पन्न करती है। किसी भी सभ्यता या संस्कृति को जानने के लिये उस समय की कला एक प्रमुख साधन का कार्य करती है। थियेटर निर्देशक और शिक्षण कलाकार मैट बुकानन का कहना है– "नाटकीय कला शिक्षा समस्या समाधान में रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह दुनिया के बारे में छात्रों की धारणाओं को चुनौती दे सकती है। नाटकीय अन्वेषण छात्रों को भावनाओं, विचारों और सपनों के लिये एक आउटलेट प्रदान कर सकता है जो उनके पास अन्यथा व्यक्त करने के लिये नहीं हो सकता।

"नाटक छात्रों को उनकी रचनात्मकता और सहजता के साथ–साथ उनके विचरों की अभिव्यक्ति में आत्मविश्वास विकसित करने में मदद करता है। अंत में यह आत्म अनुशासन आलोचना की स्वीकृति और सकारात्मक प्रतिक्रिया और दूसरों के साथ सहयोग सिखाता है।"

टिप्पणी

शिक्षा में नाटक और कला का उपयोग करने से छात्र अन्य सामाजिक तत्वों के साथ सहानुभति करना सीखते हैं। उनमें सह–कार्य एवं सह अधिगम की प्रवृत्ति विकसित होती है। नाटक और कला का उपयोग छात्रों को शिक्षा के मूल को समझने व सीखने के रचनात्मक तरीके तैयार करने में मदद करता है, जिससे वे समाज में बदलाव के लिये उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं। कला को परिमार्जन के लिये अत्यधिक अभ्यास और प्रयासों की आवश्यकता होती है, जिससे बालकों में दृढ़ता के गुण का विकास होता है। जैसे–जैसे बच्चे कला के माध्यम से एक समूह का हिस्सा बनते हैं, वैसे–वैसे उनमें उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। जवाबदेही के साथ–साथ कला बच्चों को सहयोग की भावना से कार्य करना सिखाती है एवं उनमें निर्णय लेने की क्षमता उत्पन्न करती है।

यहां हमने कला शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में चर्चा की। पूर्व प्राथमिक स्तर, उच्च प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर एवं उच्चतर माध्यमिक पर कला शिक्षा किस प्रकार छात्रों को सीखने में मदद करती है, पाठ्यचर्या की कठिन अवधारणाओं को सरलता से प्रस्तुत करती है एवं छात्रों को बिना किसी दबाव के आनन्दपूर्वक ज्ञानार्जन करने में जीविकोपार्जन के साधन के रूप में संबल प्रदान करती है, ये हमने जाना। साथ ही हमने यह भी जाना कि कला शिक्षा का सृजनात्मकता, मानवता एवं सामूहिक चेतना से क्या संबंध है। कला शिक्षा किस प्रकार बालकों में दृढ़ता एवं आत्मविश्वास उत्पन्न करके आयु के भिन्न–भिन्न स्तरों पर उनके संवेगों एवं मनोभावों को सही दिशा देकर समाज एवं राष्ट्र के लिये स्वस्थ मानसिकता से युक्त नागरिक तैयार करने में अदभुत ढंग से कार्य करती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार कला शिक्षा आवश्यक रूप से एक उपकरण और विषय के रूप में शिक्षा का हिस्सा (कक्षा 10 तक) हो और स्कूल में इससे संबंधित सुविधाएं हों। कला के अन्तर्गत–संगीत, नृत्य, दृश्य–कला और नाटक चारों को शामिल किया जाना चाहिये। कला के महत्व के संबंध में अभिभावकों, स्कूल अधिकारियों और प्रशासकों को अवगत कराये जाने की जरूरत है। कला शिक्षण में जोर सीखने पर हो न कि सिखाने पर और इसमें दृष्टि सहभागिता पर आधारित हो।

अपनी प्रगति जांचिए

3. कौन–सा स्तर किसी भी शिशु के जीवन का वह काल होता है, जब वह पहली बार अपने परिवार से बाहर किसी अन्य स्थान पर कुछ समय बिताता है?

   (क) प्राथमिक स्तर (ख) पूर्व प्राथमिक स्तर

   (ग) माध्यमिक स्तर (घ) उच्चतर माध्यमिक स्तर

4. किसके माध्यम से विद्यार्थी घर बैठे–बैठे भी किसी कला की बारीकियों को गहराई से जान सकते हैं?

   (क) अखबार (ख) सूचना केंद्र

   (ग) इन्टरनेट (घ) कला केंद्र

1.4 कला शिक्षा तथा विद्यालयीन पाठ्यक्रम में इसका समावेश

टिप्पणी

विभिन्न शिक्षा समितियों एवं आयोगों द्वारा समय–समय पर कला शिक्षा का विद्यालयीन पाठ्यक्रम में समावेश किया गया। विद्यालयीन शिक्षा के साथ कला शिक्षा को एकीकृत करते हुए, शिक्षा को रुचिकर बनाना, कला के माध्यम से शिक्षा को बालक के लिये आनन्दपूर्ण बनाना, तनावमुक्त एवं दबावमुक्त सीखने का वातावरण तैयार करना, विद्यालयीन शिक्षा में तदनुसार पाठ्यक्रम निर्धारण आदि की तैयारी कला शिक्षा को विद्यालयीन पाठ्यक्रम में समाहित करने की दिशा में अगला चरण है। किसी प्रकार कला शिक्षा को विद्यालयीन शिक्षा में अन्तर्निहित किया जाये, जिससे विद्यार्थी आनन्दपूर्वक पाठ्यक्रम की कठिन अवधारणाओं को सीख सकें शिक्षाविदों के लिये यह एक महत्वपूर्ण कार्य था। अपने देश की संस्कृति एवं सभ्यता में समाहित लोक कलाओं को जीवित रखना भी अत्यन्त आवश्यक था, साथ ही स्वतंत्र देश में स्वतंत्र विचारधारा, लोकतंत्र के अनुकूल समझ एवं अपने देश की धरोहर से प्रेम रखने वाले नागरिक तैयार करना भी शिक्षा का प्रमुख कार्य था।

1.4.1 पाठ्यसहगामी अथवा पाठ्येतर गतिविधियां

पाठ्यसामग्री को कला के साथ एकीकृत करके बालक–बालिकाओं के लिये आनन्दपूर्ण एवं रुचिपूर्ण सीखने का वातावरण तैयार करना आज की आवश्यकता है। टीवी, लैपटॉप एवं मोबाइल को खिलौने की तरह उपयोग करने वाले आज के बालक–बालिकाएं इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में संलिप्तता से अधिक कक्षा–कक्ष की गतिविधियों में सक्रिय रहें, यह आज के शिक्षाविदों के लिये एक बहुत बड़ी चुनौती है, जिसे शिक्षक एवं शिक्षा जगत के सभी शिक्षाविदों को मिलकर चुनौती देना है। हाल ही में कोरोना काल में लगाताए आनलाइन पढ़ाई करने पर बालक–बालिकाओं को कक्षा–कक्ष एवं विद्यालय की अहमियत समझ आने लगी है। विद्यालयीन शिक्षा यदि किसी कला के साथ एकीकृत किये बिना छात्रों के समक्ष प्रस्तुत की जाये, तो उसमें नीरसता आती है एवं सीखने के लिए अतिरिक्त प्रयत्न करने पड़ते हैं। यदि हम पूर्व प्राथमिक स्तर का उदाहरण लें तो उन्हें कविता कण्ठस्थ कराने के लिये शिक्षक कविता का संगीतमय उच्चारण करता है साथ ही अभिनय के साथ बच्चों को आनन्दित करके हुए, बहुत ही सहज तरीके से उन्हें कठिन–कठिन कविताएं कण्ठस्थ करा देता है। इस अधिगम प्रक्रिया में बच्चे समूह में रहते हुए और भी कई मानवीय एवं चारित्रिक गुण सीखते हैं। इसी प्रकार प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर छात्रों की आयु के अनुकूल कला एवं नाट्य का उपयोग करते हुए पाठ्यविषयों को रुचिपूर्ण बनाकर अधिगम के साथ–साथ बालकों का सर्वांगीण विकास किया जाना आवश्यक है। इस प्रक्रिया में शिक्षक की बहुत अहम् भूमिका है। पाठ्येतर गतिविधियां भी बालकों को बेहतर ढंग से शिक्षित करने का कार्य करती हैं। यदि विद्यालय में नृत्य, गायन, रंगोली, लोकगीत आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है तो शिक्षकों को अपने ढंग से बालकों की मॉनीटिरिंग करनी चाहिये। यदि किसी बालक द्वारा समूह में किसी

टिप्पणी

प्रकार का अवांछित व्यवहार किया जाता है, तो तत्काल समय देखकर उसे इस प्रकार निर्देशित करना, चाहिये ताकि उसे अपमान का अनुभव भी न हो और अपनी गलती का एहसास भी हो जाये। उसे वहीं पर छोड़ न दिया जाये बल्कि आगे भी उसकी मॉनीटरिंग करते हुए उसके अवांछित गुण को उस स्तर पर ही समाप्त करते का प्रयास करना चाहिये। यह सारी कार्यवाही इस प्रकार योजनाबद्ध तरीके से होनी चाहिये, जिससे बालकों को इसकी जानकारी भी न हो और वे सहज ढंग से वांछित परिणाम भी दे सकें। ऐसा करने से समाज को आगे जाकर जिम्मेदार नागरिक प्राप्त हो सकेंगे। पाठ्येतर गतिविधियां बालक–बालिकाओं में उत्साह का संचार करती हैं एवं उनके भीतर छिपे गुणों–अवगुणों को व्यक्त करती हैं, क्योंकि इन गतिविधियों में सभी छात्र–छात्राएं अपने स्वभाव के अनुरूप आत्मप्रदर्शन करते हैं और शिक्षक इन अवसरों पर बालकों को बेहतर ढंग से समाजोपयोगी गुणों के प्रति सचेत रहने के लिये प्रेरित करने का कार्य कर सकता है, उनमें समाजोपयोगी गुण को स्थापित करने का प्रयास कर सकता है।

इस प्रकार पाठ्य–सहगामी एवं पाठ्येतर गतिविधियां बालक–बालिकाओं में सामाजिक गुणों को विकसित करने का एक सशक्त माध्यम हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार– "यह तथ्य कि बच्चा ज्ञान का सृजन करता है, इसका निहितार्थ है कि पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें शिक्षक को इस बात के लिये सक्षम बनाएं कि वे बच्चों की प्रकृति और वातावरण के अनुरूप कक्षायी अनुभव आयोजित करें, ताकि सारे बच्चों को अवसर मिल पाए। शिक्षण का उद्देश्य बच्चे के सीखने की सहज इच्छा और युक्तियों को समृद्ध करना होना चाहिये। सक्रिय गतिविधि के जरिये ही बच्चा अपने आसपास की दुनिया को समझने की कोशिश करता है इसलिये प्रत्येक साधन का उपयोग इस तरह किया जाना चाहिये कि बच्चों को खुद को अभिव्यक्त करने में वस्तुओं की खोजबीन करने में अपने प्राकृतिक और समाजिक परिवेश की खोजबीन करने में और स्वस्थ रूप से विकसित होने में मदद मिले।

1.4.2 विधियां एवं रणनीतियां

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार, "अगर बच्चों के कक्षा के अनुभवों को इस तरह आयोजित करना हो जिससे उन्हें ज्ञान सृजित करने का अवसर मिले तो हमारी स्कूली व्यवस्था में व्यापक व्यवस्थागत सुधारों की जरूरत होगी। यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या दस्तावेज इस बात की सिफारिश करता है कि विषयों के बीच की दीवारें नीची कर दी जाएं ताकि बच्चों को ज्ञान का समग्र आनन्द मिल सके और किसी चीज को समझने से मिलने वाली खुशी हासिल हो सके। यदि विद्यार्थियों की परियोजनाएं सुनियोजित हों तो उनसे ज्ञान सृजित होगा। "इस प्रकार विद्यालयीन शिक्षा में कला शिक्षा को समाविष्ट करने की सिफारिशें समय–समय पर की गईं एवं इसके कार्यान्वयन के लिये विधियों एवं रणनीतियों की ओर भी संकेत किया गया।

(क) प्रोजेक्ट : यह विधि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अधिक उपयोगी है। किसी भी विषय में कला को किस प्रकार समन्वित किया जा सकता है, किसी विशेष कला

टिप्पणी

के आरम्भ से लेकर अद्यतन स्थिति तक, किसी कलाकार की जीवन शैली अथवा संगीत, नृत्य या नाट्यविद्यालयों में आरम्भ से अब तक हुए परिवर्तनों पर अथवा अन्य प्रासांगिक विषयों पर प्रोजेक्ट बनाने से विद्यार्थियों को विषय से संबंधित ज्ञान भी प्राप्त होता है एवं शिक्षा में कला की अहमियत का भी पता चलता है। इस प्रकार प्रोजेक्ट के रूप में विद्यालयीन शिक्षा में कला को समाहित किया जा सकता है। यहां पर यह ध्यान दिया जाना आवश्यक है कि प्रोजेक्ट के प्रति विद्यार्थियों में उत्साह एवं रुचि होनी चाहिये। प्रोजेक्ट केवल अंक अर्जित करने के उद्देश्य से पाठयक्रम में होना, कला शिक्षा के प्रति न्याय नहीं होगा।

(ख) केस स्टडी : केस स्टडी भी प्रोजेक्ट से मिलती–जुलती एक विधि है, जिसे उच्चर माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में समाहित किया जा सकता है। केस स्टडी में किसी भी विषय का विस्तार से अध्ययन कर उसका दस्तावेज तैयार किया जाता है। उच्च शिक्षा में चिकित्सा क्षेत्र में मनो चिकित्सकों द्वारा अध्यापक शिक्षा में असामान्य बालकों के सुधार के लिये शिक्षकों द्वारा केस स्टडी जैसी विधि को अपनाया जाता है, लेकिन विद्यालयीन शिक्षा में कला–शिक्षा के समावेश के लिये अपनायी जाने वाली विधि इन से भिन्न है, यह किसी रोग या बुराई के निदान या उपचार के उद्देश्य से नहीं अपनाई जाएगी, बल्कि यह कला के विषय में अनुसंधान को आगे बढ़ाने की प्रथम सीढ़ी के रूप में अपनाई जा सकती है। इस विधि में कला से संबंधित किसी भी विषय का विस्तार से अध्ययन कर उसका दस्तावेजीकरण किया जाता है एवं नवाचार की संभावनाओं को चिह्नित किया जाता है। यह विधि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कला एवं संस्कृति के प्रति रुचि एवं ज्ञान उत्पन्न करते हुए उनके व्यक्तित्व में अदभुत नैतिक गुणों को उत्पन्न करने की क्षमता रखती है।

(ग) डॉक्यूमेन्ट्री : किसी सांस्कृतिक एवं कलात्मक विषय पर डॉक्यूमेन्ट्री बनाकर प्रस्तुत करना आज के समय में एक रुचिकर विधि है। आज सभी विद्यालयों में कम्प्यूटर की शिक्षा दी जाती है। लगभग सभी विद्यार्थी कम्प्यूटर का ज्ञान रखते हैं। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी स्वयं किसी भी विषय पर डॉक्यूमेन्ट्री तैयार कर सकते हैं, जिससे उनमें विभिन्न कौशल एवं ज्ञान का विकास होता है। प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को डॉक्यूमेंट्री दिखाकर कला शिक्षा की बारीकियों से अवगत कराया जा सकता है। इस प्रकार डॉक्यूमेन्ट्री के माध्यम से रुचिकर ढंग से मनोरंजन एवं आनन्द के साथ कलाशिक्षा का ज्ञान बालकों को दिया जा सकता है।

(घ) एलबम बनाना : विद्यार्थी चित्रों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। एलबम भी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। एलबम के रूप में चित्रों का संकलन कुछ बच्चों को बहुत लुभाता है। कुछ छात्र वाइल्ड लाइफ में रुचि रखते हैं तो कुछ विभिन्न सांस्कृतिक धरोहरों के विषय में जानने की इच्छा रखते हैं। फोटोग्राफी के माध्यम से वे अपने इस शौक को पूरा करने के साथ–साथ वाइल्ड लाइफ या अन्य सांस्कृतिक विषयों की बारीकियों को भी समझते हैं, और इस पूरी प्रक्रिया

टिप्पणी

में छात्रों को बहुत आनन्द आता है। अत्याधुनिक कैमरों एवं कम्प्यूटर के इस युग में कला के इस रूप ने नई ऊंचाइयों को छुआ है। फोटोज के विवरण के साथ इस प्रकार एलबम में प्रस्तुत करना कि कोई भी विषय एक ही बार में स्पष्ट हो जाए। इस विधि के अन्तर्गत सांस्कृतिक महत्व की इमारतों के एलबम बनाए जा सकते हैं, जिसमें इमारतों के विषय में सम्पूर्ण जानकारी भी अंकित हो। ऐतिहासिक महत्व के स्मारकों के एलबम बनाए जा सकते हैं, जिसमें भिन्न–भिन्न काल में प्रचलित स्थापत्य कला एवं वास्तु कला को समझाया जा सकता है। किसी कला में पारंगत विद्वानों के चित्रों के साथ उनका विवरण प्रस्तुत करते हुए स्वयं का एवं दूसरों का ज्ञानवर्द्धन किया जा सकता है। इसके लिये आज के समय में सभी स्थानों पर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है, बल्कि घर बैठे इन्टरनेट पर सर्च करके एलबम बनाने की विधि का उपयोग विद्यालयीन बालक–बालिकाएं कर सकते हैं।

(ङ) कला एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों, उत्सवों तथा प्रदर्शनियों का भ्रमण : शैक्षिक भ्रमण आज विद्यालयीन शिक्षा का हिस्सा हैं एक त्रैमासिकी हो पाने के बाद अधिकांश विद्यालय विद्यार्थियों को अपने शहर के आसपास स्थित किसी सांस्कृतिक या ऐतिहासिक महत्व के स्थान पर पिकनिक हेतु ले जाते हैं यह पिकनिक बच्चों के विद्यालयीन जीवन का अनमोल समय होता है, जिसका वे स्कूल खुलते ही बेसब्री से इन्तजार करते हैं। कक्षा के सभी बच्चों के साथ यात्रा करना साथ में शिक्षकों का भी होना, साथ में भोजन करना और भ्रमण का आनन्द लेना विद्यालयीन शिक्षा के हर स्तर के विद्यार्थियों के लिये रोमांचक होता है। छात्र–छात्राएं उत्साह में रहते हैं, अतः ऐसे में शिक्षक की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। जिस उद्देश्य से पिकनिक का आयोजन पाठ्यक्रम में निर्धारित है उस उद्देश्य की पूर्ति के लिये शिक्षक को प्रतिबद्ध रहना चाहिये। बच्चों को भ्रमण पर ले जाते समय उनके लिये प्राथमिक उपचार की पूरी तैयारी रखी जानी चाहिये, ताकि यात्रा के बीच में यदि किसी बच्चे को अचानक कोई तकलीफ हो तो तुरन्त उसे प्राथमिक उपचार दिया जा सके। अभिभावकों की अनुमति से ही बच्चों को भ्रमण पर ले जाना चाहिये एवं माता पिता से बच्चे के सामान्य स्वास्थ्य की जानकारी अवश्य ले लेनी चाहिये, ताकि स्वास्थ्य संबंधी किसी परेशानी के कारण कोई बच्चा भ्रमण का आनंद लेते हुए ज्ञान अर्जित करने से वंचित न रह जाए। जिस स्थान पर भ्रमण के लिये जा रहे हैं, वहां के अधिकारियों को सूचित करके, जाने से पूर्व उनकी लिखित अनुमति अवश्य ली जानी चाहिये ताकि उस स्थान के सभी हिस्सों का भ्रमण कराकर बच्चों को उसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं अन्य महत्व की जानकारी दी जा सके। बच्चों के लिये अल्पाहार की व्यवस्था भी अवश्य करनी चाहिये, ताकि आवश्यकता से पहले ही बच्चों को आहार उपलब्ध कराया जा सके। विद्यालयों में सांस्कृतिक महत्व के उत्सवों का आयोजन बच्चों में अद्भुत ऊर्जा एवं उत्साह का संचार करता है। इन उत्सवों में कई प्रकार के कलात्मक कार्य बच्चे मिल–जुल कर करते हैं, बहुत सारे कौशल एक–दूसरे से सीखते हैं। इसी प्रकार किसी अन्य स्थान पर आयोजित

टिप्पणी

उत्सव में सहभागिता अथवा भ्रमण विद्यार्थियों को रोचक एवं मनोरंजक तरीके से अनायास ही कई नैतिक एवं सामाजिक गुणों के साथ–साथ कई प्रकार के जीवन कौशल सीख जाते हैं। प्रदर्शनियों में किसी खास विषय को लेकर चित्रों एवं मॉडल्स के माध्यम से प्रस्तुतीकरण किया जाता है, जिन्हें देखने से एवं समझने से बच्चों को सहज एवं आसान तरीके से खेल ही खेल में अपनी संस्कृति एवं इतिहास से संबंधित कई ज्ञान की बातें पता चलती हैं। इस प्रकार यह विधि बच्चों को बिना किसी दबाव के रोचक एवं मनोरंजनात्मक तरीके से उत्साहपूर्वक ज्ञान प्राप्त कराने में अत्यधिक कारगर सिद्ध हो सकती है।

(च) उत्तम गतिविधियों का दस्तावेजीकरण : विद्यालय में समय–समय पर सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करने से विद्यालयीन प्रक्रिया में रोचकता बनी रहती है एवं विद्यालय में बच्चे सामाजिक गुणों को भी सीखते रहते हैं। इन गतिविधियों का दस्तावेजीकरण भी एक रोचक एवं कलात्मक प्रक्रिया है। प्रत्येक गतिविधि का सम्पूर्ण विवरण अथवा प्रतिवेदन तैयार करना विद्यार्थियों के लिये एक रोचक गतिविधि होती है। विवरण अथवा प्रतिवेदन तैयार करना विद्यार्थियों के लिये एक रोचक गतिविधि होती है। विवरण इस प्रकार तैयार किया जाये कि कोई भी महत्वपूर्ण बात छूटनी नहीं चाहिए। इन विवरणों को तिथियों एवं फोटो के साथ प्रस्तुत करना एवं सत्र के पूर्ण होने पर पूरे वर्ष भर की गतिविधियों का कलात्मक ढंग से दस्तावेजीकरण विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिये एक अच्छी विधि हो सकती है।

(छ) कक्षा–कक्ष आधारित गतिविधियां : कक्षा–कक्ष में बच्चों के सीखने के लिये उचित वातावरण होना अति आवश्यक है। पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में तो सम्पूर्ण ज्ञान कला के साथ एकीकृत करके ही दिया जा सकता है। प्राथमिक से उच्चतर माध्यमिक तक की कक्षाओं में साप्ताहिक गतिविधियों की बच्चे बेबसी से प्रतीक्षा करते हैं। बाल सभा एवं चरित्र अभिनय आदि में बच्चों को आत्मप्रदर्शन एवं एक–दूसरे को जानने के लिये अच्छा अवसर प्राप्त होता है। कक्षा कक्ष में उत्साहपूर्ण वातावरण बनाये रखने के लिये ये विधियाँ अत्यन्त प्रभावी हैं–

(i) बाल–सभा : बाल–सभा में सभी बच्चों को आत्मप्रदर्शन का अवसर मिल सके, इसका ध्यान रखा जाना चाहिये। कुछ बच्चे तो स्वयं आगे बढ़कर अपनी कला को सबके सामने प्रदर्शित करने में झिझकते नहीं हैं, लेकिन कुछ बच्चे शार्मीले स्वभाव के होते हैं, अतः उन्हें प्रोत्साहित करने के लिये शिक्षकों को प्रयास करने चाहिये ताकि उन्हें भी अपनी खुशियां एवं परेशानियां अपने साथियों के साथ बांटने एवं अपने साथियों की परेशानियों को दूर करने में उनका सहयोग करने में आनन्द का अनुभव हो, सभी बच्चों को अपने व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के अवसर प्राप्त हो सकें एवं बच्चों में सामाजिकता के गुणों का विकास हो सके। बाल–सभा में गायन, वादन, नृत्य एवं भाषण आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिये एवं अच्छे प्रदर्शन के लिये उन्हें पुरस्कृत भी किया जाना चाहिये। इन सब गतिविधियों के दौरान शिक्षकों द्वारा निरन्तर बालक–

बालिकाओं की मॉनीटरिंग करते रहना चाहिये एवं समय–समय पर उन्हें मार्गदर्शन देते रहना चाहिये। किसी भी छात्र द्वारा कोई अप्रिय व्यवहार किये जाने पर तत्काल इस प्रकार उसे अवगत कराया जाये, जिससे उसे अपने निन्दनीय व्यवहार का बोध हो जाए एवं भविष्य में वह ऐसा न करे।

टिप्पणी

(ii) चरित्र अभिनय : कक्षा में अध्यापन करते समय विद्यार्थियों को सक्रिय बनाये रखने के लिये शिक्षक उनसे बीच–बीच में प्रश्न करते रहते हैं। चरित्र अभिनय भी अध्यापन में रोचकता लाने की एक बहुत अच्छी विधि है। किसी गद्य पाठ्य वस्तु का अध्यापन करते समय भिन्न पात्रों के वाक्यों का वाचन भिन्न–भिन्न छात्रों से करवाने पर अध्यापन एवं पाठ्यवस्तु में रोचकता आती है। भिन्न–भिन्न चरित्रों का अभिनय करने से उनके विषय में गहराई से समझने के अवसर निर्मित होते हैं। अनुकरण एवं अभिनय मानव के स्वाभाविक गुण होते हैं, अतः इनमें विद्यार्थियों को आनन्द का अनुभव होता है। सभी विद्यार्थियों को इस प्रकार के अवसर मिलें, इस बात का ध्यान रखना शिक्षक की जिम्मेदारी है।

यहां हमने पाठ्यसहगामी एवं पाठ्येतर गतिविधियों के विषय में जानकारी प्राप्त की। वास्तव में कला गतिविधियां एवं पाठ्य वस्तु एक–दूसरे की पूरक हैं। शिक्षा कला में एवं कला शिक्षा में समाहित है, निहित है। विद्यालयीन पाठ्यक्रम में कला शिक्षा के समावेश से पाठ्यवस्तु रोचक एवं मनोरंजक रूप में विद्यार्थियों के समक्ष आती है, जिससे वे बिना किसी दबाव के आनन्दपूर्वक शिक्षा प्राप्त करते हैं एवं सामाजिक गुणों को सहज ढंग से सीखते हैं। इस प्रकार सभी विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास स्वाभाविक तरीके से होता है। विद्यालयीन शिक्षा में कला को समाहित करने की कुछ विधियों एवं रणनीतियों के विषय में भी यहां चर्चा की गई है। छात्रों के विद्यालयीन कक्षा–स्तर के अनुरूप प्रोजेक्ट, केस–स्टडी, डॉक्यूमेन्ट्री, एलबम, शैक्षिक, भ्रमण, गतिविधियों का दस्तावेजीकरण, बाल–सभा चरित्र अभिनय आदि ऐसी रणनीतियां एवं विधियां हैं, जो छात्र को आत्मप्रदर्शन का अवसर देती हैं, उनकी मौलिकता को सबके सामने लाती हैं एवं सुधार के अवसर प्रदान करती हैं। शिक्षक की इन सब में बहुत अहम भूमिका होती है।

अपनी प्रगति जांचिए

5. करोना काल में लगातार कैसी पढ़ाई करने से विद्यार्थियों को कक्षा–कक्ष एवं विद्यालय का महत्व समझ आने लगा है?

   (क) पुस्तकीय (ख) ट्यूशन द्वारा

   (ग) सामूहिक (घ) ऑन लाइन

6. विद्यालय में समय–समय पर कैसी गतिविधियों का आयोजन करने से विद्यालयीन प्रक्रिया में रोचकता बनी रहती है?

   (क) सांस्कृतिक (ख) सामाजिक

   (ग) राजनीतिक (घ) धार्मिक

टिप्पणी

1.5 विद्यालयीन शिक्षा में दृश्यात्मक एवं प्रदर्शनकारी कलाओं (संगीत, ड्रामा आदि) का पाठ्यक्रम

कला शिक्षा को विद्यालयीन पाठ्यक्रम में समाहित करने के कई तरीके समय–समय पर शिक्षा विदों द्वारा सुझाए गए हैं। विद्यालयीन पाठ्यक्रम में किसी भी कला को एक विषय के रूप में निर्धारित करने पर उस कला विषय में किस विद्यालयीन स्तर पर, उस कला से संबंधित क्या–क्या ज्ञान दिया जाना प्रासंगिक होगा एवं उस आयु वर्ग की सीखने की क्षमता के अनुकूल होगा, यह उस कला के विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित किया जाना आवश्यक है। सामान्यतया विद्यालयीन वातावरण में उत्सवों आदि के अवसर पर सभी बच्चे मिलजुल कर बढ़–चढ़कर जोर–शोर से सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बड़े उत्साह से हिस्सा लेते हैं। अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार वे बिना किसी औपचारिक शिक्षा के भिन्न–भिन्न कलाओं का प्रदर्शन करते हैं एवं एक–दूसरे से सीखते रहते हैं। कला शिक्षा जब एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम का हिस्सा बनती है, तो विभिन्न स्तरों पर उस आयुवर्ग के विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम निर्धारण करना आवश्यक हो जाता है। दृश्यात्मक एवं प्रदर्शनकारी कलाओं के क्षेत्र में आज के समय में कई नयी तकनीकें जुड़ चुकी हैं। कम्प्यूटर शिक्षा के कारण शिक्षा जगत में आई क्रांति से कला शिक्षा भी अछूती नहीं है। आज संगीत केवल शास्त्रीय संगीत तक सीमित नहीं है, ना ही नृत्य शास्त्रीय नृत्य तक सीमित है। छोटे–छोटे बच्चे आज मोबाइल का बटन दबाकर संगीत एवं नृत्य की भिन्न–भिन्न विद्याओं का आनन्द लेते हैं, टी.वी. पर देखकर डायलॉग बोलना, डाँस करना, गीता गाना सीख जाते हैं। दृश्यात्मक कलाओं में भी चित्रकला, मूर्तिकला आदि की तकनीकों में बहुत प्रगति हुई है। अतः दृश्यात्मक एवं प्रदर्शनकारी कलाओं के सम्बन्ध में ऐसी कौन–सी जानकारियां अथवा ज्ञान है, जो टी.वी. मोबाइल यू ट्यूब आदि से बच्चों को नहीं मिल पाता, जो उन्हें उस कला को सीखने के लिए आवश्यक है, यह पाठयक्रम निर्धारण करते समय ध्यान रखा जाना चाहिये, साथ ही आज के समय के अनुरूप कौन–सा नवाचार बच्चों के लिये किसी कला को कुशलतापूर्वक सीखने में सहायक हो सकता है यह भी दृष्टिगत रखना आवश्यक है। समयानुसार एवं उस आयु वर्ग की क्षमताओं को दृष्टिगत रखते हुए किसी भी प्रदर्शनकारी कला अथवा दृश्यात्मक कला के लिये पाठ्यक्रम का निर्धारण विद्यालयीन शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिये एक आवश्यक प्रक्रिया है। यहां हम संगीत, नृत्य एवं नाट्य आदि कलाओं के लिये विभिन्न विद्यालयीन स्तरों पर अपेक्षित पाठ्यक्रम के विषय में चर्चा करेंगे।

1.5.1 उद्देश्य

विद्यालयीन शिक्षा में दृश्यात्मक एवं प्रदर्शनकारी कलाओं को विषय के रूप में समाहित करने के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

- विद्यार्थियों को आनन्दपूर्वक सीखने का वातावरण प्रदान करना।
- विद्यार्थियों को स्वाभाविक रूप से आत्माभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना।

टिप्पणी

- विद्यालय में दबावमुक्त वातावरण में शिक्षा प्राप्ति का माहौल तैयार करना।
- विद्यार्थियों में एकाग्रता, दृढ़ता एवं उदारता जैसे गुण विकसित करना।
- विद्यार्थियों में कला–कौशल विकसित करना।
- सामाजिक सहयोग की भावना उत्पन्न करना।
- कला की बारीकियों से बच्चों को अवगत कराना।
- अपनी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति बच्चों में आदर का भाव उत्पन्न करना।
- कला की शक्ति एवं महत्व का बच्चों को अनुभव कराना।
- संगीत एवं नृत्य जैसी कलाओं के माध्यम से अलौकिक ईश्वरीय शक्ति से जुड़ने का अनुभव कराना।
- स्वतंत्र अभिव्यक्ति एवं सृजनात्मकता के विकास को प्रोत्साहन देना।
- कला के मूल तत्वों एवं सिद्धातों का ज्ञान प्राप्त कराना।
- सौन्दर्य बोध की समझ विकसित करना।
- विभिन्न कलाओं के प्रति सम्मान का भाव विकसित करना।
- देश की सांस्कृतिक विविधताओं तथा पारंपरिक कलाओं से परिचित कराना।
- संवेदनशीलता एवं सहानुभूति के भाव विकसित करना।
- आत्म विश्लेषण करने व स्वयं की कमियों को स्वीकार करने व स्वयं में सुधार करने का साहस विकसित करना।
- अंग संचालन एवं गायन आदि से शारीरिक स्वास्थ्य की समझ का विकास।
- नवाचार एवं निजी शैली का सृजन करने की क्षमता विकसित करना।
- ताल, स्वर, लय आदि का ज्ञान प्राप्त कराना।
- नृत्य, गायन, वादन आदि की विभिन्न शैलियों का ज्ञान विकसित करना।
- कला को व्यवसाय के रूप में अपनाकर जीविकोपार्जन का साधन बनाना।
- विभिन्न आयुवर्ग के बालक–बालिकाओं के भीतर की ऊर्जा को सृजनात्मकता की ओर प्रेरित करके, समाजोपयोगी एवं राष्ट्र कल्याणकारी वातावरण निर्मित करना।

1.5.2 विषय–वस्तु

कला शिक्षा के पाठ्यक्रम निर्धारण में भी अन्य विषयों की भांति बच्चों की आयु के स्तर को ध्यान में रखते हुए विशेषज्ञों द्वारा पाठ्यसामग्री निर्धारित की जाती है।

(क) पूर्व प्राथमिक स्तर : जैसा कि हमने पूर्व की इकाइयों में भी चर्चा की थी कि पूर्व प्राथमिक स्तर वह स्तर है, जब बच्चा पहली बार अपने परिवार से बाहर निकलकर अन्य लोगों के साथ कुछ समय बिताता है। इस स्तर पर कई बच्चे बहुत ही असहज अनुभव करते हैं और रोने लगते हैं। परिवार का कोई सदस्य

टिप्पणी

बच्चे को रोता हुआ विद्यालय में छोड़ कर चला जाता है और कुछ देर बाद वे सामान्य हो जाते हैं। ऐसे में मनोरंजक कलाएं व खिलौने आदि उन्हें लुभाने में महती भूमिका निभाते हैं। इस स्तर पर बच्चों को विद्यालय में बिल्कुल परिवार जैसा स्नेहमय वातावरण देना पहली आवश्यकता होती है, ताकि विद्यालयीन वातावरण में वे सहज रूप से कुछ सीख सकें व अपनी स्वाभाविक भावनाओं को अभिव्यक्त कर सकें। इस स्तर पर बच्चे वही क्रियाएं करते हैं, जिनमें उन्हें आनंद मिलता है। घर से बाहर निकलने पर विद्यालय में अन्य बच्चों के संपर्क में आने पर, उन्हें तरह–तरह की नई वस्तुएं दिखाई देती हैं, जिन्हें जानने की जिज्ञासा उनके भीतर रहती है। उन्हें रेखाएं खीचने में भी आनन्द मिल सकता है और बालू से घर बनाने में भी, मिट्टी गीली करने में भी उन्हें मजा मिल सकता है और किसी की नकल करने में भी। इस स्तर पर बच्चों को वही करने देना चाहिये, जिसमें उन्हें आनन्द आए। वे चाहे जो भी कार्य करें, गीत गाएं, डाँस करें, डायलाग बोलें, बालू या मिट्टी से आकृतियां बनाएं या फिर कागज पर रेखाएं खीचें। ये सभी साधन, रंगीन पेन्सिल कलर आदि उन्हें उनकी अभिव्यक्ति के लिये उपलब्ध कराने चाहिये और कोई भी क्रिया करने पर प्रोत्साहित करते रहने के साथ–साथ मार्गदर्शन देते रहना चाहिये, ताकि उनकी असीम ऊर्जा एवं जिज्ञासा, सृजनात्मकता एवं कल्पनाशीलता के रूप में व्यक्त हो सके।

(ख) प्राथमिक स्तर : यह स्तर बालक–बालिकाओं की नींव होता है। इसी स्तर से बच्चों की आदतें बनाना शुरू होती हैं। इस स्तर पर बच्चों में स्वस्थ मानसिकता एवं सृजनात्मकता के बीज बोने से बच्चों की सोच समाजकल्याणकारी एवं विश्वकल्याणकारी हो सकेगी। कक्षा 1 एवं 2 में तो बच्चे पूर्व प्राथमिक स्तर की तरह ही अबोध रहते हैं, उन्हें स्नेहमय व्यवहार से ही विभिन्न ज्ञान की बातें कला का आश्रय लेकर समझाई या सिखाई जा सकती हैं। पहली कक्षा के बच्चे नया–नया लिखना सीखते हैं। बच्चों के लिये हिन्दी या अंग्रेजी के अक्षर लिखना या गणित के अंक लिखना एक नीरस प्रक्रिया होती है। शिक्षक के लिये इन बच्चों को लिखना सिखाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है, जिसके लिये वह विभिन्न प्रकार की रणनीतियां बनाता है, इस कार्य में विभिन्न कलाएं शिक्षक की बहुत मदद करती हैं। लेखन कौशल विकसित करने में चित्रकला की अहम भूमिका होती है। रेखा खींचना, गोले बनाना, बिन्दु बनाना, बिन्दुओं को रेखा से मिलाना आदि लेखन कार्य के लिये महत्वपूर्ण कौशल हैं, जो चित्रकला के माध्यम से विकसित किये जा सकते हैं। इस स्तर पर बच्चों में लेखन क्षमता विकसित करने में चित्रकला एक अहम भूमिका अदा कर सकती है। बच्चों को इस स्तर पर स्वतंत्र रूप से रेखाएं खींचने एवं गोला आदि विभिन्न आकृतियां बनाने के लिये साधन उपलब्ध कराये जाने चाहिये। बच्चे रंगों से विशेष रूप से आकर्षित होते हैं, अतः उनमें चित्रकला के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिये रंग बिरंगी (कलर) पेंसिलें उपलब्ध करानी चाहिये, ताकि वे आनन्दपूर्वक सीखने में लीन हो सकें। रेखा, बिन्दु आदि केवल कागज एवं पेन्सिल से ही नहीं, बल्कि अन्य प्रकार से भी बनाकर बच्चे आनन्दित होते हैं। बालू को किसी पात्र में

टिप्पणी

बिछाकर उस पर उंगली से या पैन के आकार की डंडी से रेखाएं एवं विभिन्न आकृतियां बनाने का अभ्यास किया जा सकता है। कोई भी अक्षर बनाने में निपुण हो जाने पर, मिट्टी गीली करके उस अक्षर का आकार बनाने का अभ्यास कराया जा सकता है। इस प्रकार खेल–खेल में पहली–दूसरी के बच्चों को लेखन जैसे कौशल में पारंगत किया जा सकता है, पर इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक की मॉनीटरिंग, समय–समय पर परिवार वालों की तरह बच्चों को स्नेहमय मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन बहुत आवश्यक है।

भाषा, गणित या विज्ञान के शब्दों, पहाड़ों एवं तथ्यों को कण्ठस्थ कराने में संगीत की महती भूमिका हो सकती है। पहाड़ों का संगीतमय वाचन पूरे कक्षा कक्ष में गुंजायमान होकर सभी बच्चों में उत्साह, ऊर्जा और आनन्द का संचार कर देता है एवं उन्हें पहाड़े कण्ठस्थ करने में मदद करता है साथ ही सीखने के लिये स्वस्थ वातावरण निर्मित करता है। इसी प्रकार भाषा के पद्यांश संगीत के साथ समन्वित होकर बच्चों को लुभाते हैं, आनन्दित करते हैं, कण्ठस्थ होने के साथ–साथ उनके हृदय में बस जाते हैं। विज्ञान के कठिन अंशों को भी संगीत में पिरोकर आसानी से कण्ठस्थ किया जा सकता है। इस स्तर पर दिया गया ज्ञान बच्चों के आगे के जीवन का आधार होता है। अतः संगीत को अन्य विषयों के साथ सम्मिलित करने के अतिरिक्त राष्ट्रीय उत्सवों वार्षिक उत्सवों, बाल–सभाओं एवं समय–समय पर आयोजित प्रतियोगिताओं के अवसर पर बच्चों को विभिन्न कलाओं के प्रदर्शन के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। इस स्तर पर उनसे बहुत अच्छे या परिपक्व प्रदर्शन की अपेक्षा नहीं की जानी चाहिये। वे जैसा भी प्रदर्शन करें उसकी प्रशंसा करना चाहिये, उन्हें प्रोत्साहित करते रहना चाहिये एवं उनमें निखार लाने के लिये उन्हें मार्गदर्शन देते रहना चाहिए। कागज को मोड़कर, काटकर तरह–तरह की आकृतियां बनाना जैसे, गेंद, नाव, हवाई जहाज, मेंढक या फूलों की आकृति आदि भी छोटे बच्चों को बहुत लुभाता है। इन आकृतियों को बनाने से उनमें आत्मविश्वास एवं आपसी सहयोग जैसे गुणों का विकास होता है। कुछ बच्चे नृत्य अथवा नाट्य में रुचि रखते हैं। टी.वी. मोबाइल आदि में देखकर मटकना या डायलॉग बोलना उन्हें अच्छा लगता है। शिक्षक को चाहिये कि ऐसे बच्चों को चिह्नित करें, उनकी कला को प्रोत्साहित करें एवं उसमें निखार लाने में सहयोग करें। इस प्रकार छोटी कक्षाओं में कला शिक्षा की विषय–वस्तु बच्चों की रुचि एवं प्रतिभा के अनुसार होनी चाहिये एवं कला की स्वतंत्र अभिव्यक्ति को ही मान्य किया जाना चाहिये।

तीसरी कक्षा के बच्चे लिखने में पारंगत हो चुके होते हैं एवं बहुत तेजी से भाषा आदि सीखते हैं। इस स्तर पर उनकी रुचि एवं कौशल की पहचान होने लगती है। दृश्यात्मक कलाओं में प्राथमिक स्तर पर पक्षियों के चित्र बनाना, रोजमर्रा में उपयोग में आने वाली वस्तुओं, बर्तनों, सब्जियों आदि के चित्र बनाना उनके स्तर के अनुकूल होगा, उन्हें आनन्दित करेगा रेखाओं में लय आदि की समझ पांचवी के बच्चे में विकसित हो जाती है, फिर भी बहुत परिपक्व कला का प्रदर्शन इस स्तर पर भी अपेक्षित नहीं है। वाटर कलर का प्रयोग बच्चों को लुभाता है व उनमें

टिप्पणी

कुशलता लाता है। छोटे–छोटे दिये बनाना, मिट्टी से घर बनाना, मूर्ति बनाना इस स्तर पर सिखाया जा सकता है।

प्रदर्शनकारी कलाओं में संगीत के स्वरों का ज्ञान, वाद्य यंत्रों का ज्ञान एवं एक से दो रागों की जानकारी दी जा सकती है। नृत्य में विभिन्न मुख मुद्राओं की जानकारी विभिन्न नृत्यों में से, नृत्य के एक से दो प्रकारों की जानकारी एवं हस्तपाद संचालन के प्रारम्भिक स्टेप्स का अभ्यास कराया जाना चाहिये, जिसमें बच्चों को सीखने में आनन्द का अनुभव हो।

(ग) उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर : उच्च प्राथमिक स्तर पर बच्चे सीखने की सर्वाधिक उपयुक्त दशा में रहते हैं, भरपूर ऊर्जा एवं विद्यालयीन ज्ञान के प्रति श्रद्धा से युक्त होते हैं। इस स्तर पर दिया गया ज्ञान आजीवन उनके स्मरण में रहता है। उच्च प्राथमिक स्तर तक आते–जाते बच्चों की रुचि विशेष रूप से किस कला में है, यह स्पष्ट होने लगता है। ऐसे में विशेष रूप से उस कला में उसे शिक्षित किया जाना उचित होगा। दृश्यात्मक कलाओं में उच्च प्राथमिक स्तर पर आकर बच्चों को किसी भी विषय पर चित्र के द्वारा अपनी विचाराभिव्यक्ति करने के अवसर दिये जाने चाहिये। मूर्तिकला में भी किसी विषय पर मूर्ति के अंगों एवं मुखाकृतियों के माध्यम से विचार अभिव्यक्त करने का कौशल सिखाया जाना चाहिये। कठपुतलियों के खेल में भी किसी विषय पर अपने विचार रखना भी इस स्तर के बच्चों के लिये उपयुक्त है। इन सभी कलाओं में एक ही झलक में बड़े–बड़े ज्वलंत मुद्दों के विषय में प्रस्तुतकर्ता के विचार तत्काल समझ में आ जाते हैं। कार्टन आदि बनाना जन्मदिवस अथवा त्योहारों के ग्रीटिंग्स बनाना भी इस स्तर के बच्चों के पाठ्यक्रम में रखा जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त इन कलाओं के क्षेत्र में पूर्व में हुए कार्य से बच्चों को अवगत कराने के लिये शैक्षिक भ्रमण का प्रावधान पाठ्यक्रम में अवश्य होना चाहिये। इस स्तर पर विद्यार्थियों को प्राथमिक स्तर पर दिये गये संगीत एवं नृत्य के ज्ञान के पुनरावर्तन के साथ–साथ अलंकारों एवं नृत्य के कुछ और प्रकारों का परिचय दिया जाना चाहिये। अभ्यास को महत्व देना चाहिए। माध्यमिक स्तर के बालक–बालिकाएं किशोरावस्था में होते हैं एवं कला के प्रति उनकी बहुत रुचि होती है। इस स्तर पर उनमें कला की अच्छी समझ विकसित हो जाती है। अब वे कला की बारीकियों को समझने लगते हैं और अपनी पसंद की कला के माध्यम से आत्माभिव्यक्ति के प्रयोग करने लगते हैं। नई–नई तकनीक एवं विधियां उन्हें आकर्षित करती हैं।

संगीत के स्वर, अलंकार, अलग–अलग घरानों का प्रारम्भिक परिचय, भिन्न–भिन्न रागों का ज्ञान, सुप्रसिद्ध संगीतकारों का परिचय आदि इस स्तर पर संगीत की विषयवस्तु हो सकती है।

नृत्य की विभिन्न शैलियों की जानकारी महान् नृत्य गुरुओं का जीवन परिचय, विभिन्न नृत्य घरानों का परिचय, पग संचालन, मुख मुद्रा एवं नृत्यकला का इतिहास आदि माध्यमिक स्तर के विद्यालयीन पाठ्यक्रम में रखा जा सकता है।

टिप्पणी

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यालयीन शिक्षा में, कला शिक्षा को अन्य विषयों की भांति स्थान दिया गया है। जो छात्र–छात्राएं कला शिक्षा को अपना व्यवसाय बनाने में रुचि रखते हैं, वे यहीं से अपनी तैयारी शुरु पर देते हैं। माध्यमिक स्तर पर प्राप्त ज्ञान को पुष्ट करते हुए इस स्तर पर किसी भी कला से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी को पाठ्यक्रम के अन्तर्गत निर्धारित किया जाना चाहिये।

दृश्यात्मक कलाओं में इस स्तर पर बालक–बालिकाएं चित्रकला में विशेष रुचि लेते हैं। चित्रकला के अन्तर्गत व्यक्ति चित्र, चित्र संयोजन एवं दृश्य चित्रण को पाठ्यक्रम में रखा जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त छपाई के विभिन्न प्रकार तथा कोलाज बनाने की विधि भी इस स्तर के पाठ्यक्रम के लिये उपयुक्त है। कागज से पोस्टर एवं सजावट की सामग्री तैयार करना भी इस आयुवर्ग के विद्यार्थी कुशलतापूर्वक सीख सकते हैं। त्रिआयामी दृश्यात्मक कलाओं के अंतर्गत मिट्टी के दीये, फूलदान एवं खिलौने आदि बनाने का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर दृश्यात्मक कला का चयन करने पर, चयन की गई कला से संबंधित संपूर्ण ज्ञान दिया जाना चाहिए। चित्रकला अथवा मूर्तिकला का अर्थ, उत्पत्ति, आवश्यकता, महत्व एवं इतिहास आदि आवश्यक रूप से विद्यार्थियों को पढ़ाया जाना चाहिये। चित्रकला में व्यक्ति चित्र, चित्र संयोजन एवं दृश्य चित्रण तथा इनके अन्तर्गत आने वाले विभिन्न कौशलों का पाठ्यक्रम में होना आवश्यक है। इस स्तर पर विद्यार्थियों को चित्रकला की अदभुत शक्ति को विभिन्न आधुनिक तकनीकों के साथ जोड़कर नवाचार के लिये प्रेरित किया जाना चाहिये। कला शिक्षा वैसे तो पूरी तरह से प्रायोगिक कौशल पर आधारित है लेकिन इस स्तर पर विद्यार्थियों को इसका सैद्धांतिक ज्ञान भी अवश्य दिया जाना चाहिए। कार्टून के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्त करना एवं कोलाज बना कर सौन्दर्य का प्रदर्शन करने की कलाएं भी चित्रकला के पाठ्यक्रम में रखी जा सकती हैं।

चित्रकला की तरह छापाकला (Printing) भी अति प्राचीन दृश्यात्मक कला है एवं इस क्षेत्र में व्यवसाय की संभावनाएं अत्यधिक हैं क्योंकि आज के युग में छापाकला के बिना जीवन की कल्पना करना असम्भव है। छापाकला (Printing) के पाठ्यक्रम में छपाई का अर्थ, उद्‌गम, इतिहास, आधुनिक काल में छपाई कला की स्थिति, छापाकला के विभिन्न प्रकार आदि होना चाहिये। इसके अतिरिक्त छपाई के लिये आवश्यक सामग्री का ज्ञान भी विद्यार्थियों को अवश्य दिया जाना चाहिये।

मूर्तिकला भी व्यवसाय के रूप में विद्यार्थियों को आकर्षित करती है। मूर्तिकला के अन्तर्गत विभिन्न प्रतिमाओं के अतिरिक्त खिलौने, बर्तन, दीये, कुल्हड़, हवनपात्र आदि बनाना भी सिखाया जाना चाहिये। किसी भी प्रतिमा को बनाते समय विद्यार्थी को उसके वास्तविक प्रतिरूप की पूरी जानकारी होने चाहिये। प्रायोगिक के साथ–साथ सैद्धांतिक ज्ञान भी दिया जाना चाहिये।

टिप्पणी

यदि कोई विद्यार्थी उच्चतर माध्यमिक स्तर पर संगीत विषय का चयन करता है, तो उसे संगीत का अर्थ एवं उत्पत्ति से लेकर संगति कला को आवश्यकता एवं महत्व, भारतीय संगीत का इतिहास तथा संगीत से संबंधित विविध तत्वों ध्वनि, स्वर सप्तक, अलंकार, लय, ताल आदि की जानकारी देने के साथ–साथ विभिन्न वाद्य यंत्रों के बारे में भी जानकारी दिया जाना आवश्यक है। प्रायोगिक के साथ–साथ सैद्धांतिक ज्ञान भी विद्यार्थियों को संगीत की शिक्षा देने के लिये अत्यंत आवश्यक है। संगीत के विभिन्न रागों, विभिन्न घरानों एवं प्रसिद्ध संगीतकारों के जीवन परिचय के विषय में विद्यार्थियों को अवश्य जानना चाहिये।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर नृत्य कला का चयन करने वाले विद्यार्थियों को नृत्य का उद्‌भव एवं विकास, भारतीय नृत्य का इतिहास विभिन्न प्रकार के भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं उनकी विशेषताएं, उनके साथ बजाए जाने वाले वाद्य यंत्र विभिन्न प्रान्तीय एवं लोकनृत्यों का ज्ञान, नृत्य के क्षेत्र में प्रसिद्ध गुरुओं का जीवन परिचय आदि पढ़ाया जाना चाहिये।

1.5.3 विधियां

बच्चों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए निम्नलिखित विधियों के विषय में विवेचन किया जा रहा है।

1. दृश्यात्मक कलाएं

(क) पूर्व प्राथमिक स्तर : जैसा कि हमने पूर्व में भी कहा है कि पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चे पहली बार अपने घर से बाहर निकलकर कुछ समय परिवार से अलग रहकर व्यतीत करते हैं अतः कुछ बच्चे बहुत ही दुःखी एवं असहज जो जाते हैं, ऐसे में उन्हें कुछ भी सिखाना संभव नहीं होता है। ऐसे में सबसे पहले उन्हें सामान्य एवं सहज स्थिति में लाना आवश्यक हो जाता है। अतः कक्षा में स्नेहमय वातावरण तैयार करके उन्हें अपनी ही विधि के साथ अपने भावों की अभिव्यक्ति करने में शिक्षक को मदद करनी चाहिये। उन्हें प्रोत्साहित करते रहना चाहिये एवं उन्हें आनन्दित करने का हर संभव प्रयास करना चाहिये। बच्चे जैसी भी रेखाएं खींचें, जैसे भी गीली मिट्टी में हाथ डाल कर सतह पर छापें उन्हें करने देना चाहिये, क्योंकि छोटे बच्चे वही क्रियाएं करते हैं जिनमें उन्हें आनन्द मिलता है, उन्हें डांटने से सीखने का माहौल समाप्त हो सकता है।

(ख) प्राथमिक स्तर : इस स्तर पर प्रशंसा अद्‌भुत चमत्कार का कार्य करती है। इस स्तर के बच्चे नये–नये क्रियाकलापों से बहुत आकर्षित होते हैं। कागज को मोड़ कर हवाई जहाज बनाने, नाव बनाने, फूल बनाने आदि में उन्हें आनन्द आता है। ऐसे में उनकी सीखने की क्षमता के अनुसार विभिन्न बच्चों के लिये शिक्षक को भिन्न–भिन्न विधि का सहारा लेना पड़ता है। बच्चों में व्यक्तिगत विभिन्नताएं होती हैं। सभी बच्चों की सीखने की क्षमता अलग–अलग होती है। शिक्षक की जिम्मेदारी सभी बच्चों को साथ में लेकर चलने की होती है। ऐसे में शिक्षक को

अपनी विधियां विकसित करके सभी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने के प्रयास करने चाहिये।

टिप्पणी

(ग) **उच्च प्राथमिक स्तर** : इस स्तर पर आकर बच्चों की रुचि एवं कौशल सामने आने लगते हैं। अन्य विषयों का शिक्षण करते समय शिक्षक समझाते–समझाते, बीच–बीच में प्रश्न करता रहता है, ताकि बच्चे सक्रिय रहें, उनका ध्यान विषय से न हटे लेकिन कला शिक्षा में निखार लाने के लिये शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की क्षमता का आकलन करते हुए मार्गदर्शन देना होता है। प्रत्येक बच्चे को व्यक्तिगत रूप से बताना, उसे प्रोत्साहन देना, शिक्षक की रणनीति का हिस्सा होना चाहिये। सामान्य रूप से बोर्ड पर कोई चित्र बनाकर दिखाने के बाद, बच्चों को स्वयं उस विधि से चित्र बनाने हेतु निर्देशित किया जाना चाहिये। रेखाओं के बारे में अथवा चित्र से संबंधित अन्य सावधानियों के बारे में सामूहिक रूप से बताना और फिर बच्चों को चित्र बनाने के लिए स्वतंत्र छोड़ देना पहली सीढ़ी है। मूर्ति कला आदि में भी मिट्टी तैयार करना आदि आधारभूत तैयारियों के बारे में सामूहिक रूप से बालक–बालिकाओं को स्पष्ट करने के लिए छोटे–छोटे समूहों में कार्य आवंटित किया जाना चाहिये व शिक्षक को मानीटरिंग करते हुए समय–समय पर बच्चों को सही मार्गदर्शन देते रहना चाहिये।

(घ) **माध्यमिक स्तर** : इस स्तर पर बच्चे थोड़े परिपक्व हो जाते हैं। जिस कला को वे प्रारम्भ से सीखते आ रहे हैं उसमें कौशल प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन स्तर के अनुसार उनकी विषय–वस्तु भी विस्तृत हो जाती है, अतः कला की बारीकियों को समझाने के लिये शिक्षक को निरन्तर उनकी कला का अवलोकन करते रहना चाहिये एवं उन्हें सही सुझाव देते रहना चाहिये। अधिक से अधिक अभ्यास से कला में निखार आता है अतः प्रायोगिक एवं सत्रीय कार्य देना और उसका मूल्यांकन करना अत्यन्त आवश्यक होता है। इस स्तर के बालक–बालिकाओं में नवाचार का उत्साह भी होना आवश्यक है, इसके लिये बच्चों को शैक्षिक भ्रमण पर भी ले जाना चाहिये, ताकि अन्य स्थानों की कला से प्रेरित होकर, उसके कुछ तत्वों को ग्रहण करके वे नया सृजन कर सकें। इन्टरनेट के माध्यम से भी बच्चों को कला की बारीकियां समझाई जानी चाहिये।

(ड.) **उच्चतर माध्यमिक स्तर** : इस स्तर पर आकर विद्यार्थी अपनी जीविका के लिये फिक्र करने लगते हैं, उस दिशा में सोचने लगते हैं। इस स्तर पर किसी भी कला का विषय के रूप में चयन करने का अर्थ होता है, उस कला को व्यवसाय के रूप में अपनाना। इस स्तर पर विद्यार्थियों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति की समझ विकसित हो जाती है। शिक्षक को उनके मित्र की तरह मार्गदर्शन करने की आवश्यकता होती है। चित्रकला, मूर्तिकला, कठपुतली, कार्टून बनाना, कोलाज बनाना, छापाकला (Printing) आदि ऐसी कलाएं हैं, जिनमें व्यवसाय की अपार संभावनाएं हैं। इनका अभ्यास करते–करते विद्यार्थियों और शिक्षकों के भीतर नई–नई विधियों का सृजन हो सकता है, जिससे उस कला के क्षेत्र में क्रांति लाई जा सकती है। शिक्षक को चाहिये कि वह बालक–बालिकाओं को

टिप्पणी

निरन्तर नवाचार एवं सृजनात्मकता के लिये प्रेरित करता रहे, स्वयं भी विद्यार्थी की तरह उनके साथ आनन्दित होकर जिस भी विधि से विद्यार्थियों के कला कौशल में निखार आ सकता है, उस विधि का प्रयोग करे। उन्हें भ्रमण आदि पर भी लेकर जाये ताकि उनके ज्ञान में वृद्धि हो। उनकी ऊर्जा को सकारात्मकता, सृजनात्मकता के साथ समन्वित करते हुए उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु हर संभव प्रयास करे। कार्य का मूल्यांकन एवं मूल सुधार इस स्तर पर बहुत महत्वपूर्ण है।

2. प्रदर्शनकारी कलाएं (संगीत एवं नृत्य)

(क) पूर्व प्राथमिक स्तर : संगीत एवं नृत्य ऐसी कलाएं हैं, जो छोटे बच्चों को बहुत आनान्दित करती हैं। इन बच्चों को नये–नये तरीकों से अभिनय के साथ इन कलाओं का अभ्यास कराया जाना चाहिये। सरल एवं आनन्दपूर्ण विधि से इन बच्चों को कठिन शब्दों का संगीतमय उच्चारण एवं नृत्य संबंधी मुद्राओं तथा पग संचालन आदि का अभ्यास कराया जा सकता है, सिखाया जा सकता है।

(ख) प्राथमिक स्तर : इस स्तर के बच्चे ऊर्जा एवं उत्साह से भरपूर होते हैं, अभ्यास एवं त्रुटि निवारण के द्वारा इन्हें संगीत व नृत्य कला की बारीकियों से अवगत कराना चाहिये। प्रयोगिक विधियों पर ही अधिक जोर दिया जाना चाहिये। स्वयं करके सीखने में बच्चे आनन्दित होते हैं। उन पर किसी प्रकार का दबाव नहीं डालना चाहिये। आनन्द पूर्वक सीखने का वातावरण तैयार किया जाना चाहिये।

(ग) उच्च प्राथमिक स्तर : इस स्तर पर यह स्पष्ट होने लगता है कि किसी बालक या बालिका की रुचि किस विशेष कला में है। इस स्तर पर विद्यार्थियों को व्याख्यान के द्वारा भी संगीत और नृत्य की बारीकियों से अवगत कराया जा सकता है। शिक्षक को सभी विद्यार्थियों से व्यक्तिगत रूप से जुड़कर उनकी त्रुटियों के बारे में अवगत कराना चाहिये एवं उन्हें अभ्यास एवं नये सृजन के लिये प्रेरित करना चाहिये क्योंकि विद्यार्थियों के बीच व्यक्तिगत विभिन्नताएं होती हैं और शिक्षक को सबके लिये अलग–अलग विधि अपनानी पड़ती है।

(घ) माध्यमिक स्तर : इस स्तर पर व्याख्यान विधि कारगर होती है। नृत्य एवं संगीत की प्रतियोगिताएं आयोजित करना, कार्यशालाएं आयोजित करना, प्रसिद्ध गुरुओं के कार्यक्रम आयोजित करना, उनके पास लेकर जाना, अन्य संगीत शालाओं या नृत्यशालाओं में भ्रमण के लिये ले जाना, विद्यार्थियों के उत्साह एवं ज्ञान में वृद्धि करता है। अभ्यास का समय नियत हो एवं उस समय शिक्षक अवश्य उपस्थित रहे।

(ड.) उच्चतर माध्यमिक स्तर : इस स्तर पर व्याख्यान विधि से विद्यार्थियों को कोई भी बात आसानी से समझाई जा सकती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों की मानीटरिंग करना, फीडबैक देना, विद्यार्थियों की बात सुनना, उनका अवलोकन करना, समूह में काम करते समय विद्यार्थियों की चर्चाएं सुनना, उनकी भाव–भंगिमाओं का अवलोकन करना, कोई भी कमी दिखने पर, त्रुटिसुधार के लिये सकारात्मक

भाषा और प्रशंसा का उपयोग करना, विद्यार्थियों के अधिगम स्तर को ध्यान में रखते हुए समूहों का संगठन, समूह में कार्य को प्रबंधित करने के लिये दिनचर्या और नियमों का निर्धारण आदि किसी भी कला को सीखने में विद्यार्थी के लिये अच्छा वातावरण तैयार करते हैं। शिक्षक के द्वारा समय–समय पर विद्यार्थियों की प्रगति एवं प्रदर्शन का आकलन अवश्य करते रहना चाहिये। विद्यार्थियों से बातचीत करते रहना चाहिये, तदनुसार आगे की रणनीति बनाई जानी चाहिये।

टिप्पणी

1.5.4 समालोचनात्मक अध्ययन के रूप में नाटक

(क) पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर : जैसा कि हम सब जानते हैं, अनुकरण मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। छोटे बच्चे अपने आसपास के वातावरण में होने वाले व्यवहार का अनुकरण करते हैं। नाटक का एक पक्ष जिसे बोलचाल की भाषा में नकल कहा जा सकता है, छोटे बच्चों की जीवनचर्या का हिस्सा होता है। छोटे शिशु जो बोलना भी नहीं सीखे हैं, उनके सामने यदि हम ताली बजाते हैं, तो हमे देखकर वे भी ताली बजाने लगते हैं सीखते हैं, पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर के बच्चों को नाटक बहुत आनन्दित करने के साथ–साथ प्रभावित भी करते हैं। वे पात्रों के अभिनय में लीन हो जाते हैं, यहां तक कि यदि कोई पात्र दुखी होने का अभिनय करता हैं तो उनकी आंखों से आंसू निकल आते हैं और अपने प्रिय नायक के वीरतापूर्ण कार्यों का अभिनय देखकर वे खिलखिलाकर हंसने लगते हैं, प्रसन्न होते हैं। ये है नाटक की शक्ति जो सीधे देखने वाले के अंतर्मन पर प्रभाव डालती है। यह प्रभाव तत्काल समाप्त नहीं हो जाता, बल्कि लम्बे समय तक बना रहता है। नाटक समाप्त होने के बाद बच्चे अपने साथियों के साथ उस पर चर्चा करते हैं, जिन साथियों ने नाटक नहीं देखा है उन्हें नाटक का कथानक सुनाते हैं, पात्रों के अभिनय की प्रशंसा या निन्दा के रूप में अपनी क्षमतानुसार अपना अभिमत रखते हैं। इस प्रकार नाटक के माध्यम से उनके भीतर एक समालोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है।

(ख) उच्च प्राथमिक स्तर : इस स्तर पर बच्चों को नाटक बहुत लुभाता है, उन्हें आनन्दित करने के साथ–साथ शिक्षित करता है। नाट्क में निहित संदेश को ये बच्चे तेजी से ग्रहण करने में सक्षम होते हैं। नाटक देखने के बाद उनके अंतःकरण पर लंबे समय तक उसका प्रभाव रहता है। कथानक को वे अच्छी तरह समझकर अपने साथियों को सुनाने में भी आनन्द का अनुभव करते हैं। विभिन्न पात्रों के चरित्र के बारे में अपना अभिमत देते हैं, जिससे उनके भीतर समालोचनात्मक क्षमता विकसित होती है। शिक्षक को चाहिये कि बच्चों को अच्छे नाटक दिखाने ले जाएं, उनसे पात्रों के अभिनय कराएं, पढ़ाते समय उनसे भिन्न–भिन्न पात्रों के संवाद का वाचन कराएं और संपूर्ण नाटक के विभिन्न पक्षों के बारे में उनसे चर्चा करें, उनसे उनका अभिमत रखने को कहें व स्वयं विभिन्न पक्षों पर तथ्यों को उनके सामने रखें जिससे बच्चों में स्वस्थ एवं समालोचनात्मक मानसिकता का विकास हो सके।

टिप्पणी

(ग) माध्यमिक स्तर : नाटकों का कथानक किसी न किसी विषय, किसी सामाजिक बुराई के उन्मूलन अथवा किसी नैतिक मूल्य के लिये प्रेरित करने पर आधारित होता है। नाटक में निहित संदेश सीधे दर्शक के अंतर्मन पर बहुत ही तेजी से एवं सहज रीति से उतरता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी नाटक से उतने ही प्रभावित होते हैं, जितने प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के। उन्हें भी नाटक मनोरंजन का प्रिय साधन लगता है। इस स्तर के किशोरवय के विद्यार्थी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा कुछ अधिक बारीकी से नाटक की समीक्षा करने में समक्ष होते हैं। नाटक देखकर उनमें, नाटक के विभिन्न पक्षों को बारीकी से समझने और अपने विचारों को परिष्कृत करने की क्षमता उत्पन्न होती है।

(घ) उच्चतर माध्यमिक स्तर : उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विषय को समझने की उस पर अपने विचार रखने की अच्छी खासी क्षमता विकसित हो जाती है। वे कथानक लिखने, कथानक के विषय में सुझाव देने, अभिनय द्वारा दूसरों को प्रभावित करने में सक्षम हो जाते हैं। इस स्तर पर नाटक विद्यार्थियों में कई समाजोपयोगी गुणों का विकास करने के साथ–साथ अपने विचारों को स्पष्टता के साथ समाज के सामने रखने की योग्यता उत्पन्न करता है।

यहां हमने, विद्यालयीन शिक्षा में दृश्यात्मक एवं प्रदर्शनकारी कलाओं के पाठ्यक्रम के उद्देश्य क्या हैं, पाठ्यक्रम की विभिन्न विद्यालयीन स्तरों पर क्या विषय–वस्तु होनी चाहिये एवं इन कलाओं की शिक्षा विभिन्न विद्यालयी न स्तरों पर किन विधियों से दी जानी चाहिये, ताकि वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने में सहायक हो सकें, के विषय में चर्चा की। संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, छापा कला, मूर्तिकला आदि किस प्रकार विद्यार्थियों को आनन्दित करने के साथ–साथ उन्हें शिक्षित करके जीविकोपार्जन में भी सहायक हो सकती हैं, इस विषय पर विस्तृत चर्चा की। वास्तव में कला शिक्षा प्रत्येक आयु के बालक–बालिकाओं को आनन्दित करती है व उनमें उदारता संवेदनशीलत, दृढ़ता एवं आत्मविश्वास जैसे नैतिक गुणों को विकसित करती है।

अपनी प्रगति जांचिए

7. कला–शिक्षा को विद्यालयीन पाठ्यक्रम में समाहित करने के कई तरीके समय–समय पर किसके द्वारा सुझाए गए हैं?

   (क) शिक्षाविदों द्वारा (ख) नेताओं द्वारा

   (ग) खिलाड़ियों द्वारा (घ) व्यापारियों द्वारा

8. भाषा, गणित या विज्ञान के शब्दों, पहाड़ों एवं तथ्यों को कण्ठस्थ कराने में किसकी महती भूमिका हो सकती है?

   (क) समय की (ख) वातावरण की

   (ग) संगीत की (घ) नौटंकी की

1.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

टिप्पणी

1. (घ)
2. (क)
3. (ख)
4. (ग)
5. (घ)
6. (क)
7. (क)
8. (ग)

1.7 सारांश

कला मानव जीवन का अभिन्न अंग है। जन्म लेते ही शिशु को शिक्षित करने की दिशा में कला का सहारा लिया जाता है। शिशु को सीटी की धुन पर मूत्र निष्कासन की आवश्यक क्रिया करने के लिये प्रेरित करना जीवन आरम्भ होते ही मानव के कला प्रभावित स्वभाव का उदाहरण है। लोरी गाकर शिशु को सुलाना, रंगबिरंगे खिलौनों पर शिशु का आकर्षित होना इस बात का प्रमाण है कि कला मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा है।

आदि काल से ही मनुष्य के द्वारा कठिन श्रम के कार्यों को करते समय गीत गुनगुनाने अथवा शिक्षा को संगीतमय बनाकर आसानी से ग्रहण करने के उदाहरण मिलते हैं। वैदिक मंत्रों के उच्चारण में एवं उन्हें कण्ठस्थ करने में संगीत की अहम भूमिका रही है। नाटक कला और शिक्षा का सम्मिश्रण आदिकाल से मनुष्य द्वारा अनायास ही किया जाता रहा है। जाने–अनजाने संगीत एवं नाटक को आनन्दप्रद मान कर मनुष्य ने जीवन में इन्हें अपनाया है, यह मानव जीवन में स्वाभाविक रूप से परिलक्षित होता रहा है।

देश के लिये शिक्षा नीति का निर्धारण करते समय विभिन्न समितियों एवं आयोगों ने कला शिक्षा को औपचारिक शिक्षा में समाहित करने के सुझाव दिये। बालकों में कला की समझ विकसित करने के लिये शिक्षक में कला की पूर्ण अथवा पर्याप्त समझ होना आवश्यक है, अतः शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में कला शिक्षा को सम्मिलित करने के सुझाव के अनुसार राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा इस ओर कदम उठाए गए। विभिन्न समितियों ने कला शिक्षा को बालक के चहुंमुखी विकास के लिये आवश्यक बताया। सूचनाओं को एकत्रित करने का कार्य तो मशीनों के द्वारा भी भली–भांति किया जा सकता है, लेकिन मानव जीवन को सभ्य, सुसंस्कृत एवं सौन्दर्यपूर्ण बनाने में, मानव समाज को आत्मिक आनन्द प्रदान करने में तथा सहयोग, शांति एवं एकाग्रता जैसे

टिप्पणी

बहुमूल्य गुणों की ओर प्रेरित करते हुए ज्ञान प्रदान करने में कला की महती भूमिका है। किसी अबोध बालक को यदि हम उपदेशात्मक ढंग से हंसते रहने या मुसकराते रहने की शिक्षा देंगे, तो शायद उस पर इसका उतना प्रभाव नहीं पड़ेगा, लेकिन यदि हम स्वयं हंसने का या ऐसे किसी आनंदित करने वाले प्रसंग का प्रदर्शन या अभिनय करेंगे, तो वह अनायास ही खिलखिलाकर हंस पड़ेगा। वह उस स्थिति और परिप्रेक्ष्य में स्वयं को भूलकर भावात्मक रूप से उस प्रसंग में डूब जाएगा, विलीन हो जाएगा। यह है कला की शक्ति। कला की इस शक्ति का सदुप्रयोग करते हुए बालकों की उग्रता को शांति की ओर अग्रसर करना साथ ही उसे तनावमुक्त स्थिति में आनन्दपूर्वक बड़े से बड़े चारित्रिक गुण एवं ज्ञान का अधिकारी बनाना कला शिक्षा का उद्देश्य है।

विभिन्न शिक्षा समितियों एवं आयोगों द्वारा समय–समय पर कला शिक्षा का विद्यालयीन पाठ्यक्रम में समावेश किया गया। विद्यालयीन शिक्षा के साथ कला शिक्षा को एकीकृत करते हुए, शिक्षा को रुचिकर बनाना, कला के माध्यम से शिक्षा को बालक के लिये आनन्दपूर्ण बनाना, तनावमुक्त एवं दबावमुक्त सीखने का वातावरण तैयार करना, विद्यालयीन शिक्षा में तदनुसार पाठ्यक्रम निर्धारण आदि की तैयारी कला शिक्षा को विद्यालयीन पाठ्यक्रम में समाहित करने की दिशा में अगला चरण है। किस प्रकार कला शिक्षा को विद्यालयीन शिक्षा में अन्तर्निहित किया जाये, जिससे विद्यार्थी आनन्दपूर्वक पाठ्यक्रम की कठिन अवधारणाओं को सीख सकें, शिक्षाविदों के लिये यह एक महत्वपूर्ण कार्य था। अपने देश की संस्कृति एवं सभ्यता में समाहित लोक कलाओं को जीवित रखना भी अत्यन्त आवश्यक था, साथ ही स्वतंत्र देश में स्वतंत्र विचारधारा, लोकतंत्र के अनुकूल समझ एवं अपने देश की धरोहर से प्रेम रखने वाले नागरिक तैयार करना भी शिक्षा का प्रमुख कार्य था।

कला शिक्षा को विद्यालयीन पाठ्यक्रम में समाहित करने के कई तरीके समय–समय पर शिक्षा विदों द्वारा सुझाए गए हैं। विद्यालयीन पाठ्यक्रम में किसी भी कला को एक विषय के रूप में सम्मिलित करने पर उस कला विषय में किस विद्यालयीन स्तर पर, उस कला से संबंधित क्या–क्या ज्ञान दिया जाना प्रासंगिक होगा एवं उस आयु वर्ग की सीखने की क्षमता के अनुकूल होगा, यह निर्धारित उस कला के विशेषज्ञों द्वारा किया जाना आवश्यक है। सामान्यतया विद्यालयीन वातावरण में उत्सवों आदि के अवसर पर सभी बच्चे मिलजुल कर बढ़–चढ़कर जोर–शोर से सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बड़े उत्साह से हिस्सा लेते हैं। अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार वे बिना किसी औपचारिक शिक्षा के भिन्न–भिन्न कलाओं का प्रदर्शन करते हैं एवं एक–दूसरे से सीखते रहते हैं। कला शिक्षा जब एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम का हिस्सा बनती है, तो विभिन्न स्तरों पर उस आयुवर्ग के विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम का निर्धारण करना आवश्यक हो जाता है। दृश्यात्मक एवं प्रदर्शनकारी कलाओं के क्षेत्र में आज के समय में कई नयी तकनीकें जुड़ चुकी हैं। कम्प्यूटर शिक्षा के कारण शिक्षा जगत में आई क्रांति से कला शिक्षा भी अछूती नहीं है। आज संगीत केवल शास्त्रीय संगीत तक सीमित नहीं है, ना ही नृत्य शास्त्रीय नृत्य तक सीमित है। छोटे–छोटे बच्चे आज मोबाइल का बटन दबाकर संगीत

टिप्पणी

एवं नृत्य की भिन्न–भिन्न विद्याओं का आनन्द लेते हैं और टी.वी. पर देखकर डायलॉग बोलना, डाँस करना, गीता गाना सीख जाते हैं। दृश्यात्मक कलाओं में भी चित्रकला, मूर्तिकला आदि की तकनीकों में बहुत प्रगति हुई है। अतः दृश्यात्मक एवं प्रदर्शनकारी कलाओं के सम्बन्ध में ऐसी कौन–सी जानकारियां अथवा ज्ञान है, जो टी.वी., मोबाइल, यू ट्यूब आदि से बच्चों को नहीं मिल पाता, जो उन्हें उस कला को सीखने के लिए आवश्यक है, यह पाठयक्रम निर्धारण करते समय ध्यान रखा जाना चाहिये, साथ ही आज के समय के अनुरूप कौन–सा नवाचार बच्चों के लिये किसी कला को कुशलतापूर्वक सीखने में सहायक हो सकता है, यह भी दृष्टिगत रखना आवश्यक है। समयानुसार एवं उस आयु वर्ग की क्षमताओं को दृष्टिगत रखते हुए किसी भी प्रदर्शनकारी कला अथवा दृश्यात्मक कला के लिये पाठ्यक्रम का निर्धारण विद्यालयीन शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिये एक आवश्यक प्रक्रिया है।

1.8 मुख्य शब्दावली

- **सहारा** : सहयोग।
- **निष्कासन** : निकालना।
- **लोरी** : बच्चों को सुलाने हेतु गाई जाने वाली कविता।
- **कंठस्थ करना** : याद करना।
- **अनायास** : बिना प्रयास, आसानी से।
- **परिलक्षित** : जो स्पष्ट रूप से दिखाई दे।
- **अवसर** : मौका।
- **जिज्ञासा** : उत्सुकता।

1.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. माध्यमिक शिक्षा आयोग का गठन कब हुआ?
2. माध्यमिक शिक्षा आयोग के अध्यक्ष कौन थे?
3. आयोग का गठन किसके द्वारा किया गया?
4. राष्ट्रीय शिक्षा आयोग का गठन कब हुआ?
5. राष्ट्रीय शिक्षा आयोग की अनुशंसाएं शिक्षा के किस स्तर के संबंध में थीं?
6. आयोग के अध्यक्ष कौन थे?
7. आयोग में कुल कितने सदस्य थे?
8. आयोग ने अपनी रिर्पोट कब और किसको सौंपी?
9. यशपाल समिति का गठन कब हुआ?

टिप्पणी

10. यशपाल समिति को अन्य किस नाम से जाना जाता है?
11. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या निर्माण 2005 का प्रमुख ध्यान किस विषय पर था?
12. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या निर्माण 2005 में औपचारिक शिक्षा में किसे समेकित करने की अनुशंसा की गई?
13. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या निर्माण 2005 में परीक्षा को कैसा बनाने की अनुशंसा की गई?
14. बच्चों को किस बात का चस्का लगने देने की बात कही गई है?
15. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या निर्माण 2005 में सारी ऊर्जा किसमें लगाने की अनुशंसा की गई?
16. पूर्व प्राथमिक स्तर पर बालक–बालिकाओं को शिक्षित करने के लिये किन कलाओं का उपयोग किया जाना चाहिये?
17. प्राथमिक स्तर के बालक बालिकाओं को कौन–सी कलाएं अधिक आकर्षित करेंगी?
18. ग्रीटिंग्स बनाना किस प्रकार की कला के अन्तर्गत आता है?
19. प्रदर्शनकारी कला के कोई दो उदाहरण लिखिए।
20. मिट्टी के खिलौने बनाना किस प्रकार की कला का उदाहरण है?
21. पूर्व प्राथमिक स्तर पर कोई भी कला सिखाने की क्या विधि होनी चाहिए?
22. प्राथमिक स्तर पर चित्रकला में कौन–सी विषय–वस्तु रखी जानी चाहिए?
23. उच्च प्राथमिक स्तर पर कला शिक्षा के लिये कौन–सी विधि कारगर हो सकती है?
24. नाटकों का कथानक सामान्यतः किस प्रकार का होता है?
25. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर नाटक किस प्रकार विद्यार्थियों को अध्ययन में सहायता करते हैं?

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. आयोग द्वारा सुझाये गये सात विषय समूह कौन–कौन से हैं?
2. कला शिक्षा के विषय में आयोग की क्या अनुशंसाएं थीं?
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में संपूर्ण देश में शिक्षा संरचना का कौन–सा प्रारूप प्रस्तुत किया गया?
4. दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की शिक्षा के लिये इस शिक्षा नीति में क्या प्रस्ताव दिया गया?
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में देश को किस सदी के लिये तैयार किये जाने हेतु प्रयास शामिल थे?
6. यशपाल समिति के गठन का उद्देश्य क्या था?

टिप्पणी

7. कला शिक्षा एवं कला समेकित शिक्षा को उदाहरण सहित स्पष्ट करें।
8. कला शिक्षा के महत्त्व को अपने शब्दों में लिखिए।
9. मुदालियर आयोग का गठन कब हुआ? कला शिक्षा के विषय में इस आयोग की क्या सिफारिशें थीं?
10. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF2005) के कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर प्रकाश डालिये।
11. उच्च प्राथमिक स्तर पर किसी एक विषय के किसी पाठ को छात्रों के समक्ष कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करने का कोई उदाहरण दीजिये।
12. उच्च प्राथमिक स्तर पर बालक–बालिकाओं को भावी आदर्श नागरिक बनाने में कला का सहयोग किस प्रकार लिया जा सकता है?
13. माध्यमिक स्तर के छात्रों को कौन–कौन सी चिन्ताएं रहती हैं?
14. कला शिक्षा माध्यमिक स्तर पर किस प्रकार छात्रों के लिये मददगार होती है?
15. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कला शिक्षा छात्रों को किस प्रकार दिशा देती है?
16. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कला शिक्षा छात्रों में किन गुणों का विकास करती है?
17. अन्य विषयों की भांति कला शिक्षा जीविकोपार्जन के लिये किस प्रकार उपयोगी है?
18. कला शिक्षा मानवता को किस प्रकार पोषित करती है?
19. सृजनात्मकता कला शिक्षा से किस प्रकार संबंधित है?
20. सामूहिक चेतना उत्पन्न करने में कला शिक्षा किस प्रकार उपयोगी है?
21. पूर्व प्राथमिक स्तर पर कला शिक्षा बालकों के लिये किस प्रकार उपयोगी है?
22. प्राथमिक स्तर पर बालकों को शिक्षित करने में कला की भूमिका का उल्लेख कीजिए।
23. उच्च प्राथमिक स्तर पर बालक की मनोदशा के अनुकूल कला शिक्षा बालकों में किन सामाजिक गुणों को स्थापित करने में मददगार हो सकती है?
24. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कला शिक्षा के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।
25. सृजनात्मकता, मानवता एवं सामूहिक चेतना को कला शिक्षा किस प्रकार प्रभावित करती है?
26. पाठ्य सहगामी एवं पाठयेतर गतिविधियों से आप क्या समझते हैं?
27. पिकनिक पर जाते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?
28. आपकी दृष्टि में माध्यमिक स्तर पर संगीत शिक्षा के पाठ्यक्रम में क्या–क्या विषय–वस्तु होनी चाहिए?

टिप्पणी

29. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रदर्शनकारी कला शिक्षा के शिक्षण कार्य के लिये कौन–सी रणनीतियां कारगर हो सकती हैं?

30. पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चों में किस प्रकार की स्वाभाविक प्रवृत्ति देखने को मिलती है?

31. उच्च प्राथमिक स्तर पर नाटक देखने के बाद बच्चे सामान्यतः किस प्रकार उसका आनन्द लेते रहते हैं?

1.10 सहायक पाठ्य सामग्री

Devi Prasad (1998) Art The Basis of Education.

Devi Prasad (1999) Shiksha Ka Vahan: Kala (Hindi).

Dodd, N. and Winifred, H, (1971/1980). Drama and Theatre in Education. London Heimann.

Gupta, Arvind (2003). Kabad se Jugad: Little Science, Bhopal: Eklavya.

Khanna, S. and NBT (1992). Joy of Making Indian Toys, Popular Science. New Delhi NBT.

Learning Without Burden, Report of National Advisory Committee, Ministry of Human Resource Development, New Delhi. (1993)

McCaslin, Nellie (1987). Creative Drama in the Primary Grades, Vol I and in Intermediate Grades, Vol II, New York/London: Longman.

Mishra, A. (2004). Aaj Bhi Khare Hain Talaab, Gandhi Peace Foundation, 5th Edition.

Narayan, S. (1997). Gandhi views on Education: Buniyadi Shiksha [Basic Education]. The Selected Works of Gandhi: The Voice of Truth, Vol. 6, Navajivan Publishing House.

National Curriculum Framework 2000 (NCF). Published (2000), NCERT, New Delhi.

National Curriculum Framework 2005 (NCF). Published (2005) NCERT, New Delhi

National Policy on Education 1986, Programme of Action 1992. New Deihl: Ministry. Human Resource Development. (1992) Government of India.

National Policy on Education, 1986, New Delhi: Ministry of Human Resource Development (MHRD). (1986): Government of India.

NCERT Committee on Improvement of Art Education, 1966. Published (1967), NC New Delhi.

NCERT, (2006). Position Paper National Focus Group on Arts, Music, Dance and Theatre, New Delhi: NCERT.

Poetry/songs by Kabir, Tagore, Nirala etc; Passages from Tulsi Das etc; Plays: Yug- Dharam Vir Bharati, Tughlaq: Girish Karnad.

Position Paper: National Focus Group on Art, Music, Dance and Theatre. Publish (2006), NCERT, New Delhi.

Position Paper: National Focus Group on Heritage Crafts. (2005), Published (2006) NCERT, New Delhi.

Prasad, Devi (1998). Art as the Basis of Education, NBT, New Delhi. Report of the Education Commission (1964-66): Education and National Development (also known as Kothari Commission). New Delhi: Ministry of Education. 1964-66) Government of India.

Report of the Secondary Education Commission, 1952-53. New Delhi: Ministry of Education. (1954): Government of India.

Sahi, Jane and Sahi, R., Learning Through Art, Eklavya, 2009.

Teachers' Handbook of art education, Class VI. Published (2005), NCERT, New Delhi.

टिप्पणी

इकाई 2 कला शिक्षा में प्रायोगिक कार्य

टिप्पणी

संरचना

2.0 परिचय
2.1 उद्देश्य
2.2 प्रायोगिक कार्य–I
  2.2.1 आरेखण
  2.2.2 चित्रकारी
  2.2.3 छापाकला
2.3 प्रायोगिक कार्य – II
  2.3.1 मिट्टी के पात्र
  2.3.2 स्कल्पचर/आर्किटेक्चर
  2.3.3 रेशे
  2.3.4 अन्य गतिविधियां
2.4 सत्रीय कार्य – I
  2.4.1 पेंटिंग
  2.4.2 ड्राइंग
  2.4.3 स्कल्पचर
2.5 सत्रीय कार्य
  2.5.1 क्राफ्ट
  2.5.2 नाटक
2.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
2.7 सारांश
2.8 मुख्य शब्दावली
2.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
2.10 सहायक पाठ्य सामग्री

2.0 परिचय

जैसा कि हम सब जानते हैं प्रायोगिक ज्ञान के बिना सैद्धांतिक ज्ञान अधूरा है। कोई भी कार्य केवल पढ़ लेने से नहीं सीखा जा सकता। जब तक हम उसे करके नहीं देखते, तब तक केवल सैद्धांतिक ज्ञान से हमारे भीतर कार्य करने के लिए आत्मविश्वास उत्पन्न नहीं होता है। कार्य को करने से हमें अपनी कमियों का पता चलता है, और किये जाने वाले कार्य की बारीकियों का पता चलता है और पुनः–पुनः अभ्यास करने से कुशलता आती है। कला शिक्षा मुख्यतः प्रायोगिक एवं गतिविधि आधारित विषय है। शिक्षा पाठ्यक्रम के अंतर्गत कला शिक्षा का 50 अंक का पूर्णतः आंतरिक कोर्स रखा गया है। इस कोर्स के शिक्षण में, प्रयोग एवं गतिविधि के लिए पर्याप्त अवसर हैं। बी.एड. प्रशिक्षण के दौरान पूरे सत्र में नाट्य एवं कला शिक्षा के प्रयोग, सैद्धांतिक विषयों के प्रशिक्षण के साथ–साथ समानांतर रूप से चलते रहने चाहिए। इस कोर्स में सैद्धांतिक से अधिक महत्व प्रायोगिक कार्य का है। दृश्यात्मक कलाओं में चित्रकला का आज के समय में भी उतना ही महत्व है, जितना प्राचीन समय में था। रंगों का सौंदर्य हमें आज भी उतना ही चमत्कृत करता है, जितना प्राचीन समय में करता था। रंग–बिरंगे फूल हों या

टिप्पणी

रंगोली के रंग, छात्रों की ड्राइंग बुक में बने चित्र हों या मंच पर दिखने वाली सजावट, देखते ही मन प्रफुल्लित व आनंदित हो जाता है। इन सबके पीछे जो ज्ञान है उसका संबंध चित्रकला से ही है। जब तक किसी व्यक्ति को चित्रकला का ज्ञान नहीं होगा, जब तक उसने इस क्षेत्र में कार्य नहीं किया होगा, प्रयोग नहीं किये होंगे, तब तक उससे संबंधित कोई भी कार्य कुशलतापूर्वक करने में वह सक्षम नहीं हो सकेगा।

प्रस्तुत इकाई में आरेखण तकनीकों, रेखा, प्रतिपादन, स्केचिंग, मान, छायांकन, हैचिंग, क्रॉस हैचिंग; पेन्टिंग तकनीकों–वेट–ऑन–वेट, वेट–ऑन–ड्रॉप, स्पंजिंग, आदि की बारीकियों के बारे में विस्तार से अध्ययन किया गया है।

2.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- कला–शिक्षा में प्रायोगिक कार्य के महत्व का अनुभव कर पाएंगे;
- विभिन्न कलाओं की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर पाएंगे;
- विभिन्न कलाओं के बीच अंतर कर पाएंगे;
- विभिन्न कलाओं की तकनीकी बारीकियों से अवगत हो पाएंगे;
- अपनी पसंद की कला के चयन में सक्षम हो पाएंगे;
- कला के माध्यम से समाज कल्याण कर पाएंगे;
- कला को जीविकोपार्जन का माध्यम बना पाएंगे;
- मिट्टी से विभिन्न प्रकार के आकार निर्मित करने की तकनीकों का ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे;
- मूर्तिकला की विभिन्न तकनीकों का ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे;
- रेशे अथवा धागे से होने वाली कलाओं के विभिन्न प्रकारों की जानकारी पाएंगे;
- किसी भी कला के क्षेत्र में दक्षता में रह गई कमी को जान पाएंगे;
- कला सौंदर्य का अनुभव कर पाएंगे।

2.2 प्रायोगिक कार्य–I

प्रायोगिक कार्य और अभ्यास विद्यार्थी में आत्मविश्वास, दृढ़ता व कुशलता जैसे गुण उत्पन्न करने के साथ–साथ आपसी सहयोग एवं टीम वर्क जैसे नैतिक गुण भी उत्पन्न करता है।

2.2.1 आरेखण

रेखाओं के माध्यम से अपने भावों को प्रकट करना चित्रकला के अंतर्गत आता है। वास्तविकता तो यह है कि रेखाओं के कलात्मक अंकन से ही विभिन्न भाषाओं के लिए

टिप्पणी

लिपियों की रचना हुई है। रेखाओं की अपनी एक भाषा होती है, बिना किसी लिपि में लिप्त हुए भी प्रत्येक रेखा कुछ कहती है कुछ अभिव्यक्त करती है। यही रेखा जब किसी विशेष क्रम में अंकित की जाती है, तो वह भाषा की ध्वनियों को लेखन का रूप देती है। चिकित्सा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक के साथ जुड़कर रेखा ई.सी.जी., डब्ल्यू.एफ.टी. आदि ऐसी जांचों में ग्राफ के रूप में बहुत कुछ व्यक्त करती है। कला के क्षेत्र में रेखा बहुत महत्वपूर्ण है। सभी दृश्यात्मक कलाओं में रेखा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। रेखाओं में लय होना चित्रकला की पहली आवश्यकता है। पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चों को जब हम चित्रकला सिखाते हैं, तो कागज–पेंसिल देकर उन्हें स्वतंत्र छोड़ देते हैं। बिना किसी मार्गदर्शन के आड़ी–तिरछी कैसी भी रेखाएं खींचकर बच्चे प्रसन्न होते हैं। यही रेखाएं जब कोई सुंदर आकार ले लेती हैं, तो अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाती हैं, बहुत कुछ कहने लगती हैं। प्रायोगिक कार्य के संदर्भ में हम सबसे पहले समोच्च रेखा के विषय में जानेंगे, जो चित्रकला की पहली सीढ़ी है।

(क) समोच्च रेखा (Contour) : किसी वस्तु अथवा पदार्थ के आकार को निर्मित करने वाली रूपरेखा (Outline) ही समोच्च रेखा है। समोच्च रेखा चित्रकला के सौंदर्य को अनुभव कराने की ओर पहला कदम है। जब पांचवी या छठवीं का कोई बच्चा किसी पक्षी, किसी फूल, बर्तन या किसी सब्जी (बैगन, मिर्ची आदि) के आकार की रेखा खींचता है, तो उसे कितनी प्रसन्नता होती है, उसे इस प्रसन्नता का अनुभव कराने वाली समोच्च रेखा ही है, जो चित्रकला के सौंदर्य और शक्ति से उसका परिचय कराती है, जो बिना किसी रंग का प्रयोग किये सरल रूप में किसी वस्तु के आकार की पहचान कराती है। सरल शब्दों में समोच्च रेखा किसी वस्तु या पदार्थ के आकार की रूप रेखा या आउटलाइन है, जो चित्र बनाना सीखने के लिए पहला पायदान है। किसी भी आकार या आकृति की रचना रेखा के बिना संभव नहीं है। समोच्च रेखा के द्वारा दिया गया आकार मूक एवं रंगहीन होते हुए भी, कई भावों को प्रकट करने की सामर्थ्य रखता है। इस प्रकार किसी भी वस्तु, पदार्थ अथवा दृश्य की बाह्य रेखा (Outline) ही समोच्च रेखा कहलाती है, जिसका अभ्यास चित्रकला सीखने की ओर पहला कदम है और हम सब बचपन से ही इसका अभ्यास उद्देश्यपूर्वक अथवा खेल–खेल में करते रहते हैं।

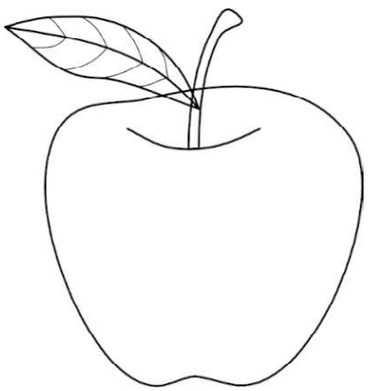

टिप्पणी

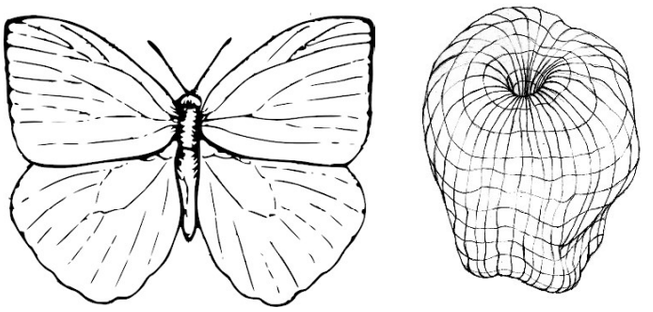

(ख) प्रतिपादन (Rendeting) : किसी वस्तु के रैखिक आकार को वास्तविक रूप देने के लिए इस तकनीक का प्रयोग किया जाता है। किसी वस्तु के आकार को शेडिंग के माध्यम से यथार्थ रूप दिया जाता है। प्रकाश, छाया और प्रकाश स्रोत के इफैक्ट्स दिखाने के लिए इस तकनीक का प्रयोग करते हैं। जहां रेखा केवल वस्तु के आकार की ओर संकेत करती है, रेन्डरिंग तकनीक उसकी गुणवत्ता में वृद्धि करके उसे वास्तविक रूप देती है। रेन्डरिंग तकनीक का प्रयोग करते समय प्रकाश स्रोत की स्थिति, वस्तु पर पड़ने वाले सीधे प्रकाश, परावर्तित प्रकाश, विपरीत दिशा में पड़ने वाली छाया का प्रभाव आदि का ध्यान रखना आवश्यक है, क्योंकि यह तकनीक कन्ट्रास्ट ड्राइंग (विपरीत चित्र) का उभार दिखाने के लिए उपयोग में लाई जाती है। किसी वस्तु पर जब सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं, तो जिस भाग को प्रकाशित करती हैं उसे और उसके विपरीत भाग को जिस पर सूर्य की किरणें सीधी नहीं पड़ रही हैं, शेडिंग की भिन्नता से दर्शाया जाता है, क्योंकि वस्तु के जिस भाग पर सूर्य की किरणें सीधी नहीं पड़ती हैं, उस भाग को आसपास की वस्तुओं से परावर्तित प्रकाश प्रकाशित करता है, जिसकी तेजी मंद होती है। इसी प्रकार जिस दिशा से प्रकाश आता है, उसकी विपरीत दिशा में उस वस्तु की छाया बनती है। ये सभी इफेक्ट रेन्डरिंग तकनीक के माध्यम से बेहतर ढंग से प्रदर्शित किये जा सकते हैं।

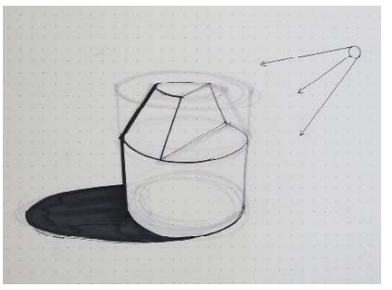

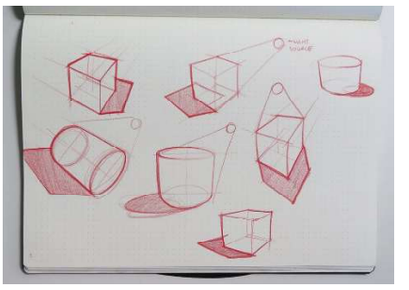

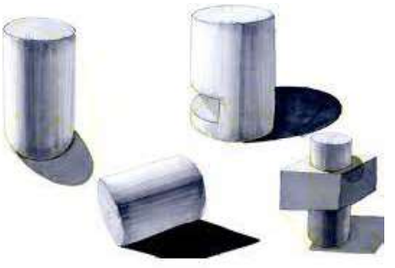

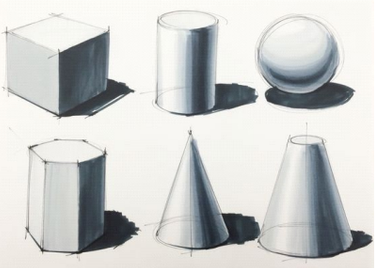

टिप्पणी

(ग) स्केचिंग (Sketching) : स्केचिंग किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा दृश्य का रफ चित्र होता है, जो कलाकार द्वारा शीघ्रता से बनाया जाता है। किसी देखी हुई वस्तु, व्यक्ति अथवा दृश्य का कल्पना के आधार पर, शीघ्रता से सरल चित्र बनाना स्केचिंग कहलाता है। पेन या पेंसिल से साधारण तरीके से, स्वतंत्र हाथ से चित्रण कर लेना, जिसमें केवल जरूरी आकृतियां दर्शित हों, स्केचिंग कहलाता है। इसमें स्पष्टता नहीं होती है। यह एक रफ डिजाइन होता है, जिसे बाद में सुंदरता के साथ पूर्ण किया जाता है। यह तकनीक विचारों को सहेजकर रखने के लिए उपयोग में लाई जाती है, जिन्हें बाद में कलाकार द्वारा पूर्ण रूप दिया जाता है। तत्काल स्मृति में उत्पन्न किसी विचार, दृश्य अथवा मुखाकृति को सहेजकर रखने के लिए यह तकनीक अत्यंत कारगर है।

(घ) मान (Value) : एक ही रंग के गहरे और हल्के प्रयोग से किसी वस्तु की स्थिति को दर्शाना मान (value) कहलाता है। एक ही रंग में सफेद रंग मिलाकर उसे हल्का और काला रंग मिलाकर उसे गहरा बनाया जाता है एवं वस्तु की आकृति, स्थिति व स्थान आदि को इसके द्वारा स्पष्ट किया जाता है। मान कला के सात तत्वों में से एक है। रेखा, आकार, अंतराल, रूप, पोल और वर्ण की तरह मान कला के उद्‌गम में महत्वपूर्ण है, क्योंकि मान रंग की तान (tone) को सुनिश्चित करता है। वस्तु की आकृति एवं स्थिति के साथ–साथ वस्तु किस स्थान पर रखी है यह दर्शाने के लिए एवं वस्तु की छाया वाले भाग को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने के लिए मान अत्यंत उपयोगी तकनीक है।

टिप्पणी

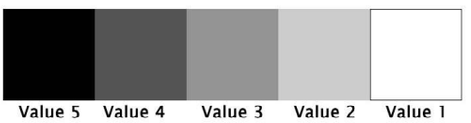

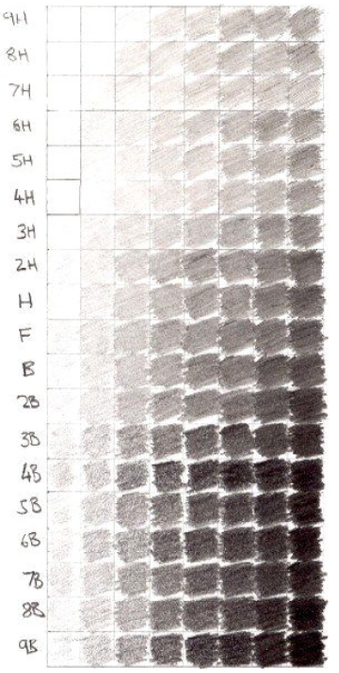

(ङ) Nk; kdu **(Shading)** : किसी कलाकृति को वास्तविक रूप में दर्शाने में छायांकन तकनीक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मान (रंगों का गहरापन एवं हल्कापन) का प्रयोग करके एक कलाकृति में आकार, रूप, अंतराल और सबसे महत्वपूर्ण प्रकाश को दर्शाने की प्रक्रिया को छायांकन कहते हैं। इस तकनीक का उचित रूप से प्रयोग करने पर किसी कलाकृति को त्रिआयामी स्वरूप में प्रदर्शित कर सकते हैं, जिससे वह कलाकृति उस वस्तु के वास्तविक स्वरूप के सदृश दिखाई देती है, जैसाकि चित्रों में दर्शाया गया है। छायांकन की कई भिन्न तकनीकें हैं। प्रत्येक तकनीक कलाकृति की बनावट पर एक भिन्न प्रभाव डालती है तथा भिन्न भाव का अनुभव कराती है। छायांकन की किस तकनीक का प्रयोग कब करना है, यह कलाकृति किस माध्यम पर बनाई गई है, उस पर निर्भर करता है।

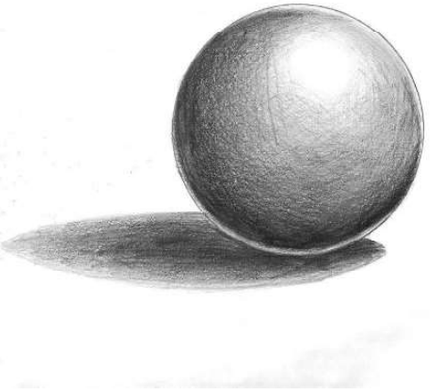

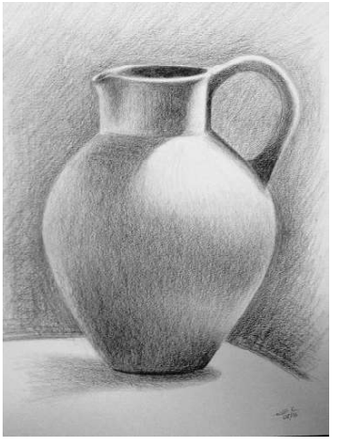

(च) हैचिंग (Hatching) : हैचिंग यानी रेखा छाया मूलतः छायांकन की ही एक तकनीक है, जो कलाकृति की बनावट, तान आदि में स्पष्टता लाने के लिए उपयोग में लाई जाती है। इस तकनीक में बारीक समानांतर रेखाओं के प्रयोग से छाया को कम या अधिक घनत्व के साथ प्रदर्शित किया जाता है। सामान्यतः इस तकनीक का प्रयोग रेखाचित्र एवं स्केचिंग में, पेन एवं पेंसिल का उपयोग करते हुए किया जाता है, हालांकि चित्रकार भी इस तकनीक का प्रयोग करते हैं।

(छ) क्रॉस हैचिंग (Cross Hatching) : हेचिंग की तरह क्रॉस हेचिंग भी छायांकन की एक तकनीक है, जिसमें बारीक समानांतर रेखाएं विपरीत दिशाओं में बढ़ते हुए एक जाल का पैटर्न बनाती हैं। इसमें रेखाओं के बीच की दूरी को घटाकर या बढ़ाकर टोनल प्रभाव को व्यक्त किया जाता है। रेखाएं जितनी पास–पास होंगी, उनके बीच में दूरी जितनी कम होगी, वे वस्तु के गहरे रंग को दर्शाएंगी एवं इनके बीच की दूरी जितनी अधिक होगी, वे वस्तु के हल्के रंग अर्थात रोशनी वाले रंग को दर्शाएंगी। बारीक समानांतर रेखाओं को समूह (Set) भी कहा जाता है, जिन्हें पास–पास इस तरह बनाया जाता है कि ये तान (Tone) होने का भ्रम पैदा करती हैं। क्रॉस हेचिंग का प्रयोग चित्र में गहराई और आकार को स्पष्टता से दिखाने के लिए किया जाता है। वस्तु की छाया गहरी दिखाने के लिए पेंसिल पर ज्यादा दबाव डालते हैं तथा रोशनी को दिखाने के लिए पेंसिल पर कम दबाव डालते हैं।

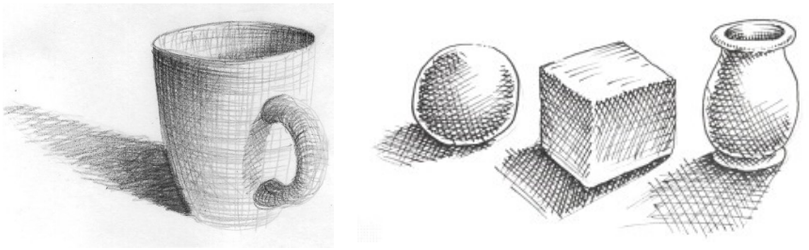

टिप्पणी

क्रॉस हेचिंग में प्रकाश और छाया का मान (values) दिखाने के लिए एक hatch set के ऊपर दूसरा hatch set बनाकर प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। क्रॉस हेच की कई परतें लगाकर टोन और वैल्यू के बीच में अंतर दिखाया जाता है। इस प्रकार थोड़े–थोड़े अंतर के साथ चित्र को स्पष्टता के साथ प्रस्तुत करने के लिए हेचिंग के भिन्न प्रकारों का उपयोग किया जाता है।

2.2.2 चित्रकारी

चित्रकारी रैखिक चित्रों को नया रंग देने के लिये उपयोग में लाई जाने वाली कला है। आज के समय में चित्रकारी के कई तरीके प्रचलित हैं, जो किसी कलाकृति को और अधिक आकर्षक बनाने का कार्य करते हैं।

(क) वैट–ऑन–वैट (Wet-on-wet) : Wet on Wet को wet-in-wet भी कहते हैं। जैसा कि शब्दों से स्पष्ट है यह पेंटिंग एक रंग को apply करने के बाद, उसके गीले रहने पर ही दूसरे रंग को apply करने की तकनीक है, जिसमें दोनों रंग एक–दूसरे के साथ मिलकर एक नये सौंदर्य एवं प्रभाव की रचना करते हैं। इस तकनीक में एक गीले पेंट अथवा गीली सतह पर दूसरे गीले पेंट को लगाकर नये सौंदर्य की रचना की जाती है। पहले लगाए गए रंगों की परत सूखने से पहले ही दूसरे रंग का प्रयोग किया जाता है, ताकि दोनों गीले रंगों के आपस में मिलने से नया प्रभाव उत्पन्न हो सके। ये रंग मिलकर जीवंतता का सृजन करते हैं एवं कलाकृति को अधिक सुंदर बनाते हैं। इस तकनीक को वाटर कलर, आइल पेंट एवं अन्य गीले रंगों के साथ प्रयोग किया जा सकता है।

टिप्पणी

(ख) वैट–ऑन–ड्राई (Wet-on-dry) : जहां wet-on-wet तकनीक में एक गीले रंग के सूखने से पहले उस पर दूसरे गीले रंग का प्रयोग करके कलाकृति में सौंदर्य लाने का प्रयास किया जाता है, वहां wet-on-dry तकनीक में एक रंग के पूरी तरह सूखने के बाद दूसरे गीले रंग का प्रयोग करके किसी कलाकृति में दर्शाये गये आकार में पैनापन लाया जाता है, अतः इस तकनीक में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि पेपर पर पहले से किया गया रंग पूरी तरह सूख गया हो, अन्यथा कलाकृति में इच्छित सौंदर्य का प्रभाव कम हो सकता है। यह तकनीक भी वाटर कलर, आइल पेंट एवं अन्य गीले रंगों के साथ उपयोग में लाई जाती है।

(ग) स्पंज पेंटिंग (Sponge Painting) : पेंटिंग की इस विधि में कलाकृति की आवश्यकतानुसार आकार में स्पंज को काट लिया जाता है। इसके बाद इन टुकड़ों को चित्र के अनुसार रंगों में डुबोकर सरफेस पर अथवा ड्राइंग शीट पर रखकर दबाया जाता है। पेंट, ग्लेज, स्पंज और क्लीनिंग सप्लाइज इस तकनीक के लिए आवश्यक वस्तुएं हैं।

(घ) वाश (Wash) : वाश तकनीक में जैसा कि शब्द से ही इंगित होता है, रंग और पानी के मिश्रण में पानी की मात्रा रंग के अनुपात में अधिक होती है। वाश रंग

टिप्पणी

की अर्द्धपारदर्शी परत होती है। पानी की अधिकता वाले घुलनशील जलरंग को कागज या बोर्ड पर ब्रश से समान रूप में फैला देते हैं। यह परत क्रमबद्ध तरीके से अथवा समानांतर रूप से कागज पर लगाई जाती है, जो क्रमशः हल्की होती जाती है। यह तकनीक इटालियन कलाकार लियोनाडो–डा–विन्ची की कृतियों में देखने को मिलती है।

(ङ) स्पंजिंग की वाटर कलर तकनीक (Water Colour Techniques of Sponging) : स्पंज पेंटिंग तकनीक से चित्र में प्रभावकारी सौंदर्य लाने के लिए स्पंज को साफ पानी में डुबोकर इस तरह दबाया जाता है कि उसका सारा अतिरिक्त पानी निकल जाये। साफ कपड़े अथवा कागज से उसे थोड़ा नम रह जाने तक पोंछा जाता है। इसके बाद स्पंज के उस हिस्से को रंग में डुबोकर चित्र पर हल्के हाथ से दबाया जाता है। जैसी चित्र में आवश्यकता हो जैसे, पत्तियों को प्रभावकारी बनाने के लिए नोक वाला हिस्सा, झाड़ियों को प्रभावी स्पष्टता देने के लिए किनारे का हिस्सा, पर्वत या आकाश के लिए बीच का हिस्सा। एक बार उपयोग किए गए स्पंज को दुबारा उपयोग करने के लिए पहले के रंग को अच्छी तरह साफ कर लिया जाता है। सबसे पहले हल्के रंगों से शुरुआत की जाती है, फिर धीरे–धीरे क्रमशः गहरे रंगों का प्रयोग करते हैं।

टिप्पणी

2.2.3 छापाकला

छापाकला का इतिहास बहुत पुराना है। प्राचीन समय में भोले–भाले मनुष्य अपने हाथों को मिट्टी में डुबोकर दीवार पर हाथों को छापते थे और प्रसन्न होते थे। आज के विकसित युग में Printing की कई भिन्न–भिन्न तकनीकें प्रचलित हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

(क) रिलीफ (Relief) : छपाई की यह तकनीक सर्वाधिक प्रचलित तकनीक है। इसमें छापी जाने वाली वस्तु, चित्र अथवा शब्दों के लिए ब्लॉक्स या प्लेट तैयार किये जाते हैं, जिनमें लकड़ी, प्लास्टिक या किसी धातु का उपयोग किया जाता है। छापी जाने वाली सामग्री का आकार उभरा हुआ रहता है, शेष सतह को काटकर या खुरचकर निकाल देते हैं। उभरी हुई सतह पर रंग लगाकर, उसे पेपर पर रखते हैं और दबा देते हैं, जिससे ब्लाक या प्लेट पर उभरी हुई आकृति कागज पर छप जाती है। लकड़ी, प्लास्टिक या एल्यूमीनियम आदि पर चित्र को तराशने के बाद उसे रेतमार कागज से घिसकर प्लेन कर दिया जाता है, ताकि चित्र उचित प्रकार से छप जाए। शब्दों या वर्णों का प्रिंट लेने के लिए उनके दर्पण पर दिखने वाले प्रतिबिंब को ब्लाक पर उकेरा जाता है, ताकि छापने पर सीधा वर्ण या शब्द प्राप्त हो सके।

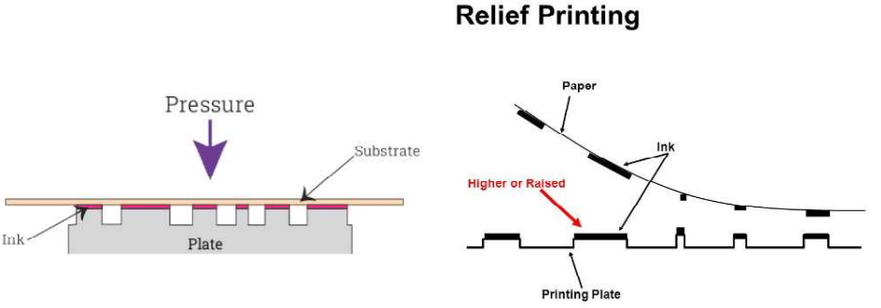

टिप्पणी

(ख) रगड़ (Frottage/Rubbing) : किसी तराशी हुई सतह पर कागज रखकर पेंसिल, मोम आदि में रगड़ने पर कागज के नीचे की आकृति कागज पर छप जाती है। संभवतः छपाई की प्रारंभिक अवस्था में यह विधि ईजाद की गई होगी। इस तकनीक में किसी भी आकृति को कागज पर उतारकर कलाकृति को बेहतर बनाने में उपयोग किया जा सकता है। एक सिक्के पर कागज रखकर, उस कागज पर पेंसिल घिसने से सिक्के की आकृति कागज पर उतर जाती है। इसी तकनीक से भिन्न–भिन्न आकृतियां कागज पर प्राप्त की जा सकती हैं और अपने चित्र को सुंदर बनाया जा सकता है। इसमें सूखे रंगों का प्रयोग किया जाता है।

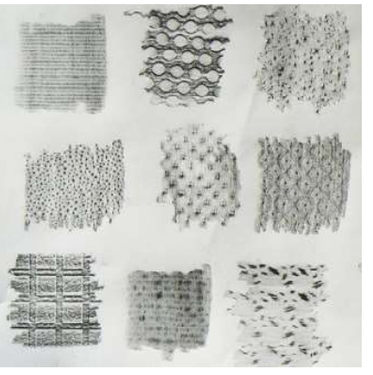

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

1. रेखाओं के माध्यम से अपने भावों को प्रकट करना किसके अंतर्गत आता है?
   (क) रेखागणित के (ख) पुस्तककला के
   (ग) आधुनिक कला के (घ) चित्रकला के
2. किसी देखी हुई वस्तु, व्यक्ति या दृश्य का कल्पना के आधार पर सरल चित्र बनाना क्या कहलाता है?
   (क) स्केचिंग (ख) छायांकन
   (ग) मान (घ) हैचिंग

2.3 प्रायोगिक कार्य – II

कला शिक्षा में प्रायोगिक कार्य का महत्वपूर्ण स्थान है। आरेखण, चित्रकारी, छापाकला आदि कलाएं हमारी अमूल्य सांस्कृतिक पूंजी है। आज के समय में भी ये कलाएं हमें आनंदित करने के साथ–साथ सौंदर्य की अनुभूति कराती हैं एवं जीविकोपार्जन में भी सहायक होती हैं। यहां हम मिट्टी से खिलौने तथा विभिन्न आकार बनाना, मूर्तिकला की विभिन्न तकनीकों, रेशे अथवा धागे से बनाई जाने वाली विभिन्न कलाकृतियों आदि की अलग अलग तकनीकों के विषय में चर्चा करेंगे।

2.3.1 मिट्टी के पात्र

मिट्टी के पात्रों को सेरामिक (Ceramics) कहते हैं। इस शब्द यानी Ceramics की उत्पत्ति ग्रीक शब्द Keramos से हुई है, जिसका अर्थ है Potter's Clay अर्थात बर्तन बनाने वाले की मिट्टी। इस प्रकार Ceramics शब्द प्रारंभिक तौर पर मिट्टी की ओर ही इंगित करता है। मिट्टी से बर्तन बनाना मानव सभ्यता के आदिकाल से ही प्रचलन में था। आज भी शुद्ध मिट्टी के बर्तनों में खाना बनाना, कई परिवारों में प्रचलन में है। भारत में मिट्टी से बर्तन बनाने की परंपरा बहुत प्राचीन है। बर्तन बनने के बाद उन्हें भट्ठे में पकाया जाता है। यह परंपरा आज भी प्रचलन में है। सुनम्यता के कारण मिट्टी को कई आकारों में ढाला जा सकता है, अतः दुनिया भर की कई संस्कृतियां मिट्टी का प्रयोग भिन्न प्रयोजनों के लिए करती रही हैं। मिट्टी को विभिन्न आकारों में ढालने के काम में आने वाली मिट्टी प्राप्त करने के लिए धरती को इतना खोदते हैं, कि स्वच्छ मिट्टी निकल सके। मिट्टी से बने बर्तनों या खिलौनों को एक निश्चित तापमान पर पकाया जाता है। मिट्टी को आकार देने के अलग–अलग तरीकों की चर्चा हम आगे करेंगे–

(क) पिंच एंड पुल्ड फार्म्स (Pinch and Pulled Forms) : इस तकनीक में मिट्टी का एक गोला लेकर उसमें अंगूठे को डालकर धीरे–धीरे आकार देते हुए घुमाते हैं। बाहर उंगलियों से दबाते हैं, अंदर अंगूठे को घुमा–घुमाकर दीवार सी बनने पर, एक आकार देकर अंगूठे को बहार निकाल लेते हैं। अंगूठे और उंगलियों की

मदद से दबा–दबाकर मिट्टी के गोले को आकार देने की प्रक्रिया पिंच एंड पुल (Pinch and Pull) कहलाती है।

टिप्पणी

(ख) स्लैब (Slab) : इस विधि में गीली मिट्टी को ठोस, प्लेन सतह पर रखकर बेलन से पटियानुमा बना लेते हैं। मनचाहा आकार देने के लिए पटिया को आवश्यकतानुसार आकार में काट लेते हैं, फिर पानी की सहायता से इन्हें जोड़कर विभिन्न आकार बनाए जाते हैं। इस तकनीक में छोटे आकार की मिट्टी के पटियों को जोड़कर बड़े–बड़े सजावटी सामान बनाये जा सकते हैं जो अन्य किसी तकनीक से संभव नहीं है। ज्यामिति का प्रयोग करके बड़े–बड़े फूलदान, विभिन्न आकारों के सजावटी पात्र इस तकनीक से बनाए जा सकते हैं।

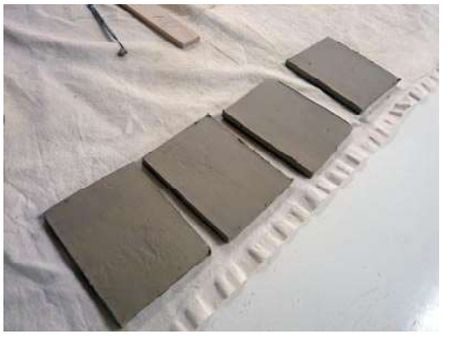

टिप्पणी

(ग) ड्रैप एवं मोल्ड (Drape and Mold) : जैसा कि नाम से स्पष्ट है, इस तकनीक में गीली मिट्टी को किसी ठोस पात्र पर चिपका दिया जाता है, फिर दबा–दबा कर उसी आकार के समान बना लिया जाता है, सूखने पर उस ठोस पात्र को निकाल दिया जाता है, इस प्रकार हूबहू उसी आकार का मिट्टी का पात्र हमें प्राप्त हो जाता है। प्लास्टिक के सांचों में गीली मिट्टी को दबाकर भरकर मिट्टी को शेर, घोड़े व अन्य जानवरों का अथवा फलों आदि का आकार दिया जा सकता है, सूखने पर सांचे को निकाल देते हैं। सांचे (Mold) में मिट्टी लगाने के बाद उसे अच्छी तरह दबाना आवश्यक होता है, ताकि वह ठीक वही आकार प्राप्त कर सके, जैसा सांचे का आकार है।

गीली मिट्टी को रोटी की तरह बेलकर उसे किसी परात, पतीली जैसी वस्तु पर लगाकर हाथ से उसके आकार पर दबा देने से सूखने पर मिट्टी वही आकार ले लेती है, इसे ड्रैप एंड मोल्ड (Drap and Mold) कहते हैं।

टिप्पणी

(घ) कॉइल (Coil) : इस विधि में गीली मिट्टी को हाथ से गोल–गोल बेलकर रस्सीनुमा बना लिया जाता है। इस रस्सीनुमा मिट्टी को किसी गोल या चौकोर आकार की परत पर लच्छे की तरह लगाते हैं एवं अंदर–बाहर हाथ से अथवा औजार से सफाई लाते जाते हैं। रोल की हुई गीली मिट्टी की Coil से बड़े–बड़े सजावट के सामान तैयार किये जा सकते हैं। ये तकनीक मिट्टी की नमी को आसानी से नियंत्रित करने में बेहतर साबित होती है।

(ङ) सरफेस डेकोरेशन तकनीकी (Surface Decoration Techniques) : हमारी संस्कृति में त्योहारों, उत्सवों आदि के अवसर पर अथवा किसी अतिथि, प्रियजन के आगमन के अवसर पर अपनी खुशी, उत्साह और उल्लास को व्यक्त करने के लिए रंगोली, अल्पना आदि बनाने की परंपरा है। हृदय को आनंदित करने वाली ये रंगोली, अल्पना आदि बहुत ही कम खर्च में अत्यंत आकर्षक रंगों के संयोजन की कला है। अल्पना चावल को पीसकर उस घोल से जमीन पर चित्र बनाने की कला है। रंगोली में विभिन्न रंगों अथवा फूलों का प्रयोग करके जमीन पर आकर्षक डिजाइन बनाए जाते हैं। आजकल रंगोली के छापे मिलने लगे हैं एवं गन का भी प्रयोग किया जाने लगा है। मूल रूप से रंगोली तर्जनी उंगली और अंगूठे की मदद से एक विशेष प्रकार से रंग को छिड़ककर, पेन से खींची लकीर की तरह रंग का प्रयोग करने की विशेष तरह की कला है, जो फ्रीहैन्ड बनाई जाती है। आजकल भिन्डी को काटकर उस पर रंग छिड़क कर अथवा उसे रंग पर दबाकर, जमीन पर दबाने से आसानी से रंगोली के डिजाइन बनाये जाने लगे हैं। कुछ लोग आलू का छापा बनाकर उससे भी रंगोली के चित्र आसानी से बनाने लगे हैं। गांवों में कच्चे फर्श पर गोबर लीपकर उस पर रंगोली बनाना उल्लास का प्रतीक माना जाता है।

टिप्पणी

2.3.2 स्कल्पचर / आर्किटेक्चर

यह मूलतः किसी ठोस मटेरियल से मूर्तियां बनाने की त्रिआयामी दृश्यात्मक कला है। लकड़ी, पत्थर, संगमरमर, मिट्टी, प्लास्टर आदि को आकार देना अथवा काटकर छीलकर उस पर चित्र उकेरना आदि स्कल्पचर (Sculpture) के अंतर्गत आता है। हमारे देश में प्राचीन समय में इमारतों के निर्माण में नक्काशी आदि का भरपूर प्रयोग हुआ है। वर्तमान समय में भी निर्माणाधीन प्रसिद्ध राम मंदिर में मूर्तिकला (नक्काशी) का बहुतायत से उपयोग किया जा रहा है। यह कला विभिन्न देशों की सांस्कृतिक परंपराओं में से एक है। यहां हम इसकी कुछ अलग–अलग तकनीकों की चर्चा करेंगे–

(क) कार्विंग (Carving) : यह मूर्तिकला का Subtractive Method है। इसमें पत्थर को या अन्य ठोस मटीरियल को काटकर या छीलकर मनचाहे चित्र बनाये जाते हैं। नक्काशी ठोस मटीरियल पर ही की जाती है, अतः इसमें अधिक श्रम लगता है। प्राचीन समय में नक्काशी (Carving) का प्रयोग बहुत अधिक होता था। मुगलकालीन इमारतों में बहुत ही उच्चकोटि की नक्काशी देखने को मिलती है। आधुनिक समय में मोम, रबर आदि जैसे नरम पदार्थों के साथ मूर्तिकला की नई तकनीकें विकसित हो गई हैं।

टिप्पणी

(ख) योगशील एवं व्यकलित तकनीक (Additive and Subtractive) : योगशील तकनीक मूर्तिकला की वह विधा है, जिसमें सामग्री को जोड़–जोड़ कर कलाकृति तैयार की जाती है। कलाकार जब तक अपनी कलाकृति से संतुष्ट नहीं होता, वह उसमें अपनी इच्छानुसार परिवर्तन कर सकता है। वह कलाकृति में जोड़ी हुई सामग्री को हटाकर उसे नया रूप दे सकता है। उदाहरण के लिए एक पानिहारिन की मूर्ति तैयार करने के बाद वह उससे संतुष्ट नहीं है; उसे लगता है कि पानिहारिन के दांये हाथ के बजाय बायां हाथ मटकी पर अधिक अच्छा लगेगा तो वह तदनुसार अपनी मनचाही कलाकृति बनाने के लिए उसमें पुनः–पुनः परिवर्तन कर सकता है, जबकि व्यकलित तकनीक (Subtrative Technique) में कलाकार के लिए यह अवसर नहीं होता है, इसको एक बार सामग्री को छीलने, खुरचने या पिसने के बाद उकेरी हुई आकृति जस की तस रहती है, उसे पुनः मनचाहे आकार में परिवर्तित नहीं किया जा सकता।

ज्वैलरी (Jewellary) : ठोस मटेरियल को काट कर पीस कर तराश कर उस पर आकर्शक डिजाइन बनाना नक्काशी के अंतर्गत आता है। यह तकनीक विभिन्न रत्नों से आकर्षक आभूषण तैयार करने में भी उपयोगी है।

डिजाइन की आधारभूत सावधानियां (Basic Principles of Design) : किसी भी डिजाइन को आकर्षक रूप देने के लिए कुछ आधारभूत सावधानियां आवश्यक होती हैं। बनाई गई कलाकृति में दिखाई गई वस्तुओं के बीच संतुलन होना अत्यंत आवश्यक है। वस्तुओं के आकार के साथ–साथ रंगों का संतुलन भी कलाकृति को आकर्षक बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। रंगों की संगति के अनुसार रंगों का चयन किया जाना चाहिए। बहुत बड़ी वस्तु के साथ बहुत छोटे आकार की वस्तु संतुलन को बिगाड़ देती है। संतुलन और संगति के अभाव में कलाकृति अपना सौंदर्य खो देती है। कलाकृति में जिस भाव को प्रकट किया जा रहा है, उससे संबंधित आकृतियों का संप्रेषण होना आवश्यक है। आकर्षण केंद्र को दूरी के द्वारा भी दर्शाया जाता है। खाली स्थान की तुलना में आकृतियों पर ही दर्शक की दृष्टि ठहरती है, अतः डिजाइन बनाने में स्थान का विशेष महत्व है। दूरी के माध्यम से आकर्षण के केंद्र बिंदु को प्रधानता देते हुए दर्शाया जा सकता है। इस प्रकार कलाकार को रेखाओं एवं आकारों के साथ–साथ आकृतियों के संतुलन व रंगों की संगति, प्रकाश व छाया की संगति आदि का उचित ज्ञान होना चाहिए।

कला विधियों एवं सामग्रियों के सिद्धांत (Theory of Art Methods and Materials) : कला हमारे सामान्य जीवन के खट्टे–मीठे अनुभवों को अभिव्यक्त करने में सहायक होती है। अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए किन विधियों को अपनाया जा सकता है, यह अभिव्यक्त करने वाले की रुचि एवं उसकी अन्वेषक बुद्धि पर निर्भर करता है। साधारणतया पेंसिल या पेन से स्केच बनाकर अथवा भाषा के विभिन्न वर्णों को कलात्मक रूप देकर अपने भीतर के भावों को बड़ी सरलता से अभिव्यक्त किया जा सकता है। अपनी रचनात्मकता की

टिप्पणी

सृजनात्मकता को व्यक्ति विभिन्न प्रकार से अभिव्यक्त करता है। रंगों के माध्यम से भावों को अभिव्यक्त करते समय कलाकार के पास पूर्ण आवश्यक सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए। पेंसिल, मार्कर पेन, जलरंग, तेलरंग और रंग बनाने का ब्रश, पोंछने के लिए कपड़ा, शीट जिस पर कलाकृति बनानी है वह बोर्ड तथा उसके साथ त्रिभुज, चतुर्भुज आदि आकार जैसी सहायक सामग्री भी साथ में रखनी चाहिए। अलग–अलग प्रभाव दर्शाने के लिए रंगों का अलग–अलग तरीके से प्रयोग किया जा सकता है। रंगों को हल्का या गहरा करने के लिए सफेद या काले रंग को मुख्य रंग में मिलाया जाता है।

(ग) मॉडलिंग (Modeling) : इस तकनीक में कोमल व लचीले पदार्थों को मूर्ति का रूप दिया जाता है। मिट्टी या मोम आदि से बनाये गये आकार मॉडलिंग के अंतर्गत आते हैं। यह तकनीक नक्काशी के विपरीत कोमल पदार्थों के साथ प्रयोग में लाई जाती है। कोमल पदार्थों को तोड़–मरोड़ कर मनचाहा आकार दिया जाता है।

(घ) निर्माण (Constructing) : अलग–अलग तरह की सामग्री को एक साथ जोड़कर सौंदर्य की रचना करना इस तकनीक के अंतर्गत आता है। इसमें

टिप्पणी

सृजनात्मकता और कल्पनाशीलता के आधार पर वेस्ट मटीरियल से कई सौंदर्यपूर्ण खिलौने व आकृतियां बनाई जा सकती हैं। इसमें रंगीन पत्थर, मोती, ऊन आदि का प्रयोग किया जा सकता है, टूटी हुई चूड़ियों के कांच के टुकड़े भी सौंदर्य उत्पन्न करते हैं।

(ङ) ढलाई (Casting) : इस तकनीक में कांस्य, रबर या अन्य तरल पदार्थ को सांचे में डाल दिया जाता है और सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है। सूखने पर वह तरल पदार्थ उस सांचे का आकार ले लेता है, फिर उसे सांचे से निकाल लिया जाता है। इस प्रकार तरल पदार्थ को सांचे में डालकर एक आकार देने की यह प्रक्रिया ढलाई (Casting) कहलाती है। इस तकनीक को कांस्य, रबर, चीनी मिट्टी आदि के साथ प्रयोग किया जा सकता है।

टिप्पणी

2.3.3 रेशे

कला शिक्षा के अंतर्गत कढ़ाई एवं बुनाई आदि कौशल का दैनिक जीवन से अत्यंत निकट का संबंध है। ये कौशल रेशे (Fibers) से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। पौधे एवं पशु आदि रेशे (Fiber) प्राप्त करने के स्रोत हैं। कपास हमें कपास के पौधे से प्राप्त होती है, जिससे सूत बनता है और विभिन्न प्रकार की कढ़ाई आदि में उपयोग में लाया जाता है। रेशम कीड़ों से प्राप्त होता है जो कई प्रकार की कढ़ाई में काम आता है। भेड़ों से ऊन प्राप्त होता है, जो बुनाई की कई डिजाइनें तैयार करने में काम आता है। कढ़ाई, बुनाई आदि धागे के साथ प्रयोग की जाने वाली कला तकनीकें हैं। यहां हम धागे से संबंधित कला तकनीकों पर चर्चा करेंगे।

(क) पुलिंग थ्रेड्स (Pulling Threads) : कला की इस तकनीक में कपड़े के धागे खींचकर, उन्हें एक विशेष डिजाइन का रूप दिया जाता है। इस तकनीक में धागे को खींचकर एक तरह से कपड़े की बुनाई की जाती है। इसमें धागे को खींचते हैं, पर उसे तोड़कर कपड़े से अलग नहीं करते बल्कि साथ–साथ वहीं के वहीं उसका बंडल बनाते जाते हैं, जो एक सुंदर डिजाइन का रूप ले लेता है। इसे ही कसीदाकारी कहते हैं।

(ख) बुनाई (Weaving) : आज का युग बड़ी–बड़ी मशीनों और फैक्ट्रियों का युग है, लेकिन कपड़ा बुनने की शुरुआत करघे से हुई है। पौधे से कपास प्राप्त करने के बाद चरखे से उसका सूत बनाया जाता है और उसके बाद करघे पर ताना–बाना बुना जाता है। इस तकनीक में धागे को लम्बाई में कसकर तान दिया जाता है, इसके बाद धागे के दूसरे गोले से चौड़ाई में धागा लपेटते हैं। इन दोनों धागों के गुंथाव से डिजाइन बनता जाता है। इस गुंथाव के क्रम में परिवर्तन करके अलग–अलग डिजाइन के कपड़े बुने जाते हैं। लंबाई वाले धागों को ताना और चौड़ाई वाले धागों को बाना कहते हैं।

टिप्पणी

(ग) स्टिचरी (Stitchery) : इस तकनीक में रेशम के धागों और सुई की सहायता से कपड़े पर अलग–अलग प्रकार के टांके (Stitch) बनाकर सुंदर डिजाइन तैयार की जाती है। रंग–बिरंगे धागों से कपड़े पर फूल, पत्ती, प्राकृतिक दृश्य आदि की कढ़ाई की जाती है। यह कला बहुत प्राचीन है तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती रही है। आजकल मशीन की कढ़ाई का अधिक उपयोग होता है क्योंकि इसमें समय कम लगता है। अलग–अलग टांकों के माध्यम से सुंदर डिजाइन बनाने की यह कला अद्भुत है, यह बहुत बारीक काम होता है, टांका बनाते समय धागे को बहुत ध्यान से खींचना पड़ता है, ताकि बनाई जाने वाली डिजाइन में सफाई दिखाई दे, सौंदर्य दिखाई दे।

(घ) टाइंग एंड रैपिंग (Tying and Wrapping) : इस तकनीक में कपड़े को एक उचित अनुपात की दूरी पर, जैसी डिजाइन बनानी हो उसके अनुसार पहले निशान बना लेते हैं, उसके बाद उसमें मसूर अथवा मूंग आदि का एक दाना हर चिह्न पर पोटली की तरह धागों से लपेटकर बांध देते हैं, फिर कपड़े को रंगने के लिए रंग में डालते हैं। सूखने के बाद धागे को खोलकर दाने निकाल देते हैं। इस प्रकार कपड़े पर बहुत ही आकर्षक डिजाइन बन जाती है। इसे बांधनी या बंधेज भी कहते हैं। यह तकनीक मलमल, सूती, केशमेन्ट आदि कपड़ों पर अधिक उभरकर आती है। रेशमी कपड़ों के साथ भी इस तकनीक का प्रयोग किया जाता है।

टिप्पणी

(ङ) ब्रेडिंग (Braiding) : इस तकनीक में जूट या धागे अथवा बालों को तीन–तीन रेशे लेकर उन्हें चोटी की तरह गूंथा जाता है। इन चोटियों की कई लड़ों को मिलाकर नई डिजाइनें तैयार की जा सकती हैं। तीन से अधिक रेशों की भी चोटियां बनाई जाती हैं, पर उनकी बनावट अधिक जटिल हो जाती है। नई–नई संरचना करने के लिए कई लटों को आपस में गूंथ लिया जाता है। इस तकनीक का उपयोग वॉल हेंगिंग आदि जैसे सजावटी सामान, बैग, रस्सियां आदि बनाने और हेयर स्टाइल आदि में किया जाता है।

(च) बास्केटरी (Basketry) : सामान्यतः पेड़ों से प्राप्त होने वाले लचीले रेशों से कन्टेनर (टोकरी) बनाना इस तकनीक के अंतर्गत आता है। इसके लिए प्लास्टिक या अन्य सिन्थेटिक मटीरियल भी उपयोग में लाया जाता है। सबसे पहले बास्केट का बेस तैयार किया जाता है, इसके लिए छड़ियों को, बेस के आकार में बुना जाता है, बेंत के तार के साथ इन्हें बुनते हैं। बेंत के ऊपर के छिलकों से बास्केट के चारों तरफ, आधार के ऊपर बुनाई की जाती है। पूरी टोकरी बनने के पश्चात खुले हुए हिस्सों को लॉक किया जाता है। इस प्रकार यह बुनाई कौशल का बहुत ही सुंदर उदाहरण है। इस तकनीक से तरह–तरह के Baskets

बनाए जा सकते हैं, जो सुंदर होने के साथ–साथ दैनिक जीवन में बहुत उपयोगी होते हैं।

टिप्पणी

2.3.4 अन्य गतिविधियां

मनुष्य की जिज्ञासु प्रवृत्ति प्रतिदिन कुछ नया खोजना चाहती है। साधारण मिट्टी एवं रंग से इतनी सुंदर कलाकृतियां बनाई जाती हैं, जो आंखों को अत्यंत मोहक लगती हैं। कुछ अन्य कलाओं पर भी दृष्टि डालते हैं–

(क) रेशमी धागों से बनी सजावट की वस्तुएं : हमारे देश में जीवन के सोलह संस्कारों का बहुत महत्व है। प्रत्येक संस्कार एक उत्सव की तरह संपन्न किया जाता है। विवाह संस्कार में देव स्थापना, हल्दी आदि की परंपरा का पालन करते समय महिलाओं द्वारा चक्की चलाकर शुभकार्य संपन्न कराया जाता है। इस अवसर पर पीले रंग के रेशम के धागे से हाथों में पहनने के लिए कड़ेनुमा वस्तु एवं माथे पर पीले रेशम के धागे से बनी बेंदी आदि बनाते हैं। रेशम के धागे में आकर्षक मोती पिरोकर चोटी (braiding) तकनीक का प्रयोग करके ये रेशम के आभूषण तैयार किये जाते हैं।

टिप्पणी

(ख) राखियां बनाना : रेशम के धागे को उंगलियों पर गोल–गोल लपेटकर बीच में एक दूसरे धागे से बांध देते हैं, फिर दोनों तरफ से धागों को काटकर टूथ ब्रश से उन्हें खोल देते हैं, जिससे उनमें सुंदरता आती है। मोती एवं अन्य सजावट के सामान को सुई धागे से उस पर टांक देते हैं। इसके बाद दूसरी ओर (नीचे की तरफ) बांधने के लिए रेशम के धागे से तैयार की गई चोटीनुमा डोरी को सुई धागे से टांक देते हैं।

(ग) मिट्टी से बनी वस्तुएं : गीली मिट्टी से हवन कुंड आदि बनाना बहुत ही आसान तकनीक है। किसी टोकरी या चौकोर पात्र के चारों तरफ तैयार गीली मिट्टी को लगाकार हाथ से दबा देते हैं। सूखने पर टोकरी या बर्तन को निकाल कर अलग कर देते हैं। इसी प्रकार ठंड के मौसम में अलाव जलाने के लिए मिट्टी की सिगड़ी बनाई जा सकती है। तैयार गीली मिट्टी को मनचाहा आकार दिया जा सकता है।

टिप्पणी

(घ) कागज के लिफाफे बनाना : कागज को काटकर कई तरह की सुंदर सजावट की वस्तुएं बनाई जाती हैं, लेकिन कागज से लिफाफे बनाना बहुत ही आसान कार्य है। जितना बड़ा लिफाफा बनाना हो, उस नाप से लंबाई में एक इंच अधिक और चौड़ाई में उस नाम से दुगुना नाप + 1 इंच का कागज लें। चौड़ाई में कागज को बीच से एक इंच खिसकाते हुए डबल कर लें। फोल्ड होने पर जो एक इंच कागज एक तरफ बचता है उस पर गोंद लगाकर चिपका लें। लंबाई में भी एक तरफ का कागज नीचे से एक इंच काटकर अलग कर दें, दूसरी तरफ के 1 इंच कागज पर गोंद लगाकर आगे वाले काटे हुए साइड पर मोड़कर चिपका दें। लिफाफा तैयार है।

इसके अतिरिक्त अपनी सृजनात्मकता से वेस्ट मटीरियल, कंकड़, पत्थर, मोती आदि से कई प्रकार की नई वस्तुओं की रचना की जा सकती है।

अपनी प्रगति जांचिए

3. भारत में मिट्टी से बर्तन बनाने की परंपरा कैसी है?

(क) आधुनिक (ख) बहुत प्राचीन

(ग) नई (घ) शानदार

4. मिट्टी या मोम आदि से बनाए गए आकार किसके अंतर्गत आते हैं?

(क) कलाकारी के (ख) चित्रकारी के

(ग) मॉडलिंग के (घ) छायांकन के

2.4 सत्रीय कार्य – I

जैसाकि हम सब जानते हैं, किसी भी कला को सीखने के लिए, जितना उस कला के बारे में सैद्धांतिक ज्ञान होना आवश्यक है, उससे कहीं अधिक उसके प्रायोगिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। सीखने के बाद किसी कला में कौशल प्राप्त करने के लिए अभ्यास

टिप्पणी

की अत्यधिक आवश्यकता होती है। नियमित अभ्यास के बिना कुशलता हासिल करना असंभव है और यदि हम अभ्यास करना छोड़ दें तो सीखी हुई आधारभूत जानकारियां भी समृतिपटल से हटने लगती हैं। सत्रीय कार्य का दूरस्थ शिक्षा में बहुत अधिक महत्व है। कला शिक्षा की जिन बारीकियों को जानने व समझने के लिए विद्यार्थीगण पूरे सत्र भर प्रयास करते हैं, उन बारीकियों को सत्रीय कार्य करते समय अपने शब्दों में व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है। सत्रीय कार्य का मूल्यांकन विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है और मूल्यांकन के आधार पर यह पता चलता है कि सत्र के दौरान कराये गये सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक कार्यों का परिणाम कितना संतोषजनक रहा। यहां में हम पूर्व की इकाइयों में कराए गए अभ्यास एवं सत्रगत गतिविधियों के आधार पर विद्यार्थियों के लिए सत्रीय कार्य प्रस्तुत करेंगे।

2.4.1 पेंटिंग

निम्नलिखित में से कोई पांच सत्रीय कार्य करें–

- प्रातःकालीन प्राकृतिक दृश्य को wet-on-wet तकनीक से आइल पेंट के साथ प्रयोग करते हुए तैयार करें।
- पहाड़ी क्षेत्र पर गुफाओं का रात्रिकालीन दृश्य वाटर कलर प्रयोग करते हुए wet-on-dry तकनीक से तैयार करें।
- स्पंज पेंटिंग का प्रयोग करते हुए किसी कार्टून टी.वी. सीरियल के किसी चरित्र का चित्र बनाएं।
- सायंकाल में आकाश में सूर्यास्त के कई रंग दिखाई देते हैं, बरसात के समय इन रंगों में कुछ परिवर्तन हो जाता है। बारिश के मौसम के सांध्यकालीन दृश्य को वाश तकनीक से दिखाते हुए प्रस्तुत करें।
- Wet-on-wet तकनीक से रंगबिरंगे फूलों को दर्शाते हुए एक वॉल हैंगिंग तैयार करें।
- Wet-on-Dry तकनीक से किसी प्रसिद्ध महापुरुष की तस्वीर में रंग भरकर प्रस्तुत करें।
- खरगोश का चित्र बनाकर स्पंज पेंटिंग तकनीक से उसमें रंग भरें।

2.4.2 ड्राइंग

निम्नलिखित में से कोई पांच सत्रीय कार्य करें– (अंतिम अनिवार्य है)

- त्रिभुज, चतुर्भुज एवं वृत्त का प्रयोग करते हुए पांच डिजाइन पेंसिल से तैयार करें।
- रेंडिरिंग तकनीक को दर्शाते हुए एक मंदिर का चित्र बनाएं।
- अपने विद्यालय भवन का स्केच बनाएं।

टिप्पणी

- मान तकनीक का प्रयोग करते हुए कुएं पर पानी भरती पनिहारिन का चित्र बनाएं।
- शेडिंग तकनीक का प्रयोग करते हुए गांधीजी के चित्र को त्रिआयामी स्वरूप में प्रदर्शित करें।
- हैचिंग तकनीक का प्रयोग करते हुए किसी मानव अंग का चित्र बनाएं।
- स्टिल–लाइफ का अभ्यास करते हुए अपनी पसंद की कोई दो कलाकृतियां बनाकर प्रस्तुत करें।

2.4.3 स्कल्पचर

1. निम्नलिखित में से कोई पांच सत्रीय कार्य करें–
   - लकड़ी को छीलकर या काटकर अपने नाम का ठप्पा बनाने के लिए आपको क्या प्रक्रिया अपनानी होगी? ठप्पा तैयार कर प्रस्तुत करें।
   - मिट्टी का प्रयोग करते हुए गणपति जी की प्रतिमा बनाकर प्रस्तुत करें।
   - टीन का सांचा बनाकर चीनी मिट्टी से कटोरी की आकृति बनाएं।
   - मोम को काटकर, छीलकर एवं घिसकर मानव की आकृति बनाएं।
   - सांचे में तरल कांसे का प्रयोग करके कछुए की आकृति बनाएं।
   - संगमरमर के टुकड़े पर नक्काशी करते हुए अपना नाम लिखें।
2. अपनी स्मृति में संधारित किसी प्राकृतिक दृश्य अथवा फूल का स्केच बनाएं।
3. शीट के आधे हिस्से में कोई डिजाइन का आधा हिस्सा जल रंग से बनाकर, शीट को इस तरह मोड़ें कि शीट के खाली हिस्से पर छपकर डिजाइन पूर्ण दिखाई देने लगे। मोड़ने के बाद शीट को दबाकर रखें, चित्र दूसरे हिस्से में छप जाएगा।
4. डिजाइन के मूलभूत सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, आकार–आकृति संतुलन, प्रकाश–छाया संतुलन, सहयोगी रंगों की संगति (नीला–हरा/पीला–नारंगी/लाल–बैगनी) के आधार पर एक डिजाइन तैयार करें।
5. सेरीग्राफी (Serigraphy) तकनीक से स्टेंसिल तैयार कर, रेशमी कपड़े पर कोई आकृति बनाएं।
6. कला शिक्षा की विधियों को उदाहरण सहित प्रस्तुत करें। किसी एक कला में उपयोग में आने वाली सामग्री की सूची एवं सामग्री के प्रयोग की विधि प्रस्तुत करें।
7. भारत में मूर्ति कला के उद्‌गम एवं विकास पर प्रकाश डालें। विदेशों में मूर्ति कला के उद्‌गम एवं विकास के साथ तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत करें।
8. हिंदी एवं अंग्रेजी के अक्षरों को कलात्मक रूप देते हुए तीन–तीन शब्द लिखें।
9. टीकाकरण को स्पष्ट एवं गहरा लिखें, रंगों का चयन विषयानुसार करें।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

5. किसी कला में कौशल प्राप्त करने के लिए किसकी अत्यधिक आवश्यकता होती है?

   (क) मनोकामना की (ख) लगन की

   (ग) निश्चय की (घ) अभ्यास की

6. सत्रीय कार्य का मूल्यांकन किसके द्वारा किया जाता है?

   (क) विषय विशेषज्ञों द्वारा (ख) मालिक के द्वारा

   (ग) ठेकेदार के द्वारा (घ) मंत्री के द्वारा

2.5 सत्रीय कार्य

सत्रीय कार्यों को निम्न प्रकार से समझाया गया है।

2.5.1 क्राफ्ट

निम्नलिखित में से कोई पांच सत्रीय कार्य पूर्ण करें–

- कागज को आवश्यकतानुसार मोड़ते हुए मेढक एवं तितली बनाएं।
- गत्ते से दस्तावेज रखने की फाइल बनाने के लिए और कौन–सी सामग्री की आवश्यकता होगी। फाइल तैयार करें। विधि लिखें।
- नीम की लकड़ी को छील कर आवश्यकतानुसार काटकर फूलदान तैयार करना है। इसके लिए अपनाई जाने वाली विधि एवं फूलदान की नाप सत्रीय उत्तरपुस्तिका में लिखते हुए फूलदान के साथ प्रस्तुत करें।
- बांस से टोकरी बनाने के लिए बांस के किस प्रकार के हिस्से काम में लाने होंगे। विस्तार से प्रस्तुत करते हुए टोकरी तैयार करें।
- टेबल कवर अथवा लेडीज कुर्ती पर अपने पसंद के टांके से कढ़ाई करते हुए तैयार करें। प्रयोग की गई सामग्री एवं कढ़ाई की विधि समझाकर लिखें।
- पिंच विधि (Pinch Method) का प्रयोग करते हुए छोटी हांडी तैयार करें। विधि को स्पष्ट करें।
- मोम को आकार देना किस विधि के अंतर्गत आता है? मोम से अपनी पसंद की कोई आकृति बनाएं। विधि लिखें।

2.5.2 नाटक

निम्नलिखित में से कोई पांच सत्रीय कार्य करें–

- कक्षा कक्ष में होने वाली पाठ्येतर गतिविधि में प्रस्तुत करने के लिए 'ऑनलाइन क्लासेस' के नकारात्मक पक्ष को प्रस्तुत करते हुए, एक नाटक की स्क्रिप्ट (Script) लिखें, जिसके संवाद कक्षा के अनुकूल और विषय को प्रस्तुत करने व संदेश देने के लिए प्रभावी हों।

टिप्पणी

- महात्मा गांधी जी के नमक सत्याग्रह पर आधारित एक नाटक के पात्रों की वेशभूषा पर विस्तार से प्रकाश डालिए। पात्रों की वेशभूशा के स्केच बनाइये अथवा चित्र संकलित कर फाइल में लगाइये।
- समाज में बुजुर्गों, वरिष्ठजनों के प्रति सम्मान पैदा करने का संदेश देते हुए एक नाटक की स्क्रिप्ट (Script) लिखें।
- लिंग आधारित असमानता के दुष्परिणाम दर्शाते हुए एक नाटक की स्क्रिप्ट (Script) लिखें, जिसमें तीन पीढ़ियों के पात्रों को दर्शाएं।
- पाठ्यपुस्तक में समाहित किसी कहानी के संवाद नाटक के अनुसार लिखें। मंचन भी करें।
- सुदामा एवं श्रीकृष्ण की मित्रता पर आधारित नाटक के पात्रों में से किसी एक पात्र की वेशभूषा तैयार करें।
- विज्ञापन अथवा सामाजिक विज्ञान शिक्षण पर आधारित ऑडियोज़ एवं वीडियोज़ का संकलन करें।

अपनी प्रगति जांचिए

7. दस्तावेज रखने की फाइल बनाने के लिए मुख्य रूप से किस सामग्री की आवश्यकता होगी?

   (क) गत्ते की (ख) रंगों की

   (ग) मोम की (घ) मिट्टी की

8. टोकरी बनाने में मुख्यतः किसकी आवश्यकता होती है?

   (क) धागे की (ख) रंगों की

   (ग) चाकू की (घ) बांस की

2.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (घ)
2. (क)
3. (ख)
4. (ग)
5. (घ)
6. (क)
7. (क)
8. (घ)

2.7 सारांश

टिप्पणी

प्रायोगिक कार्य और अभ्यास विद्यार्थी में आत्मविश्वास, दृढ़ता व कुशलता जैसे गुण उत्पन्न करने के साथ–साथ आपसी सहयोग एवं टीम वर्क जैसे नैतिक गुण भी उत्पन्न करता है।

रेखाओं के माध्यम से अपने भावों को प्रकट करना चित्रकला के अंतर्गत आता है। वास्तविकता तो यह है कि रेखाओं के कलात्मक अंकन से ही विभिन्न भाषाओं के लिए लिपियों की रचना हुई है। रेखाओं की अपनी एक भाषा होती है, बिना किसी लिपि में लिप्त हुए भी प्रत्येक रेखा कुछ कहती है कुछ अभिव्यक्त करती है। यही रेखा जब किसी विशेष क्रम में अंकित की जाती है, तो वह भाषा की ध्वनियों को लेखन का रूप देती है। चिकित्सा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक के साथ जुड़कर रेखा ई.सी.जी., डब्ल्यू.एफ.टी. आदि ऐसी जांचों में ग्राफ के रूप में बहुत कुछ व्यक्त करती है। कला के क्षेत्र में रेखा बहुत महत्वपूर्ण है। सभी दृश्यात्मक कलाओं में रेखा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। रेखाओं में लय होना चित्रकला की पहली आवश्यकता है। पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चों को जब हम चित्रकला सिखाते हैं, तो कागज पेंसिल देकर उन्हें स्वतंत्र छोड़ देते हैं। बिना किसी मार्गदर्शन के आड़ी–तिरछी कैसी भी रेखाएं खींचकर बच्चे प्रसन्न होते हैं। यही रेखाएं जब कोई सुंदर आकार ले लेती हैं, तो अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाती हैं, बहुत कुछ कहने लगती हैं। प्रायोगिक कार्य के संदर्भ में हम सबसे पहले समोच्च रेखा के विषय में जानेंगे, जो चित्रकला की पहली सीढ़ी है।

किसी वस्तु अथवा पदार्थ के आकार को निर्मित करने वाली रूपरेखा (Outline) ही समोच्च रेखा है। समोच्च रेखा चित्रकला के सौंदर्य को अनुभव कराने की ओर पहला कदम है। जब पांचवी या छठवीं का कोई बच्चा किसी पक्षी, किसी फूल, बर्तन या किसी सब्जी (बैगन, मिर्ची आदि) के आकार की रेखा खींचता है, तो उसे कितनी प्रसन्नता होती है, उसे इस प्रसन्नता का अनुभव कराने वाली समोच्च रेखा ही है, जो चित्रकला के सौंदर्य और शक्ति से उसका परिचय कराती है, जो बिना किसी रंग का प्रयोग किये सरल रूप में किसी वस्तु के आकार की पहचान कराती है। सरल शब्दों में समोच्च रेखा किसी वस्तु या पदार्थ के आकार की रूप रेखा या आउटलाइन है, जो चित्र बनाना सीखने के लिए पहला पायदान है। किसी भी आकार या आकृति की रचना रेखा के बिना संभव नहीं है। समोच्च रेखा के द्वारा दिया गया आकार मूक एवं रंगहीन होते हुए भी, कई भावों को प्रकट करने की सामर्थ्य रखता है। इस प्रकार किसी भी वस्तु, पदार्थ अथवा दृश्य की बाह्य रेखा (Outline) ही समोच्च रेखा कहलाती है, जिसका अभ्यास चित्रकला सीखने की ओर पहला कदम है और हम सब बचपन से ही इसका अभ्यास उद्देश्यनपूर्वक अथवा खेल–खेल में करते रहते हैं।

कला शिक्षा में प्रायोगिक कार्य का महत्वपूर्ण स्थान है। आरेखण, चित्रकारी, छापाकला आदि कलाएं हमारी अमूल्य सांस्कृतिक पूंजी हैं। आज के समय में भी ये कलाएं हमें आनंदित करने के साथ–साथ सौंदर्य की अनुभूति कराती हैं एवं जीविकोपार्जन में भी सहायक होती हैं। यहां हम मिट्टी से खिलौने तथा विभिन्न आकार बनाना,

टिप्पणी

मूर्तिकला की विभिन्न तकनीकों, रेशे अथवा धागे से बनाई जाने वाली विभिन्न कलाकृतियों आदि की अलग अलग तकनीकों के विषय में चर्चा करेंगे।

सेरामिक शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द Keramos से हुई है, जिसका अर्थ है Potter's Clay अर्थात बर्तन बनाने वाले की मिट्टी। इस प्रकार Ceramics शब्द प्रारंभिक तौर पर मिट्टी की ओर ही इंगित करता है। मिट्टी से बर्तन बनाना मानव सभ्यता के आदिकाल से ही प्रचलन में था। आज भी शुद्ध मिट्टी के बर्तनों में खाना बनाना, कई परिवारों में प्रचलन में है। भारत में मिट्टी से बर्तन बनाने की परंपरा बहुत प्राचीन है। बर्तन बनने के बाद उन्हें भट्टे में पकाया जाता है। यह परंपरा आज भी प्रचलन में है। सुनम्यता के कारण मिट्टी को कई आकारों में ढाला जा सकता है, अतः दुनिया भर की कई संस्कृतियां मिट्टी का प्रयोग भिन्न प्रयोजनों के लिए करती रही हैं। मिट्टी को विभिन्न आकारों में ढालने के काम में आने वाली मिट्टी प्राप्त करने के लिए धरती को इतना खोदते हैं, कि स्वच्छ मिट्टी निकल सके। मिट्टी से बने बर्तनों या खिलौनों को एक निश्चित तापमान पर पकाया जाता है।

जैसाकि हम सब जानते हैं, किसी भी कला को सीखने के लिए, जितना उस कला के बारे में सैद्धांतिक ज्ञान होना आवश्यक है, उससे कहीं अधिक उसके प्रायोगिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। सीखने के बाद किसी कला में कौशल प्राप्त करने के लिए अभ्यास की अत्यधिक आवश्यकता होती है। नियमित अभ्यास के बिना कुशलता हासिल करना असंभव है और यदि हम अभ्यास करना छोड़ दें तो सीखी हुई आधारभूत जानकारियां भी स्मृतिपटल से हटने लगती हैं। सत्रीय कार्य का दूरस्थ शिक्षा में बहुत अधिक महत्व है। कला शिक्षा की जिन बारीकियों को जानने व समझने के लिए विद्यार्थीगण पूरे सत्र भर प्रयास करते हैं, उन बारीकियों को सत्रीय कार्य करते समय अपने शब्दों में व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है। सत्रीय कार्य का मूल्यांकन विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है और मूल्यांकन के आधार पर यह पता चलता है कि सत्र के दौरान कराये गये सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक कार्यों का परिणाम कितना संतोषजनक रहा।

2.8 मुख्य शब्दावली

- **वास्तविकता** : सचाई, असलियत।
- **अभिव्यक्त** : प्रकट।
- **स्वतंत्र** : मुक्त, आजाद।
- **आकृति** : आकार।
- **सामर्थ्य** : कूवत, क्षमता।
- **यथार्थ** : असली, वास्तविक।
- **प्रकाश** : उजाला, रोशनी।
- **तत्काल** : तुरंत, फौरन।

- **अत्यंत** : बहुत, बेहद।
- **प्रभाव** : असर।
- **बारीक** : पतली, महीन।

टिप्पणी

2.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. स्मृति में उत्पन्न किसी दृश्य, वस्तु अथवा आकृति को सहेजकर रखने के लिए कौन सी तकनीक उपयोगी है?
2. छायांकन (Shading) तकनीक का प्रयोग करने से कलाकार को क्या मदद मिलती है?
3. हैचिंग (Hatching) किसे कहते हैं?
4. वैट–ऑन–वैट (Wet on wet) तकनीक का प्रयोग किस प्रकार के रंगों के साथ किया जा सकता है?
5. वाश (Wash) किस प्रकार की तकनीक है?
6. रिलीफ (Relief) तकनीक का उपयोग किस सत्ता में किया जाता है?
7. कॉइल मैथड (Coil Method) का उपयोग किसलिए किया जाता है?
8. कार्विंग (Carving) तकनीक का प्रयोग किस प्रकार के मटेरियल पर किया जा सकता है?
9. मॉडलिंग (Modeling) किसे कहते हैं?
10. कास्टिंग (Casting) किस प्रकार की तकनीक है?
11. ताना किसे कहते हैं?
12. ब्रेडिंग (Braiding) का उपयोग किस प्रकार की सामग्री तैयार करने में किया जाता है?
13. टोकरी बनाने के लिए सबसे पहले क्या बनाते हैं?

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. समोच्च रेखा से आप क्या समझते हैं?
2. मान (Value) के विषय में आप क्या जानते हैं?
3. स्केचिंग की क्या विशेषता है?
4. स्पंजिंग (Sponging) तकनीक का प्रयोग करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
5. मिट्टी के पात्र (Ceramics) से आप क्या समझते हैं?
6. पिंच एंड पुल्ड (Pinch and Pulled) तकनीक किस प्रकार की तकनीक है?

टिप्पणी

7. स्लैब (Slab) तकनीक में किस प्रकार मिट्टी को आकार दिया जाता है?
8. रंगोली बनाने का परंपरागत तरीका क्या है?
9. पुलिंग थ्रेड्स (Pulling threads) तकनीक के विषय में आप क्या जानते हैं?
10. टाइंग एंड रैपिंग (Tying and Wrapping) तकनीक का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है?

2.10 सहायक पाठ्य सामग्री

Devi Prasad (1998) Art The Basis of Education.

Devi Prasad (1999) Shiksha Ka Vahan: Kala (Hindi).

Dodd, N. and Winifred, H, (1971/1980). Drama and Theatre in Education. London Heimann.

Gupta, Arvind (2003). Kabad se Jugad: Little Science, Bhopal: Eklavya.

Khanna, S. and NBT (1992). Joy of Making Indian Toys, Popular Science. New Delhi NBT.

Learning Without Burden, Report of National Advisory Committee, Ministry of Human Resource Development, New Delhi. (1993)

McCaslin, Nellie (1987). Creative Drama in the Primary Grades, Vol I and in Intermediate Grades, Vol II, New York/London: Longman.

Mishra, A. (2004). Aaj Bhi Khare Hain Talaab, Gandhi Peace Foundation, 5th Edition.

Narayan, S. (1997). Gandhi views on Education: Buniyadi Shiksha [Basic Education]. The Selected Works of Gandhi: The Voice of Truth, Vol. 6, Navajivan Publishing House.

National Curriculum Framework 2000 (NCF). Published (2000), NCERT, New Delhi.

National Curriculum Framework 2005 (NCF). Published (2005) NCERT, New Delhi

National Policy on Education 1986, Programme of Action 1992. New Deihl: Ministry. Human Resource Development. (1992) Government of India.

National Policy on Education, 1986, New Delhi: Ministry of Human Resource Development (MHRD). (1986): Government of India.

NCERT Committee on Improvement of Art Education, 1966. Published (1967), NC New Delhi.

NCERT, (2006). Position Paper National Focus Group on Arts, Music, Dance and Theatre, New Delhi: NCERT.

Poetry/songs by Kabir, Tagore, Nirala etc; Passages from Tulsi Das etc; Plays: Yug- Dharam Vir Bharati, Tughlaq: Girish Karnad.

Position Paper: National Focus Group on Art, Music, Dance and Theatre. Publish (2006), NCERT, New Delhi.

Position Paper: National Focus Group on Heritage Crafts. (2005), Published (2006) NCERT, New Delhi.

टिप्पणी

Prasad, Devi (1998). Art as the Basis of Education, NBT, New Delhi. Report of the Education Commission (1964-66): Education and National Development (also known as Kothari Commission). New Delhi: Ministry of Education. 1964-66) Government of India.

Report of the Secondary Education Commission, 1952-53. New Delhi: Ministry of Education. (1954): Government of India.

Sahi, Jane and Sahi, R., Learning Through Art, Eklavya, 2009.

Teachers' Handbook of art education, Class VI. Published (2005), NCERT, New Delhi.